भा-न-
३६

कूं भ्रातेनि करी सो वकरी न करकै रमै है ताय देषकैं ताक्करा के कामिनको न सहारत भई ७ दुष्ट है हृदै जाको सुहृद रूप कामी छिन मात्र है सो
र भजा कोई दीन में श्रराम हैं जाको ऐसो जो वकरा ताय छोड़ के दुषित भई स्वामी के पास आवत भई सो ऊ स्त्रीलंपट कृपन ताय प्रसन्न
रवे के लीये पीछे जात भयो वकरा को जात को पाहुना हि कर न जाहें सो मार्ग में प्रसन्न करवे को नहीं प्रसन्न करवे कूं न ही समर्थ होत भयो ९
ताव करी को कोई एक स्वामी ब्राह्मण सो क्रोध कर कै वकरा को लंवो जो वृषण ताय काटत भयो ताय काम भोग के लीये उपाय को जानन वारो
सो जोरदेत भयो १० लगो है वृषण जाके ऐसो जो वकरा सो ऊ कूं भ्राते मिली जो वकरी ताकर के सहित वहुत वर्षनाई सेवन कीये जे काम
तिन कर के संतोष नहीं होहे ११ हे छ्भ्रू ते सेही कृपन जो मैं सो तेरे प्रेम कै आधीन भयो तेरी माया कर के मोहित भयो सो आत्मा कूं नहीं जा

विलोक्य कूप संविग्नानामभष्य हस्तुकर्मतन ७ तं दुर्हृदं सुहृद्रूपं कामिनं क्षणसौहृदं इंद्रीयाराममुत्सृज्य स्वामिनं दुःखि
तायया ८ सोपि चानुगतस्त्रैणः कृपणस्तां प्रसादितुं कुर्वन्निवडाकारं नाक्रोत्पथि संधितुः ९ तस्य तत्र द्विजः कश्चि
दजास्वामिछिनद्रुषा लंवंतं वृषणं भूयः संदधेर्थाय योगवित् १० संवद्धवृषणः सोपि ह्यजया कूपलब्धया कालं वहुति
थं भद्रे काम्मैर्नाद्यापि तुष्यति ११ तथाहं कृपणः सुभ्रु भवत्याः प्रेमयंत्रता आत्मानं नाभिजानामि मोहितस्त
व मायया १२ यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पसवस्त्रीया न दुह्यंति मनःप्रीतिं पुंसः कामहतस्य ते १३ न जातु कामः का
मानामुपभोगेन साम्यति हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते १४ यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेष्वमंगलं समदृष्टे
स्तदा पुंसः सर्वाः सुखमया दिसा १५ या दुस्त्यजा दुर्मतिभिर्जीर्यतो या न जीर्यते तां तृष्णां दुःखनिवहां सर्मकामो द्रुतं
त्यजेत १६ मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा नाविविक्तासनो भवेत् वलिवानिंद्रीयग्रामो विद्वांसमपि कर्षति १७ पूर्णं वर्षसहस्रं मे

नत भयो १२ जो पृथ्वी में धान जव सुवर्ण स्त्री पशु इन के काम कर कै नष्ट जो पुरुष ताके मन कूं जो पुरुष तो प्रीत न ताय नहीं दे हैं १३ काम है सो का
मिन के भोग कर के कवहूं सांत नहीं होहें और वडे है जैसे घी कर कै अग्नि पांति नहीं होहें १४ जा समै सगरे भूतन में अमंगल जो भाव ताय नहीं
करे है समान है दृष्टि जाकी ऐसो जो पुरुष ताकूं ता समै सगरी जे दिसा ते सुखमय होहें १५ दुष्ट है मति जाकी तिन कर के दुस्त्यज दुरुष कूं जीरन
भये सते जो जीरन नहीं होहे सो दुःख की देनवारी तृष्णा ताय सुख की इछा करे सो वेग त्याग करे १६ माता वहिन वेटी इन कर के सहित एकां
त में वैठे नहीं इंद्रीन को समूह वलवान है पंडितन को वी आकर्षण करे है १७ एक हजार वर्षन में निरंतर विषयन को सेवन कीयो तो ऊ तिन में

सो जो अंतर्यामी नारायण संज्ञा मसरूप वासुदेव तिनैं हृदै मैं राखि कैं निस्काम होकैं एजा करत भयो ५० ऐसे हजार वर्षन लं
चक्रवर्ती जो ययाति सो मन निजिन में छठो ऐसी जे इंद्री तिन करकैं काम भोग को सेवन करो परंतु मन नहीं होत भयो ५१ इती
नवमे भ्रमाद १८ उन्नीस की अध्याय में ययाति है सो वकरा की सी उपमा जा की ऐसी जो अपनी चेष्टा ताकर कैं देवयानी कूं सुनायकैं
विरक्त होवि मुक्त कूं प्राप्त भये सो वर्णन करें हैं १ भोग की गरिहै भाग जाको ऐसी जो वकरी ताका त्याग करत वकरा की सी भाइ अप
नो जो हलातलाय विडंवन करत प्यारी कूं निर्वेद करायवे कें लीयें यह कहीं २ श्लो० हे राजन् सो ययाति ऐसे स्त्री में आपाक्त

यस्मिन्निदं विरचितं व्योम्नीव जलदावली नानेव भाति स्वप्नमाया मनोरथा ४९ तमेव हृदि विन्यस्य वासुदेवं गुहा
शये नारायणमणीयांसं निराशीरयजत्प्रभुं ५० एवं वर्षसहस्राणि मनः षष्ठैर्मनःसुखं विदधानोपि नातृप्यत्सार्वभौमः कदि
न्द्रियैः ५१ इति नवमे ययातिचरित्राने अष्टादशोध्यायः १८ श्लो० स इत्थमाचरन्कामान् स्त्रैणोपह्नवमात्मनः बुद्ध्वा प्रिया
यै निर्विण्णो गाथामेतामगायत १ शृणु भार्गव्यमूं गाथां मद्विधाचरितां भुवि धीरा यस्यानुशोचंति वने ग्रामनिवासिनः २
वस्त एको वने कश्चिद्विचिन्वन्प्रियमात्मनः ददर्श कूपे पतितां स्वकर्मवशगामजां ३ तस्या उद्धरणोपायं वस्तः कामी वि
चिंतयन् व्यधत्त तीर्थमुद्धृत्य विषाणाग्रेण रोधसी ४ सोत्तीर्य कूपात्सुश्रोणी तमेव चकमे किल तया वृतं समुद्वीक्ष्य बह्व्योजाः
जाः कांतकामिनीः ५ पीवानं श्मश्रुलं प्रेष्ठं मीढ्वांसं याभकोविदं स एकोजवृषस्तासां बह्वीनां रतिवर्धनः रेमे कामग्रहग्रस्त
आत्मानं नावबुध्यत मेवमेव मया रमणीय मज्ञान्वया ६) होकें विषयन कूं सेवन करत अपनो नाश ताय ज्ञान कैं प्यारी के अर्थ नि

र्वेद करकैं यह गाथा गावत भयो १ भृगु की वेटी सो सार कें नें आचरन कीनी यह गाथा ताय सुनि जो कामी मो सार को ताके अर्थ आचरन कूं वन
मैं स्थित जे धीर जो सो चकरें हैं २ कोई एक वकरा है सो अपने प्रिय को ढूंढत कें आमें गिरी अपने कर्म कें वस ऐसी जो वकरी ताय देखत भयो ३ कामी
जो वकरा सो ताके निकारवे को जो उपाय ताय विचार सींगन के अग्र कर कैं माटी खोद कैं निकरवे को मार्ग करत भयो ४ सो वकरी कूआ तें निकर
ताही की चाह करत भई ताने वस्यो वकरा ताय देखकें कालि की इच्छा करें हैं ऐसी वहुतें वकरीनें ऊ चाह करत भई जो वकरा पुष्ट ठाडी म
छन करकैं युक्त है मैथुन करवे में चतुर हैं वीर्य को सींचन वारो है १ वकरान में श्रेष्ठ है एकही वकरी तिन कूं रतकों वढावन वारो कामने ग्रस्यो

म॰ सर्वदेवमयंदेवासर्वे॰ मयंहरिं

भ॰न॰ ३८ ऐसे पाई है अवस्था नें ऐसो जो ययाति सो जेठो पुत्र ता सूं बोल्यो हे यदु हे तात या जरा कूं ग्रहण कर अपनो निजवय अवस्था मो कूं दे हे बेटा तेरे ना
ना नें यह अवस्था कीनी है विषयन में तृप्त नहीं भयो हूं तेरे देह कूं में करके को ऊं वर्षन ताईं रमूंगो ३८ हे पिता बीच में प्राप्त भई जो जरा ता कू
के स्थित होवे कूं मैं नहीं इच्छा करूं हूं विषय को जो सुख ता कूं जान कें पुरुष है सो वैराग्य कूं नहीं प्राप्त होहै ३९ पिता ने प्रेरे तुर्वसु द्रुह्यु
अनु पुरु ते हू नाहीं करत भये धर्म कूं नहीं जानें अनित्य जो देह ता में अनित्य है देह जा की ४० यथा नि है सो वय कर कें थोडो गुण न कर कें अधि
क ऐसो जो बेटा पुरु ता कूं पूछत भये हे पुत्र बडे भैयान की सी नाईं मो सूं तू ना ही कर वे कूं नहीं योग्य है ४१ पुरु बोल्यो है पिता मनुष्यन के इंद्र दे
ह को करन वारो जो पिता ता को प्रत्युपकार करवे के लीये कौन पुरुष समर्थ है जा के प्रसाद तें परमेश्वर कूं प्राप्त होहै ४३ पिता को जो विचार

इति लब्धवयस्थाना पुत्रं ज्येष्ठमवोचत यदो तात प्रतीच्छेमां जरां देहि निजं वयः ३८ मातामहकृतां वत्सा न तृप्तो विषयेष्वहं वय
सा भवदीयेन रंस्ये कतिपयाः समाः ३९ यदुरुवाच नोत्सहे जरया स्थातुमन्तरा प्राप्तया तव अविदित्वा सुखं ग्राम्यं वैतृष्ण्यं नैति पूरु
षः ४० तुर्वसुश्चोदितः पित्रा द्रुह्युश्चानुश्च भारत प्रत्याचख्युरधर्मज्ञा ह्यनित्ये नित्यबुद्धयः ४१ अपृच्छत्तनयं पूरुं वयसोनं गुणाधिक
म् ४१ न त्वमग्रजवद्वत्स मां प्रत्याख्यातुमर्हसि ४२ पूरुरुवाच को नु लोके मनुष्येन्द्र पितुरात्मकृतः पुमान् प्रतिकर्तुं क्षमो यस्य प्रसादा
द्विन्दते परं ४३ उत्तमश्चिन्तितं कुर्यात् प्रोक्तकारी च मध्यमः अधमोऽश्रद्धया कुर्यादकर्तोच्चरितं पितुः ४४ इति प्रमुदितः पूरुः प्रत्यगृ
ह्णाज्जरां पितुः सोऽपि तद्वयसा कामान् यथावज्जुजुषे नृप ४५ सप्तद्वीपपतिः सम्यक् पितृवत्पालयन् प्रजाः यथोपजोषं विषयान् जुजुषेऽ
व्याहतेन्द्रियः ४६ देवयान्यप्यनुदिनं मनोवाग्देहवस्तुभिः प्रेयसः परमां प्रीतिमुवाह ४७ अयजद्यज्ञपुरुषं क्रतुभिर्भूरिदक्षिणैः

ताप करे सो तो उत्तम जो कहे तैसे करे सो मध्यम जो विना श्रद्धा करे सो अधम जो न ही करे सो पिता को बिगाडे ४४ ऐसे कहि कें प्रसन्न भयो पु
रु सो पिता की जरा अवस्था को ग्रहण करत भयो है याथाति राजा है सो हू ता की तरुण अवस्था कर कें यथा जोग्य विषयन को सेवन कर
त भयो ४५ सप्त द्वीप को राजा ययाति सो पिता की सी नाईं प्रजा को पालन करत जे सी प्रीती सें विषयन को सेवन करत भये नहीं नष्ट
है इंद्री जा की ४६ देवयानी है सो हू नित्य मन वानी देह वस्तुन कर कें राजा को प्यारे को परम प्रीति उपजावत भई ४७ बहुत दीनी है
दक्षिणा जिन में ऐसे जे यज्ञ तिन कर कें यज्ञपुरुष पूजा करत भयो जे यज्ञपुरुष सर्व देवमय है और सर्ववेदमय है ४८ भगवान नें
यह विश्व रच्यो है ऐसे आकाश में बादरन की पंगत रची है सो नाना प्रकार भासै है केवल नहीं भासे है ऐसे स्वप्न माया करके सहित मे रा॰म॰ ३८

अपने मनकौं जो अभिप्राय ताय कहत भई पिताकी दीनी जहां मैं जाऊं तहां सखीनकूं संगलैके सरमिष्ठा हैसो मेरी दासी होके संग चलो २८
विसपर्वा है सो अपने नकूं शुक्र के निकरते संकट दे ख्यो और रहैते गौरव देख्यौ तव हजार स्त्रीनकूं संग लेके सर्मिष्ठा दासी की सी नाई देवयानीकी
सेवाकरत भई २९ शुक्र है सो सर्मिष्ठा सहित अपनी वेटी ताय यातिके अर्थ देत भये और तासूं यह वोलै हे राजा सर्मिष्ठाकूं अपनी सेजपै के भूधारण
निकरीयो ३० जो धारन करोगे तो वृद्ध हो जायगो याके अनन्तर हे राजा कोई एक समें सुंदर हे पुत्र जाके असी जो शुक्र की वेटी ताय देखिके एकांतमें ऋतु
केसमें मैं सखीके पति जो राजा तिनकी इछा करत भई ३१ पुत्र की चाहके लीये मार्थना कीयें सो धर्मकूं देखिके शुक्र के वचनकूं स्मरण करत सम

तथेत्यवस्थिते प्राह देवयानी मनोगतं पित्रादत्तायनो यास्ये सानुज्ञ्या यातु मामनु २८ स्वानां तत्संकटं वीक्ष्य तदर्थस्य च गौरवं दे
वयानीं पर्यचरत्स्त्रीसहस्रेण दासवत् २९ नाहुषाय सुतां दत्वा सह शर्मिष्ठयोशना तमाह राजञ्छर्मिष्ठामाधास्तल्पे न
कर्हिचित ३० विलोक्यौशनसीं राजञ्छर्मिष्ठा सुप्रजां क्वचित् तमेव वव्रे रहसि सख्याः पतिमृतौ सती ३१ राजपुत्र्यार्थि
तोऽपत्ये धर्मं चावेक्ष्य धर्मवित् स्मरञ्छुक्रवचः काले दिष्टमेवाभ्यपद्यत ३२ यदुं च तुर्वसुं चैव देवयानी व्यजायत द्रुह्युं चानुं
च पूरुं च शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी ३३ गर्भसंभवमासुर्या भर्तुर्विज्ञाय मानिनी देवयानी पितुर्गेहं ययौ क्रोधविमूर्छिता ३४
प्रियामनुगतः कामी वचोभिरुपमंत्रयन् न प्रसादयितुं शेके पादसंवाहनादिभिः ३५ शुक्रस्तमाह कुपितः स्त्रीकामानृतपू
रुष त्वां जरा विशतां मंद विरूपकरणी नृणां ३६ ययातिरुवाच अतृप्तोऽस्म्यद्य कामानां ब्रह्मन्दुहितरि स्म ते व्यत्यस्यतां यथाशि

यमें देवने प्राप्ति कीयो ज्यो संग ताय प्राप्त होत भये ३२ देवयानी है सो यदु तुर्वसु इनै उपजावत भई सर्मिष्ठा है सो द्रुह्यु अनु पूर
इनै उपजावत भई ३३ असुर की जो वेटी ता मैं अपने भर्ता ते गर्भको जो संगम संभव ताहि जानिकै देवयानी है सो क्रोध करके
मूर्छित भई और पिताके घरकूं जात भई ३४ कामी जो राजा सो वचन करकै मार्थना करत प्यारी के पीछे जात भये पाव नकूं
वैहे अने कयत्न करे हैं परमसन्न करवेकूं समर्थन भयो ३५ क्रोध कीये जो शुक्र सो राजासूं वोले हे स्त्री कामी झूठे परा क्रम
जाको हे मंद मनुष्यनकूं विरूप करनवारी ऐसी जो जरा अवस्था सो तोमें प्रवेश पावैगी ३६ ययाति वोलै हे ब्राह्मण तुमारी वेटी
मे काम करत मन तृप्त भयो तव शुक्र वोले जो तेरी जरा अवस्था लेतासूं तरुण अवस्था

भ॰ना॰ दयाकरके उठाईहै १९ अरु कौंजोवेदी जोमेमकरकेवाणीनाकरके वीरजोराजातासूंकहतभई १९ हेवेरीनकेपुरंजीततवीरहेराजातुम
३१ नेमेरेहाथकोग्रहणकीयोहै तुमतेग्रहणाकरीजोमेंताकोऔरजोपतिसोमतीहोउ २० हेवीरहमारोतुमारोसंबंधईश्वरनेकीयोहै
पुरुषकोकीयोहैनहीं जानेकूं आमेपरीजोमेताकूं तुमारोदर्शनहोतभयो २१ हेमहाभुजहाथलगाहै सोमेरोपतिनहीहोइगो बृहस्पति
कोबेटाजोकचसोअक्रूजेअमृतसंजीवनीजोविद्यापढोतवमेनेकहीतूमेरोपतिहोउ तबवानेमोकूंसापदीयोतेरोब्राह्मणपति
नहीहोयगो २२ ययातिहैसोआपकूंजोमननहीहै परईश्वरनेप्राप्तिकीयो संबंधताएजानिकैं तामेसकामभयो जो अपनोम

हस्तग्राहोऽपरो माभूद्गृहीतायास्त्वया हिमे एषईसकृतो वीर संबंधो नात्र पौरुषः २० यदिदं कूपमग्नाया भवतो दर्शनं
मम न ब्राह्मणो मे भविता हस्तग्राहो महाभुजः २१ कचस्य बार्हस्पत्यस्य शापाद्यमशपं पुरा ययातिरनभिप्रेतं
दैवोपहृतमात्मनः मनस्तु तद्गतं बुद्ध्वा प्रतिजग्राह तद्वच २२ गतेराजनि सा वीरे तत्र स्म रुदती पितुः न्यवेदयत्
ततः सर्वमुक्तं शर्मिष्ठया कृतं २३ दुर्मना भगवान्काव्यः पौरोहित्यं विगर्हयन् स्तुवन्वृत्तिंच कापोतीं दुहित्रा सय
यौपुरात् २४ वृषपर्वा तमाज्ञाय प्रत्यनीकविवक्षितं गुरुं प्रसादयन्मूर्ध्ना पादयोः पतितः पथि २५ क्षणार्धम
न्युर्भगवान् शिष्यं व्याचष्ट भार्गवः कामोऽस्याः क्रियतां राजन्नैनां त्यक्तुमिहोत्सहे २६

नतायजानिकैं ताकेवचनकूं जानकेग्रहणकरतभये २२ वीरजोराजासोगयेसंतेदेवयानीहैसोरोवतघरमैं आइकैं
सरमिष्ठानेजोवचनकह्यो औरजोकर्मकीयोसोसबपिताकेआगेकहतभई २३ मनजिनकोविगरगयो ऐसेजोशुक्रसो
पोहिताईकीनिंदाकरतभये अरुअपनीमिस्यावस्तकीअस्तुतीकरत बेटीकूंसंगलेकैं पुरसंनिकसतभये २४ वृषपर्वा
हैसोजानिकैं रूठकेगये जोगुरुसोदेवतानकोजयकरेंगे यहअभिप्रायजानिकैं मार्गमेंगुरुकेचरननमेंगिरकेतिने
मेसन्नकरतभयो २५ आधेक्षणहैक्रोधजिनकैं ऐसेजोभगवानशुक्रसोअपनेसिष्यसूंयहबोले हेराजायादेवया
नीकूंजोकामसोकरोमेयाकूंछोडवेकूंउत्साहनहीकरूं २६ विषपर्वानेवचनकोअंगीकारकीनोतबदेवयानीय

कमलसे है नेत्र जिनके ऐसी जो कन्या ते तीर्थ में अपने वस्त्र धर कै परस्पर सी वनविहार करत भई ७ पार्वती सहित नंदीबैल पै चढे महादेवजी बलें जो हैं तिनें देष
के सीघ्र ही जल में ते निकस के जैसे लज्जा न भई ने कन्याते पहरत भई ८ सर्मिष्ठा ने विना जाने गुरु की बेटी देवयानी ता के जे वस्त्र तिनें अपने मानि
कै पहर लेत भई तब क्रोध कर कै देवयानी यह वचन बोलत भई ९ अहो या दासी को अन्याय देखो हमारे धारन करवे के वस्त्र तिनें पहरत भई जैसे
यज्ञ मे कुतीया घी कूं लेले है ऐसे १० अहो जिन ब्राह्मणन ने तप करकै जे जगत सृज्यो है जे ब्राह्मण परमपुरुष जो भगवान तिन को मुख है जिन्हें ब्रह्म
को धारण कीयो है और कल्याण रूप जो वेदमार्ग सो दिखायो है ११ लोकन के नाथ देवतान के ईश्वर ते जिन ब्राह्मणन कूं नमस्कार करे हैं उपासन करें

तां जलाशयमासाद्य कन्याः कमललोचनाः तीरे न्यस्य दुकूलानि विजह्रुः सिंचतीर्मिथः ७ वीक्ष्य व्रजंतं गिरिशं सह देव्या वृषस्थितं सहसोत्तीर्य वा
सांसि पर्यधुर्व्रीडिता स्त्रियाः ८ शर्मिष्ठाजानती वासो गुरुपुत्र्याः समव्ययत् स्वीयं मत्वा प्रकुपिता देवयानीदमब्रवीत् ९ अहो निरीक्ष्यतामस्या
दास्याः कर्म ह्यसांप्रतं अस्मद्धार्यं धृतवती शुनीव हविरध्वरे १० यैरिदं तपसा सृष्टं मुखं पुंसः परस्य ये धार्यते यैरिह ज्योतिः शिवः पंथाः प्रद
र्शिताः ११ यान्वंदंत्युपतिष्ठंते लोकनाथाः सुरेश्वराः भगवानपि विश्वात्मा पावनः श्रीनिकेतनः १२ वयं तत्रापि भृगवः शिष्योऽस्या नः
पिताऽसुरः अस्मद्धार्यं धृतवती शूद्रो वेदमिवासती १३ एवं क्षिपंतीं शर्मिष्ठा गुरुपुत्रीमभाषित रुषा श्वसंत्युरंगीव धर्षिता दष्टद
च्छदा १४ आत्मवृत्तमविज्ञाय कत्थसे बहु भिक्षुकि किं न प्रतीक्षसेऽस्माकं गृहान्बलिभुजो यथा १५ एवं विधैः सुपरुषैः क्षिप्त्वा
चार्यसुतां सती शर्मिष्ठा प्राक्षिपत्कूपे वासश्चादाय मन्युना १६ तस्यां गतायां स्वगृहं ययातिर्मृगयां चरन् प्राप्तो यदृच्छया कूपे जल
ार्थी तां ददर्श ह १७ दत्त्वा स्वमुत्तरं वासस्तस्यै राजा विवाससे गृहीत्वा पाणिना पाणिमुज्जहार दयापरः १८ तं वीरमाहौशनसी प्रेम
निर्भरया गिरा राजंस्त्वया गृहीतो मे पाणिः परपुरंजय १९ (हस्तगतोपरो)

विश्व के आत्मा सब कूं पवित्र करनवारे लक्ष्मी के स्था
न भगवान सो ऊ तिन की पूजा करे हैं १२ तिन ब्राह्मणन में हम भृगु हैं सो भृगुवंशी हैं या को जो पिता सो हमारो सिष्य है हमारे धारन करवे के जे व
स्त्र ता पहरत भई ऐसे सूद्र वेद को धारन करे है १३ ऐसे तिरस्कार कीनी जो सर्मिष्ठा सो गुरुन की जो बेटी ताप क्रोध कर बोली सर्पिनी की सी
नाई स्वास लेहै और होठन कूं चबावे है १४ हे भिखारनी अपनी विरतन जानके बहुत बके है हमारे घर तें तिनें न कहा प्रात छाक देहैं जैसे कु
तीया है तै टूक की इच्छा करे है १५ ऐसे या प्रकार के कठोर जे वचन तिन कर कै शुक्राचार्य की जो बेटी देवयानी ताप तिरस्कार करकै सर्मि ष्ठा
है सो क्रोध कर के वा कूं वस्त्र ले के कूआ मे डेल दीनी १६ सर्मिष्ठा कूं अपने घर गए पीछे ययाति जो राजा सिकार खेल के एक स्थान जल पीवे कूं
आयो ता कूं आ मे देवयानी कूं देखत भयो १७ राजा ने सो बिना वस्त्र देवयानी कूं देख के अपनो उपरना देत भयो हाथ सं हाथ पकर के निकार लेत भयो

भा.न.
३६

रजकेजेबेटाते पिताके मरे पीछे स्वर्ग कूं भागे हैं ऐसो जो इंद्र तिनके अर्थ स्वर्ग नहीं देत भयो और यज्ञके जे भाग तिनें ग्रहन करत भयो १४ तिन
कीं गति भयसूं करके तीनों ऐश्वर्य कों सो मकीयो तब धर्म मार्ग ते भ्रष्ट होय गये रजके बेटा तिनें इंद्र है सो मारत भयो तिन में को ऊ बाकी न रह्यो १५ सु
क्षत्रवृद्धको नाती कुश ता ते प्रतिभयो ताके संजय भयो ताके जय भयो ताके कृत भयो ताके हर्यवन होत भयो १६ ताके सहदेव भयो ताके हीन।
ताके जयसेन भयो ताके संकृत ताके जय ताके क्षत्रधर्मा ताके महारथ भयो १७ हे राजा क्षत्रवृद्धके वंसके के कहे अब नहुसके वंश
राजा तिनें सुनो १८ इती नवमे सप्तदशो ध्यायः १७ अठारहके अध्याय में नहुसको बेटा जो ययाति ताकी कथा कहैहै ताके पांच बेटा न में छो
टे ने जरा अवस्था को ग्रहन कीयो सो वर्णन करि है शुकदेवजी कहै हे राजा नहुसके पति यथाति सजान आयति वेनि कृति ये छह पुत्र होत

त्र विधुपं महेंद्राया जस्यभागं समादहुः गुरु णाहूयमानेऽनो बलमितनपान्तजे १४ अवधीद्भसितान्मार्गान्नकश्चिदवशेषितः १५
कुशात्प्रतिः क्षात्रवृद्धात्संजयस्तत्सुतो जयः ततः कृतः कृतस्यापि जज्ञे हर्यवनो नृप १६ सहदेवस्ततो हीनो जयसेनस्तु तत्कृ
सुतः संकृतिस्तस्य जयः क्षत्रधर्मा महारथः १७ क्षत्रवृद्धान्वया भूपा इमे शृण्वथ नाहुषान् १८ इती श्री नवमे सप्तदशो
ध्यायः १७ श्रीशुक उ॰ यतिर्ययातिः संयातिरायतिर्वियतिः कृतिः षडिमे नहुषस्यासन्निंद्रियाणीव देहिनः १ राज्यं नैच्छद्यतिः पि
त्रा दत्तं तत्परिणामवित् यत्र प्रविष्टः पुरुष आत्मानं नाववुध्यते २ पितरि भ्रंशिते स्थानादिंद्राण्या धर्षणाद्द्विजैः प्रापितेऽज
गरत्वं वै ययातिरभवन्नृप ३ चतसृष्वादिशद्दिक्षु भ्रातॄन्भ्राता यवीयसः कृतदारो जुगोपोर्वीं काव्यस्य वृषपर्वणः ४
राजोवाच ब्रह्मर्षिर्भगवान्काव्यः क्षत्रबंधुश्च नाहुषः राजन्यविप्रयोः कस्माद्विवाहः प्रतिलोमकः शुक उ॰ एकदा दानवें
द्रस्य शर्मिष्ठा नाम कन्यका सखीसहस्रसंयुक्ता गुरुपुत्र्या च भामिनी ६
जैसे जीवके छह इंद्री होय है॥ १ पहिले सो पिताने दीयो जो राज
ताय नहीं इच्छा करत भयो राजको जो परनाम ताय जाने है जा राजमें प्रविष्ट भयो पुरुष सो आत्माकों नहीं जाने है पिताने नहुष सो स्वर्ग
मे भ्रष्ट भए से तें इंद्राणीकी धर्षनाते ब्राह्मणनने अजगर योनिकूं प्राप्त कीयो ताते ययाति है सो राजा होत भयो ३ छोटे जे चार भैया
तिनें चारो दिसा देत भयो शुक्र और विषपर्वा इन की कन्यान कर कीनी है स्त्री जिनने ऐसो जो ययाति पृथ्वी को पालन करत भयो ४ राजा
कहै है भगवान शुक्र जो है सो तो ब्राह्मण ऋषी है ययाति पहरयो क्षत्री है क्षत्री और ब्राह्मण इन मे उलटो ब्याह होत भयो सो कैसें भयो सो
कहो ५ शुकदेवजी कहैहै राजन एक दिना दानवनको इंद्र विषपर्वा ताकी कन्या सरमिष्ठा सो हजार १००० सखीन करि संयुक्त और गु
रु की बेटी देवयानी ता कर के सहित फूलें जे वृक्ष तिन कर संकुल सुंदर है जिन जिनको ऐसे जे भोंरा है जिन में ऐसी जो सरोवरी ते

सत्रवृद्ध को वेटा जो सुहोत्र ताके कास्य कुश ग्रथ्स्मद तीन पुत्र होत भये ग्रथ्स्मद कै सुनक भयो जाके ऋग्वेदीन मैं श्रेष्ठ सौनक मुनि होत भयो
२ कास्य के कासी नाम पुत्र भयो ताके पुत्र राष्ट्र भयो दीर्घतम के धन्वंतर भयो सो आयुर्वेद के प्रवर्तक रत वारे हैं यज्ञभोक्ता हैं वासुदेव कौ
अंश हैं स्मरन मात्र कर कै रोग कौ नाशक रैहैं ३ ताके पुत्र केतुमान है ताकै भीमरथ भयो ताकै दिवोदास ताके द्युमान भयो प्रतर्दन
सत्रजित वत्स रित ध्वज ईन नामन कर के कह्यो ४ तैसेई कुवलयाश्व या नाम कर कै कह्यो ताके अलर्क आदि क पुत्र भये ५ अलर्क हे सो
साठि हजार साठ सै वर्ष पृथ्वी कौ भोग करत भयो ६ अलर्क ते संतत भयो ताते सुनिथ भयो ताके सुकेतन ताके धर्मकेतन ताके सत्यकेतु भ

काश्यः कुशो ग्रृतसमद इत ग्रृतसमदादभूत २ शुनकः शौनको यस्य बह्वृचप्रवरो मुनिः काश्यस्य कासिस्तत्पुत्रो राष्ट्रो
दीर्घतमाः पिता ३ धन्वंतरिर्दीर्घतमस आयुर्वेदप्रवर्तिकाः यज्ञभुग्वासुदेवांशास्मृतिमात्रार्तिनाशना ४ तत्पुत्रः केतुमान
स्य जज्ञे भीमरथस्ततो दिवोदासो द्युमांस्तस्मात्प्रतर्दन इती स्मृतः ५ स एव शत्रुजिद्वत्स ऋतध्वज इतीरित तथा कुवल
याश्वेति प्रोक्तोलर्कादयस्ततः ६ षष्ठीं वर्षसहस्राणि षष्ठिं वर्षसतानि च नालर्कादपरो राजन् बुभुजे मेदनीं युवा ७ अ
लर्कात्संततिस्मात्सुनीथोथ सुकेतनः धर्मकेतुः सुतस्तस्मात्सुकुमार क्षितीश्वरः ८ वीतहोत्रस्य भर्गोतो भार्गभूमिरभू
न्नृपा इतीमे काशयो भूपाः क्षत्रवृद्धान्वयायिनः राभस्य रभसः पुत्रो गंभीरश्चाक्रियस्ततः ९ तस्य क्षेत्रे ब्रह्म जज्ञे शृणु वंश
मनेनसः शुद्धस्ततः शुचिस्तस्माच्चित्रकृद्धर्मसारथी १० ततः शान्तरयो जज्ञे कृतकृत्यः स आत्मवान् रजेः पंचशतान्यासन्
पुत्राणाममितौजसां ११ देवैरभ्यर्थितो दैत्यान्हत्वेंद्रायाददाद्दिवं इंद्रस्तस्मै पुनर्दत्वा गृहीत्वा चरणौ रजेः १२ आत्मानमर्पयामास

यो ७ ताते धृष्टकेतु भयो ताके सुकुमार भयो क्षितीश्वर ताकै वीतहोत्र भयो ताके भर्ग तन भयो ताके भार्गभूमि भयो ८ हे राजा ये काश के
वंश मैं क्षत्रिय होत भये अनेनस या नाको वंश तपमा मत है ९ रानकौ वेटा रभस भयो ताके गंभीर ताकै अक्रिय भयो ताके वंश मै ब्राह्मण होत भये
अव अनेनस या नाको वंश तापसुनो १० अनेनस ताके शुद्ध भयो ताके सुचि भयो ताके चित्रकेतु ताके धर्मसारथी ताके शांतरयण कृतकृत्य भयो सो आत्मज्ञा
नी भयो याते पुत्रन उपजायो ११ रजकै वडो है वरा जिनके प्रेमसे याने सो पुत्र होत भये देवतान्नै प्रार्थना कीयो रजसो दैत्यन को मार कै इन्द्र कौ
देत भयो १२ इन्द्र सो रजके चरनन के पकराकर ताई के प्रर्थ फिर स्वर्ग कूं देके अपन पे कूं अर्पन करत भयो जो इन्द्र सो दिक वैरीनिन करस कीतते

जोसुनसेफहारिश्चंद्रकेयज्ञमेंवेश्योपुरुषपसोवहनारायणादिकजोदेवतातिनैअस्तुतिकरकेंपासवंधनतेछुटहोतभयो ३१
जोदेवतानैदीपोगाधकेवंसमेदेवरातनामविख्यातभयेंजोसुनसेफपहलेंभृगुकुलमेंभयोहोंजेमधुछंदसोजेठेहेतेनाको
जोकुशलतायनहींमानतभयोतबजोअभयेजेमुनिविश्वामित्रसोतिनैसापदेतभयोंहेनेलगैसरापहेदुर्जननिमलेछ
होउ ३३ मधुछंदातेछोटेजेपंचासतिनैसंगलैकेबोलेंजोतुमपिताकीमानोहोनाहिवचननेहमस्थितहोयगें ३४ मंत्रको
देषनवारोदेवरातनायजेठोकरतभयेंऔरयहकहतभयेंहमसगरेतोतेछोटेहोईगेंतवप्रसन्नभयेविश्वामित्रसोपुत्रनसूं

योवेहरिश्चंद्रमखेविक्रीडत्वापस्तवःपशुःस्तुत्वादेवान्प्रजेशादीनमुमुचेपाशबंधनात् ३१ योरातोदेवयजनेदेवैर्गाधि
षुतापसः देवरातइतिख्यातःशुनःशेपस्तभार्गवः ३२ येमधुछंदसोज्येष्ठाकुशलंवेनिरेनतेतः अशपत्तान्मुनिःक्रुद्धोम्लेछा
भवतदुर्जना ३३ सहोवाचमधुछंदाःसार्द्धंपंचाशतातनाः यन्नोभवान्संजानीतेतस्मिंस्तिष्ठामहेवयं ३४ ज्येष्ठमंत्रदृशं
चक्रुस्त्वामन्वंचोवयंस्महिविश्वामित्रःसुतानाहवीरवंतोभविष्यथयेमानंमेनुगृह्णंतोवीरवंतमकर्तमां ३५ एषवःकु
शिकावीरोदेवरातस्तमन्वितः अन्येचाष्टकहारीतजयक्रतुमदादयः ३६ एवंकौशिकगोत्रंतुवैश्वामित्रैःपृथग्विधैः
प्रवरांतरमापन्नंतद्धिचैवंविकल्पितं ३७ इतिश्रीभागवतेनवमेपरसरामचरितेषोडसोध्यायः १६ बादरायणिः
रुवाचः १ यःपुरूरवसःपुत्रआयुस्तस्याभवन्सुताः नहुषःक्षत्रवृद्धश्चरजीरंभश्चवीर्यवान् १ अनेनाइतीराजेंद्रशृणु
क्षत्रवृधोन्वयंक्षत्रवृद्धसुतस्यासन्सुहोत्रस्यात्मजास्त्रयः केहतभयेंतुमहूपुत्रवानहोउजेतुममेरेमानकोग्रहण
कीयोमोकूंपुत्रवानकरतभयें ३५ हेकुशिकायहजोवीरदेवरातसोईतुमारोभैयाहेयातेमेरेजेअष्टपुत्रहैंपाकेपीछेतुमसगरेव
तोंऐसेसेकहतभयेंऔरहुअष्टकहारीतजयक्रतुमदइनतेआदिलेकेपुत्रहोतभयें ३६ ऐसेकुशिककोजोपुत्रसोविश्वामित्र
केवेटाननैनानाप्रकारकीयोंप्रवरांतरकोप्रासकीयोदेवरातकोजेष्ठकरकेरच्यों ३७ इतीश्रीभागवतेनवमे [illegible] षोडि
सोध्याय १६ सत्रहकेअध्यायमेंपुरूरवाकोजेठपुत्रातिनमेंआयुताकेजेपांचपुत्रतिनमेंचारनकोवंसवर्णनकरेंहैं १
श्लोक २० हेराजनपुरूरवाकोपुत्रजोआयुताकेनहुसक्षत्रवृद्धरंजीरंभअनेनायेपुत्रहोतभयेंहेराजेंद्रक्षत्रवृद्धको

जेमजुन नेवेदने पिताको जो शिर ताय लाय के शरीर सों लगायकै यज्ञमें यजन करकें सर्व देवआत्मा हरि तिनकौं पूजा करत भये २० पूर्व दिशा हैं ताय होता के अर्थ देत भये दक्षिण दिशा ब्रह्मा के अर्थ देत भये अध्वर्यु के अर्थ पश्चिम दिशा देत भये उद्गाता के अर्थ उत्तर दिशा देती भई २१ औरन के अर्थ अवान्तर दिसा देती भई कस्यप के अर्थ मध्य में देत भये आर्य्यावर्त उपद्रष्टा कूं देत भये तातें परे जो पृथ्वी सो सदस्यन कूं देत भये २२ ता अनंतर यज्ञान्त स्नान करकें दूर भयो है असेष पाप जिनके ऐसे जो परसराम सो वड़ी नदी जो सरस्वती तामें स्नान करकें सोभा कूं प्राप्त होत भये विना बादर को जो आकाश तामें चंद्रमा जैसें शोभित होइ है तैसें सुंदर लगते भये २३ जमदग्नि है सो संज्ञान है

पितृकायेन संधाय शिर आधाय बर्हिषी: सर्वदेवमयं देवमात्मानमयजन्मखैः २० ददौ प्राचीं दिशं होत्रे ब्रह्मणे दक्षिणां दिशं अध्वर्यवे प्रतीचीं वै उद्गात्रे उत्तरां दिशं २१ अन्येभ्योवान्तरदिशः कस्यपाय च मध्यतः आर्य्यावर्तमुपद्रष्ट्रे सदस्येभ्यस्ततः परं २२ ततश्चावभृथस्नानविधूताशेषकिल्विषः सरस्वत्यां महानद्यां रेजे व्यभ्र इवांशुमान् २३ स्वदेहं जमदग्निस्तु लब्ध्वा संज्ञानलक्षणं ऋषीणां मंडले सोभूत्सप्तमो रामपूजितः २४ जामदग्न्योपि भगवान्रामः कमललोचनः आगामिन्यंतरे राजन्वर्तयिष्यति वै बृहत् २५ आस्तेद्यापि महेंद्राद्रौ न्यस्तदंडः प्रशांतधीः उपगीयमानचरितः सिद्धगंधर्वचारिणैः २६ एवं भृगुषु विश्वात्मा भगवान्हरिरीश्वरः अवतीर्य परं भारं भुवोहन्बहुसो नृपान् २७ गाधेरभून्महातेजाः समिध इव पावकः तपसा क्षात्रमुत्सृज्य यो लेभे ब्रह्मवर्चसं २८ विश्वामित्रस्य चैवासन्पुत्रा एकशतं नृपा मध्यमस्तु मधुछंदा मधुछंदस एव ते २९ पुत्रं कृत्वा शुनःशेफं देवरातं च भार्गवं आजीगर्तं सुतानाह ज्येष्ठ एष प्रकल्प्यतां ३० लक्षण जाकौ ऐसो जो अपनो देह ताय पाय के सप्तऋषिन के मंडल में राम कर के पूज्यो सातवों ऋषी होत भयो २४ कमलदल से हैं नेत्र जिनके ऐसो जो जमदग्नि के बेटा राम सो आगे आवेगो जो मन्वंतर तामें सप्तऋषि होइंगे २५ पास में त्याग कीयो है दंड जिनने प्रसांत है बुद्धि जिनकी सिद्ध गंधर्व चारन इन करकें गायो है चरित्र जाको ऐसो जो परसराम महेंद्र जो पर्वत तामें रहे है २६ ऐसें विश्व के आत्मा हरि ईस्वर सो भृगु कुल में अवतार लेकें पृथ्वी के भार जो बहुत राजा तिनें मारत भये २७ गाधि के बड़ो तेज जिनको ऐसे विस्वामित्र भयो जो बैकाष्ठ में वरी अग्नि होइ है तो विश्वामित्र तप करकें छत्रीपने को छोड़ कें ब्रह्मतेज कूं प्राप्त भये २८ हे राजा विश्वामित्र के एक ऊपर सौ १०१ पुत्र भये मध्य को पुत्र मधुछंदा भयो ताके संग ते सगरे मधुछंदा कहाये २९ विश्वामित्र है सो देवता ने दीयो भृगु

भा.न. ३४

अैसर्जुनकेवेटानेअपनेपिताकोंजोवधतायस्मरवस्तैं परसरामकेपराक्रमकरपरभंवतीयें तेअसंस्अपकूंभ्रीप्रापतहोतभ्रो ९
सहस्त्रीमापरसरामनेयानसारनवनकूंपएतव अपनोवैरलैवेकीइछाकरतें पायोहैसमयजिंनेंतेआवतेभए १० अग्निकों
जोधरताभेवैठे उनमस्कोकभगवानतिनमेंअवेपाकरीतेवधिजिनने अैसेजेठऊनितिनेदेथकेपापमेंहैनिश्चयजिनकों
तेआवतभए ११ कृपनजोरामजीमाताजितिनेयाचनाकीयें प्रतिभयंकरस्त्रीनमेनीच तेजोरायरीशिरकाटवेलेजातभए १२
दुःखशोककरअपनेंअपनोंशिरअरछातीकूटेहै अैसीजोरेणुकासेहेरामहेरामहेतातअैसेउचस्वरभरकेपुकारतभई १३ दूरमें

येर्जुनस्यसुतास्तेतुस्मरंतस्तत्पितुर्वधं रामवीर्यपराभूतानेभिरेसमनर्वचन ९ एकदाश्रमतोरामेसभ्रातरिवनंगते
वैरंसिसाधयिषवोलब्धछिद्रउपागमन् १० दृष्ट्वाग्न्यागारआसीनमावेशितधियंमुनिं भगवत्युत्तमश्लोकेजघ्नुस्तेपापनि
श्चयाः ११ याच्यमानाःकृपणयारामम्मात्रातिदारुणाः प्रसह्यशिरउत्कृत्यनिन्युस्तेक्षत्रबंधवः १२ रेणुकादुःखशोकार्तानिघ्न
त्यात्मानमात्मना रामरामेतितातेतिविचुक्रोशोच्चकैसती १३ तदुपश्रुत्यदूरस्थाहारामेत्यार्तवत्स्वनं त्वरयाश्रममासाद्य
दहृशुःपितरंहतं १४ तत्तदुःखरोषामर्षार्तिशोकवेगविमोहिताः हातातसाधोधर्मिष्ठत्यक्त्वास्मान्स्वर्गतोभवान् १५ विलि
प्यैवंपितुर्देहंनिधायभ्रातृषुस्वयं प्रगृह्यपरशुंरामःक्षत्रान्तायमनोदधे १६ गत्वामाहिष्मतींरामोब्रह्मघ्नविहतश्रियं ते
षांसशीर्षभीरामःअध्यमध्येचकेमहागिरिं १७ तद्रक्तेननदींघोरामब्रह्मण्यभयावहां हेतुंकृत्वापितृवधंक्षत्रेमंगलकारिणः १८
त्रिःसप्तकृत्वःपृथिवींकृत्वानिःक्षत्रियांप्रभुः स्यमंतपंचकेचक्रेशोणितोदान्ह्रदान्नव १९ स्यमंतजोपरसरामसोहारामयहदुः

खयुक्तजोपादतायसहितिनकेपापअग्निकमभैंप्राइवें मारोंजोपितातायदेखतभए १४ दुखरोसअमरसआर्तिशोकवेगसेमोह
करकेमोहितहोतभयो १५ हातातहेसाधुहेधर्मिष्ठतुमहमकोछोडिकेस्वर्गकूंगए अैसेविलापकरकेपिताकेंजोदेहतायभैयानमेंधर
केआपफरसालेकेपरसरामछत्रीनकेनाशकरवेकूंमनकरतभए १६ परसरामहैसोब्राह्मणत्याकरिकेनष्टभईहैसोभाजोभी
अैसीमाहिष्मतीपुरीतायजायकेंहेराजनमाहिष्मतीपुरीकेमध्यमेंउनकेशिरनकेपरबतकरतभए तिनकेरुधिरकरकेअब्रह्म
ण्यनकूंभयकीदेनवारीघोरनदीतायकरतभए १७ अन्यायकोकरनवारोअैसोजोछत्रीनकोकुलतामेंपिताकोजोवधतासूंतुल

४ चारवकवर्त्ती जो राजा ताको जो वध सो ब्राह्मण के वध ते हुवो है याते तीर्थ सेवन करहु रमे वित्त लगाय के दुष्पाप नको
नास करौ ५ इति नवम॰ परशुरामाध्याय १५ और दसमे अध्याय में अर्जुन को जो अति जमदग्नि के मारो तब परसराम ने वैर बरष त्री
नको नास कीयो सो वरनन करत हैं और विश्वामित्र जो वेस करत है ... देव जी कहत हैं राजा पिताने से मन ... जे परसराम सो है राजा वर्षादि
मातादि सेवन करके आश्रम में प्राप्त भए १ कदू समे रेणुका गंगा में जल लेवे को गई सो कमल की माला पहरे गंध्रवराजा के संग क्री
डा करते गंधर्वन को राजा ताय देषत भई २ जल की सीघ्रता न कीनी ... सो वा ... जो वेला ताय न ... करत भई ३

सम पारी ब्रतेन्द्री ब्राह्मी सोऽरीप्सया प्रभा रामीण मात्रज्ञग्वां स्मृत्यने हरि रीश्वरः ४॰ राज्ञो मूर्द्धाभिषिक्तस्य वधो ब्रह्मवधाद्गुरुः
तीर्थ संसेवया चांतो जह्यं गाच्युतचेतना ५ इति श्रीभा॰ नवम॰ परशुरामचरिते पञ्चदशोऽध्याय १५ श्रीशुक॰ पित्रोपशिक्षितो राम
स्तथेन कुरुनंदना संवत्सरं तीर्थयात्रां चरित्वाश्रममाव्रजत् १ कदाचिद्रेणुका याता गंगायां पद्ममालिनं गंधर्वराजं क्रीडंतमप्स
रोभिरपश्यत २ विलोकयंती क्रीडंतमुदकार्थं नदीं गता होमवेलां न सस्मार किंचिच्चित्ररथस्पृहा ३ कालात्ययं तं विलोक्य मुनेः शा
पविशंकिता आगत्य कलशं तस्थौ पुरोधाय कृतांजलिः ४ व्यभिचारं मुनिर्ज्ञात्वा पत्न्याः प्रकुपितोऽब्रवीत् घ्नतैनां पुत्रकाः पापां
मित्युक्तास्ते न चक्रिरे ५ रामः संचोदितः पित्रा भ्रातॄन्मात्रा सहावधीत् प्रभावज्ञो मुनेः सम्यक् समाधेस्तपसश्च सः ६ वरेण
च्छंदयामास प्रीतः सत्यवतीसुतः वव्रे हतानां रामोऽपि जीवितं चास्मृतिं वधे ७ उत्तस्थुस्ते कुशलिनो निद्रापाय इवांजसा
पितुर्विद्वांस्तपोवीर्यं रामश्चक्रे सुहृद्वधं ८
कद्रू चित्ररथ में है चातुर्जा जो कालको जो नास ताय देषके मुनि के सापकर के सेवा जिति आइके कलस आगे धरत हाथ जोर ठाडी होत
भई ४ मुनि ने सो व्यभिचार जान के ... तो पुत्र हो ... जो पापनी अपनी माता ताय मारो ऐसे कहे ते न करत भए ५
पिताने प्रेरे जो राम सो माता सहित भैया तिनै मारत भए जो मुनि के जो तप समाधि तिनको जो प्रभाव ताय जानेहैं ६ सत्यवती के बेटा
जो जमदग्नि सो प्रसन्न होइके वरदान दीयो तब रामने सो मरे न को जिवामनो वध को विस्मृतपन मांगत भये ७ ते कुशल
सुख ना या स उठत भए ऐसे निद्रा के गए पीछे उठे परसरामने सो पिता के तपको पराक्रम जाने है याते सुहृदन को वध कीयो ८

न.ना.
३३

रुधिरकोजोसमुद्र ताकीहैकीचजामें ऐसोजोरणकोआंगन तामेंरामकेकुठारवाणादिनकरकेंकटेहैंढालध्वजाधनुषशरीरजाकों
ऐसोजोअपनोसैन्य तिरस्कोतायदेखकेंसहस्रावाहुआवतभयो ३२ अर्जुनहैसो ५०० पानसोधनुषनिनमेंएकसंगवाणचढाइ
केंप्रहारकरतभयो तिनेपरसरामएकसंगकाटतभयो ३३ फेरअपनेहाथनकेंपर्वतवृक्षनिनेंउखारकेंयुद्धमेंदोर्यो ऐसोफेर
अर्जुनताकेसोवाणलगायकेंपरसरामकेउपरचलावतभयो सहस्रधारीनमेंश्रेष्ठ एकहैधनुषजिनकेंऐसोजोपरसराम सोवाणनकूं
कांटिकैंएकसंगभुजानितेंफरसाकरकेंकाटतभये ३४ जैसेसांपकेफननकूंकाटेहैं कटेहैंहाथजिनकें ऐसोजोअर्जुन ताकेसिर

दृष्ट्वास्वसैन्यंरुधिरौघकर्दमेरणाजिरेरामकुठारसायकैः विवृक्णचर्मध्वजचापविग्रहंनिपातितंहैहयआपतद्रुषा ३२
अथार्जुनःपंचशतेषुबाहुभिर्धनुष्षुवाणान्युगपत्ससंदधे रामायरामोस्त्रभृतांसमग्रणीस्तान्येकधन्वेषुभिरा
च्छिनत्समं ३३ पुनःस्वहस्तैरचलान्मृधेऽंघ्रिपानुत्क्षिप्यवेगादभिधावतोयुधी भुजानकुठारेणकठोरनेमिनाचिच्छेदरामः
प्रसभंत्वहेरिव ३४ कृत्तवाहोःसिरस्तस्यगिरेःशृंगमिवाहरत् हतेपितरितत्पुत्राअयुतंदुद्रुवुर्भयात् ३५ अग्निहोत्री
मुपावर्त्यसवत्सांपरवीरहा समुपेत्याश्रमंपित्रेपरिक्लिष्टांसमर्पयत् ३६ स्वकर्मतत्कृतंरामःपित्रेभ्रातृभ्यएव
चःवर्णयामासतच्छ्रुत्वाजमदग्निरभाषत ३७ रामराममहाबाहोभगवान्पापमकार्षीत् अवधीन्नरदेवंयत्सर्वदेव
मयंवृथा ३८ वयंहिब्राह्मणास्तातक्षमयार्हणतांगतः ययालोकगुरुर्देवःपरमेष्ठीमगात्पदं ४०

कूंकाटलेतभये जैसेपर्वतकेसिरकूंकाटेहैं पिताकेमरेसंतेताकेजेपुत्रतेदसहजारभयपायेंभाजतभये वेरीनकेमारनवा
रेपरसरामसोवछरासहितजोगऊताय लेकेंआश्रममेंआयपिताकूंदेतभये ३६ अपनोकीयोजोकर्मतायपिताभैयाइनसूं
कहतभये तायसुनिकेंजमदग्निरिसोयहवोलतभये ३७ हेरामहेरामहेमहाभागहेमहावाहुतुमवडोपापकरतभये
सर्वदेवमयराजाव्रथामार्यो ३८ रेपुत्रहमतोक्षमाकरकेंपूज्यभयेहें जाक्षमाकरकेंलोकनकोगुरुदेवब्रह्मजोप
रमेष्ठीजोपदतायप्रासहोतभयो ३९ क्षमाकरकेंब्राह्मणनकीलक्ष्मीसोहांभितहोहै जैसेसूर्यकीकांतिक्षमाकरनवारे
नपैभगवान्ईश्वरसोप्रसन्नहोहि ४०

उलटो चलायो नदी को जल ताकर के बहि गयो अपनो डेरा ताय देखवे के अपन ये कूं वीर मानै है दस है माथे जाके ऐसो जो रावण सो ता राजा को पराक्रम कोन
ही सहारत भयो २१ कीयो है अपराध जाने ऐसो जो रावण ताय स्त्रीन के समक्ष लीला करके पकर लीयो माहिष्मती पुरी में बंदर की सी नांई रोक दीयो फेर
अवज्ञा करिके जाने छोड दीयो २२ सो अर्जुन एक दिनो निर्जन वन में सिकार खेलत अकस्मात जमदग्नि को जो आश्रम ताय प्रवेश करत भयो २३ सए
है धन जिन को ऐसे जे मुनि सो सेना मंत्री वाहन इनकरिके सहित जो राजा ताको अर्घ कामधेनु करके जो जमादिक सनमान ताय करन भयो २४ अपने ऐश्वर्य
ते अधिक ऋषिन को प्रभाव ताय देखके सो वीर अर्जुन आदर न करत भयो हैहय न करके सो राजा वा कामधेनु की इच्छा करत भयो २५ सो गर्व ते ऋषी की जो गाय ताय
हरवे के लीये लोकन कूं प्रेरत भयो ते जो रावरी बछरा सहित रंभावती जाय है ऐसी जो गऊ ताय माहिष्मती पुरी ले गयो २६ राजा के गए पीछे परसराम आश्रम में

विप्रान्वितं स्वपितरं प्रतिस्रोतः सरिज्जलैः नाम ध्यन स्ववीर्य्यवीरमानी दशाननं २१ गृहीतो लीलया स्त्रीणां समक्षं कृतकिल्बिषः माहि
ष्मत्यां संनिरुद्धो मुक्तो येन कपिर्यथा २२ स एकदा तु मृगयां विचरन्विजने वने यदृच्छयाश्रमपदं जमदग्नेरुपाविशत् २३ तस्मै स नरदेवाय मु
निरर्हणमाहरत् ससैन्यामात्यवाहाय हविष्मत्या तपोधनः २४ स वीरस्तत्र तद्दृष्ट्वा आत्मैश्वर्यातिशायनं तन्नाद्रियताग्निहोत्र्यां साभि
लाषः स हैहयः २५ हविर्धानीमृषेर्दर्पान्नरान्हर्तुमचोदयत् ते च माहिष्मतीं निन्युः सवत्सां क्रंदतीं बलात् २६ अथ राजनि निर्याते रा
म आश्रम आगतः श्रुत्वा तत्तस्य दौरात्म्यं चुक्रोधाहिरिवाहतः २७ घोरमादाय परशुं सतूणं वर्म कार्मुकं अन्वधावत दुर्मर्षो मृगेंद्र इव
यूथपं २८ तमापतंतं भृगुवर्यमोजसा धनुर्द्धरं बाणपरश्वधायुधं ऐणेयचर्मांबरमर्कधामभिर्युतं जटाभिर्ददृशे पुरीं विशन् २९ अचोदय
द्धस्तिरथाश्वपत्तिभिर्गदासिबाणर्ष्टिशतघ्निशक्तिभिः अक्षौहिणीः सप्तदशातिभीषणास्ता राम एको भगवानसूदयत् ३० यतो यतोऽसौ प्रह
रत्परश्वधो मनोनिलौजाः परचक्रसूदनः ततस्ततश्छिन्नभुजोरुकंधरा निपेतुरुर्व्यां हतसूतवाहनाः ३१ ३१ ३१ ३१ ३१ ३१

आए राजा को जो दुरूपनो ताय सुनिकें क्रोध करत भए जैसे ठोकर सूं मार्यो सर्प सो क्रोध करे है २७ घोर जो फरसा ताय लेके तरकस सहि
त जो धनुष ताय लेकै ढाल सहित तरवार लेकै राजा के पीछे दौरत भए जैसे हाथी के मारवे को सिंह दौरे है २८ भृगुकुल में श्रेष्ठ बल करके दौर
आए हैं धनुष धरें बाण फरसा रे आयुध जिन के मृगचर्म हैं वस्त्र जिन के सूर्य की साहि तेज जिन को ऐसी जो जटा तिन करके युक्त ऐसे
जो परसराम तिनै पुरी में प्रवेश करत राजा देखत भयो २९ हाथी रथ घोडा प्यादे इन करके अति भयंकर ऐसी १७ सत्रह जे अक्षौहि
णी तिनै भेजत भयो एकही जो भगवान परसराम सो ~~जसंन संमारत भए से ततो त सब की रै भुजा ऊरु नार जिन की मरते~~ तिन अक्षौ
हिणीन कूं नाश करत भए ३० मनोहर कहे है परसा जिनको मन पवन को सो है पराक्रम जिनको वैरी की सेना को नाश करन वा
रो जो परसराम सो जहां जहां जात भए तहां तहां कटि है भुजा ऊरु नार जिन की मरे है सारथी वाहन जिन के ऐसे जे वीर ते भूमि में गिर

मुनी है सो लाखन तो तनकूं जानि कैं स्त्री सूं बोले तैनैं बड़ो निंदित काम कीयो तेरे घोर दंड को करन वारो पुत्र होइगो तेरो भैया ब्रह्मवेतान मैं श्रेष्ठ
होइगो २० सत्यवती ने रिचीक है सो प्रसन्न कर के कही ऐसे मति होउ तब ऋषी बोले तो तेरो नाती होइगो ता तें जमदग्नि पुत्र भये ११
सो सत्यवती बड़ी पुन्य श्लोकन की पवित्र करनवारी कौशिकी नाम नदी होत भई जमदग्नि हैं सो रेणु की बेटी रेणु को ताय व्याहत भ
ई ता में जमदग्नि तें वसुमान तें आदि लैकें पुत्र होत भयो २३ इन में छोटे परसराम होत भये जिन को वासुदेव को अंश कहे हैं हैहयन को
कुल नाश करनवारे २४ जो परसुराम २१ इकीस बेर करकें तन क्षत्री जो पृथ्वी नाथ कर नभये अब्रह्मण्य अधर्मी रजोगुन मकर कें युक्त
पृथ्वी को भार क्षत्री कुल ताय थोरे ही अपराध पे नाश करत भये २५ राजा पूछो है अकृतात्मा जे क्षत्री तिन्हें भगवान को कहा अपराध

तद्विज्ञाय मुनिः प्राह पत्नीं कस्मकारषीः घोरो दंडधरः पुत्रो भ्राता ते ब्रह्मवित्तमा २० प्रसादितः सत्यवत्या मैवं भूदिति भार्गवः
अथ तर्हि भवेत्पौत्रो जमदग्निस्ततो भवत् ११ सा चाभूत्सुमहत्पुण्या कौशिकी लोकपावनी रेणोः सुतां रेणुकां वै जमदग्नि
रुवाह या २२ तस्यां वै भार्गवऋषेः सुता वसुमनादयः यवीयान् जज्ञ एतेषां राम इत्यभिविश्रुतः १३ यमाहुर्वासुदे
वांसं हैहयानां कुलांतकं त्रिःसप्तकृत्वो य इमां चक्रे निःक्षत्रियां महीं १४ दुष्टं क्षत्रं भुवो भारमब्रह्मण्यमधार्मिकं रजस्तमो
वृतमहनत्फल्गुन्यपि कृतेंहसि १५ राजोवाच ॥ किं तदंहो भगवतो राजन्यैरजितात्मभिः कृतं येन कुलं नष्टं क्षत्रीयाणा
मभीक्ष्णशः १६ वादरायणिरुवाच ॥ हैहयानामधिपतिरर्जुनः क्षत्रियर्षभः दत्तं नारायणांशांशमाराध्य परिकर्मभिः १७
बाहून्दशशतं लेभे दुर्धर्षत्वमरातिषु अव्याहतेंद्रियौजः श्रीतेजोवीर्ययशोबलं १८ योगेश्वरत्वमैश्वर्यं गुणा यत्राणिमादयः

कीयो जु कर के क्षत्रीन कों निरंतर कुल कों नाश कीयो १६ अर्जुन हे राजन हैहयन को अधिपति क्षत्रीन में श्रेष्ठ अर्जुन सो नारायण
के अंश दत्तात्रेय तिन की सेवा करकें हजार भुजा तिने प्राप्त भयो वेरीन में दुर्धरत्व भयो नहीं नष्ट हैं इंद्री ओज श्री तेज वीर्य यश
ताय प्राप्त भयो और हजार में अणिमा दिक गुण हैं ऐसो जो ऐश्वर्य योगेश्वरता प्राप्त भयो नहीं नष्ट है गति जाकी ऐसो जो अर्जु
न सो लोकन में विचरत भयो जैसे लोकन में पवन डोले है १८ स्त्रीरत्नन करिकें युक्त नर्मदा को जो जल ता में क्रीड़ा करत वैजयं ३२
ती माला है ताय धारण करत मद कर कें उत्कट जो हस्ता वाड सो भुजान करकें नर्मदा जो है ताय रोकत भयो है १९

पंद्रहके अध्यायमैं पुरूरवाके पुत्रनको जो वंस तामैं भ्रगदहोत भयो जाके दोहिते के वेटा परसराम भए सो क्रोध करके सहस्राबाहु कुं मार
त भए १ और पुरूरवाके उर्वसीके गर्भते छ पुत्र भए आयु श्रुतायु सत्यायु रय जय विजय ए छह भए १ श्रुतायुके वसुमान भयो सत्यायु
के श्रुतंजय भयो रयको वेटा एक नाम भए जयके पुत्र अमित भयो २ विजयके भीम भयो ताके कांचन भयो ताके होत्रक ताके जन्हु भ
यो जो जन्हु गंगाकूं चीर करके पी गए ३ जन्हुके पुत्र पुरु भयो ताके बलाहक ताके अजक ताके कुश कुशके कुशांबु अमूर्तय व
सु कुशनाभ ए चार भए कुशांबुको वेटा गाधि भयो ४ ता गाधकी कन्या सत्यवती ताय रिचीक जो ब्राह्मण सो मांगत भयो गाधि ने सो अनु

शुक उवाच: ऐलस्य चोर्वशीगर्भात् षडासन्नात्मजा नृप आयुः श्रुतायुः सत्यायू रयोऽथ विजयो जयः १ श्रुतायोर्वसुमान्सु
त्रः सत्यायोश्च श्रुतंजयः २ रयस्य सुत एकश्च जयस्य तनयोऽमितः २ भीमस्तु विजयस्याथ कांचनो होत्रकस्ततः तस्य जन्हुः सुतो
गंगां गंडूषीकृत्य योऽपिबत् ३ जन्होस्तु पुरुस्तस्य सुतो बालकश्चात्मजोऽजकः ततः कुशः कुशस्यापि कुशांबुर्मूर्तयो वसुः कु
शनाभश्च चत्वारो गाधिरासीत्कुशांबुजः ४ तस्य सत्यवतीं कन्यां ऋचीकोऽयाचत द्विजः वरं विसदृशं मत्वा गाधिर्भार्गव
मब्रवीत् ६ एकतः श्यामकर्णानां हयानां चंद्रवर्चसां सहस्रं दीयतां शुल्कं कन्यायाः कुशिका वयं ७ इत्युक्तस्तन्मतं ज्ञात्वा गत्वा
स वरुणांतिकं आनीय दत्वा तानश्वानुपयेमे वरानना स ऋषिः प्रार्थितः पत्न्या श्वश्र्वा चापत्यकाम्यया श्रपयित्वोभयैर्मंत्रैश्चरुं
स्नातुं गतो मुनिः ९ तावत्सत्यवती मात्रा स्वचरुं याचिता सती श्रेष्ठं मत्वा तयायच्छन्मात्रे मातुरदत्स्वयम् १० मूल०

रूप नहीं ऐसो जो वर ताय मानके भृगुकुलमें भए रिचीक तिनसूं बोलत भयो ५ एक कांन है कारो जिनको चंद्रमा सो उज्जल ऐसे
से हजार घोडा कन्याको मोल है हम कुशांबके वंसके है ६ ऐसे कहे जो रचीक सो राजाको मन जानके वरुणके पास जात भए
वरुणसूं हजार घोडा लायकै गाधकूं देकै ता कन्याकूं ब्याहत भए ७ सो ऋषी स्त्रीनें और सासूने पुत्रकी इच्छा करके प्रार्थना की
ऐं जो मुनी सो ब्राह्मण मंत्र करिके लीये छत्रीके मंत्र करके सासूके लीएं चरू करकै स्नानकूं जात भए ८ जब ताई स्नान क
रिकै मुनी आए तब ताई सत्यवतीको चरु श्रेष्ठ मानके माताने मांग्यो सो चरू माताकूं दीयो माताको चरु आप ही खाय गई ९

विरहकरिकै आतुरयहराजा तावदेव जैयहुवोली तुइन गंधर्वनकी सेवाकरियै तो मोइ वैरायागी ३९ नवहपरी इतनलवगंधर्वनकी
अस्तीतकीनी सोवेप्रसन्न होइकै अग्निस्थाली तायदेवनी तापहेतनभए ४० यहराजाउरवसी मानिकै तायवनमेंसंगलें विवरतभये
फेरयहजानीयहउरवसीनहीं टोकनी है वनमैंसा टोकनीकूधरकैं घरमै आयकै रातिमैउरवसीकौ ध्यानकरहैं ऐसेसोजो पुरुर
वामावेमनतें ४१ मैतायुगकेविषे तीनवेद प्रगटहोतभए ४३ जवयहराटोकनीधरीहीजहांगयौ तहांछोकराकैनाम सैजयापीपरता
यहरवकैं ताकीइो अरसीकरकै उरवसीकेलोककीइछाकरकै मंत्रसेंनीचलीअरनीमै अपनें ध्यानकरत होचोनतेमध्यमेंकोआ

पुत्रस्तत्र गतो यत्र उरवसी वीर स्मरन् मनः उपलभ्य मुहुर्युक्तः समवाप्य तयाऽनिशं ३८ अथैनमुर्वशी प्राह पुनर्विरहातुरं
गंधर्वानुपधावेमान् तुभ्यं दास्यंति मामिति तस्य संस्तुवतस्तुष्टा अग्निस्थालीं ददुर्नृप उरवसीं मन्यमानस्तां सोऽबुध्यत चर
न्वने ३९ स्थालीं न्यस्य वने गत्वा गृहानाध्यायतोनिशि त्रेतायां संप्रवृत्तायां मनसि त्रय्यवर्तत ४० स्थालीस्थानं गतोऽश्वत्थं
शमीगर्भं विलक्ष्य सः तेन द्वे अरणी कृत्वा उरवसीलोककाम्यया ४१ उरवसीं मंत्रतो ध्यायन्नधरारणिमुत्तरां आत्मानमु
भयोर्मध्ये यत्तत्प्रजननं प्रभुः ४२ तस्य निर्मथनाज्जातो जातवेदा विभावसुः त्रय्या स विद्यया राज्ञा पुत्रत्वे कल्पितस्त्रिवृत् ४३
तेनायजत यज्ञेशं भगवंतमधोक्षजं उरवसीलोकमन्विच्छन् सर्वदेवमयं हरिं ४४ एक एव पुरा वेदः प्रणवः सर्ववाङ्मयः
देवो नारायणो नान्य एकोऽग्निर्वर्ण एव च ४५ पुरूरवस एवासीत्त्रयी त्रेतामुखे नृप अग्निना प्रजया राजा लोकं गांधर्वमेयि
वान् ४७ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे नवमस्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः शुक उवाच १४

तायपुत्रकोध्यानकरतभयौ ४४ जाकेमथवेतेंअग्निहोतभयौ कर्मफलकौदेनवारौसोअग्नि त्रोधविद्याकरकैंतीनप्रकारकौहो
सोपुरूरवानेंपुत्रभावकरकैंरचौ ४५ तायअग्निकरिकैंयज्ञकेईश्वरभगवान् सर्वदेवतामयतिनैं उरवसीकेलोककीइछाकरकें यज्ञ
करतभयौ ४६ पहलेंसतजुगमेंसववाणीनकोरूपवीजउंकारसोएकहीवेदहतौ नारायणहीएकदेवताहौ अग्निएकहीतौ वर्ण
एकहीहंसनामाहौ ४७ हेराजा तेताकेआरंभतेंपुरूरवातेंवेदत्रयीहोतभई पुरूरवाहैसोअग्नितेंजोपुत्रताकरकैंगंधर्वनकोजो

[illegible]

ऐसें अंकुशा करके हाथी सी रानमें रवडु लेके नगोई ओघ्र करके दौरत भयो २६ ते गंधर्व याकूं देखके बैटानकूं छोडिके आजित भये सो राजा बीजुरीके सो प्रकाश करत महलकूं देखे आवेई नंगो नृप नोपतिताय देखतभई सो छोडिके चलीगई २८ पुरूवा हे सो नाय से थापे नदेष नविमन सो होत भयो नाई मिले हो चित्त जाको विहवल होइके सो च करत उन्मत्त सो ताय पृथ्वी में डोलत भयो ३० एक समें कुरुक्षेत्र में सरस्वती में सखकूं आई ऐसी जो उरवसी आप ताकी पंचसखी तिनें देखके हंस दरजो बचन ताय कहत भयो ३१ हे जाया ठाढी हो २ हे घोर रूप मेरे छोड बहुत योग्य ने हीं हे मोते सुख हे नाय न पाय में जात भई अब तमेरे संग रहड़ मतु मम मिलके गोष्ठ करेंगे ३२ हे देवी तेने दूरि कीयो आतुं दरस्त सोगिरगो

निष्ठीनी स्त्री समा हायाविव लो [illegible] २९ ते विसृज्यो स्णोत त्र यथो तं तस्मा विगुता: प्रादय में पावा यांतं नम मे हतसा पति ३० ये लोप सय में जाया म पपपन्तु विमनाइव तच्छ्रुत्वा विह्वला सोचन् वज्रा मोन्मत्तवन्मही ३१ सतांतांवीक्ष कुरुक्षेत्रे सर स्वत्यां च तत्स खी: पंच प्रहृष्ट वदनाः प्राह सूक्तं पुरूरवा ३२ अहो जाये तिष्ठ तिष्ठ घोरे न त्यक्तुमर्हसी मां त्वमद्याप्यनिर्वृत्य वचांसि कृणवामहे ३३ सुदेहोयं पतत्यत्र देवि दूरं हृतस्त्वया खादंत्येनं वृका गृध्रा त्वत्प्रसादस्य नास्पदं ३४ उरवश्युवाच: मा म्रियथा पुरुषोसि त्वं मा स्म त्वाद्युर्वृका इमे क्वापि सख्यं न वै स्त्रीणां वृकाणां हृदयं यथा ३५ स्त्रियो ह्यकरुणा: क्रूरा दुर्मर्षा: प्रियसाहसा: घ्नंत्यल्पार्थेपि विश्रब्धं पतिं भ्रातरमप्युत ३६ विधाय लीकं विश्रंभमज्ञेषु त्यक्तसौहृदा नवं नवमभीप्संत्य: पुंश्चल्य: स्वैरवृत्तय: ३७ संवत्सरांते हि भवानेकरात्रं मयेश्वर: वत्स्यत्यपत्यानि च ते भविष्यंत्यपराणि भो: ३८ अंतर्वत्नीमुपालक्ष्य देवीं स प्रययौ पुरं ३९ पुनस्तत्र गतोब्दांते उरवसी वीरमातरं उप

यादे रकूं त्यारी गीध रखाइगें ते रे मसादन रकैरह नहीं ३३ उरवसी बोलीत में वें मति नपुरुष है धीजे कर ये त्यारी तो कूं मति खावो स्त्रीको जो सख्य सो कहूं है नहीं जैसें त्या रीन को हृदय है तैसोई स्त्रीन को हृदय है ३४ स्त्री हैं ते निरदई हैं क्रूर है असहनशील रे सें साहसकरे हें थोरेसे द्रव्य पे पृथ्वी सख्य [illegible] विश्वासदेके पतिकूं वे या कूं मारें कूडो विश्वास देके मर्खनकूं सोहृदयन को त्याग करे ये पुछरे मति जिनकी विभचारनी तेनये नये पुरुषनकूं चाहत रहे ३५ आउ वर्ष दिना पीछे एक रात्रि मेरे संग तुम रमण करेंगो ते रे और जो पुत्र सो होइगो ३६ सो पुरूरवा प्रसें उरवसीके वा क्याकूं सुनके ३७ पुरुरवा दिना के अंत में गर्भवती देखके पुरूवा राजा अपने अस्थान कूं जातभयो उरवसी अपने घर कूं जात भई ३७ पुरुरवा दिना के अंत प्रसन्न होई उरवसी कूं गर्भनी देखके पुरूवा राजा अपने अस्थान कूं जात भयो उरवसी अपने घरकूं जात भई ३८ ता पीछे उरवसी वर्ष दिनके अंत में तहां ही जात भयो वीर की माता उरवसी ताय पाय के आनंद पायके सोरी बोले ताके संग एक रात्रि वसत भई ३८ तापीछे उरवसी दीनकरत:

देवारौते आउतेरे सुंदरू आपवो जतांतेभयों वेठिमे कुतावरू मेरे सेगरमण के तू मारीनु सारी रतिवड तवर्षचनाई रोयगी १८
उरवसी बोली येराजा कौनसी ईसी कोमन हाथि कोतोमे आसक्तन होवे हे सु दरनेरे प्रेम कोजोमध्य नायपाय के रमवे कोई आकर के म
नरेसीनदी घूरैते २० तेराजा येदोवेटा मेतेरे प्रणइहां राखुहं इनकौर स्याकरि हेमानके देनवारे मेंतेरे संगरमंगी तीन कौजोस्न
ध्यते सोईवर के सौते २१ देवीरमे घलदे नायरवाउगी भिथुनतें प्रारसमे मैंनो नेगो मेरे रवगी नवचलीआउंगी पुरुरवारें सोतेसे
ईसववात अंगीकार करतभयों २२ वडो संदरतू पते वडो भावहे नरलोक के मारिनकेरेते कौन मनुष्य आपने आई देवीतू नाथसेवन नहीकरे

सतोधितो नृपनपतिर्हर्षिणो त्फुल्ल लोचना उवाच्छ्लक्ष्णया वाचदेवी हृष्टतनूरुहः १८ राजोवाचः स्वागतं ते वरारोहे आस्यतां
करवामकिं संरमस्वमयासाकं रतिर्नौ साश्वती समा १९ उरवस्युवाचः कस्यास्त्वयिन सज्जेत मनो दृष्टिश्च सुंदर यदंगांतरमासा
द्यच्यवते ह रिरंसया २० एताउरण कौ राजन्न्यासौ रक्षस्वमानद संरंस्ये भवता साकं श्लाघ्यः ... वरस्मृतः २१ घृतमेवी
रभक्ष्यं स्यान्नेक्षेत्वान्यत्र मैथुनात् विवाससं तत्तथेति प्रतिपेदेमहामनाः २२ अहो रूपमहो भावो नरलोक विमोहनं कोन
सेवेत मनुजो देवी त्वां स्वयमागतां २३ तयासपुरुषश्रेष्ठो रमयंत्या यथार्हतः रेमेसुरविहारेषु कामं चैत्ररथादिषु २४ रममाण
स्तयादेव्या पद्मकिंजल्कगंधया तन्मुखामोदमुषितो मुमुदेहर्गणान्बहून् २५ अपश्यन्नुर्वशीमिंद्रो गंधर्वान् समचोदयत् उ
र्वशीरहितं मह्यमास्थानं नातिशोभते २६ तेउपेत्य महारात्रे तमसि प्रत्युपस्थिते उर्वश्या उरणौ जह्रुर्न्यस्तौ राजनि जायया २७
निशम्याक्रंदितं देवी पुत्रयोर्नीयमानयोः हतास्म्यहं कुनाथेन नपुंसा वीरमानिना २८ यद्विस्रंभादहं नष्टा हृतापत्या च दस्युभिः यः शे
तेनिसि संत्रस्तो यथानारी दिवा पुमान् इति वाक्सायकैर्विद्धः प्रतोत्रैरिवकुंजरः २९ पुरुरसन मेश्रेष्ठ पुरुरवा सो रमन जो उरवसी
ता करके जयथा जो अपने देवतानको विहार स्थल वे में चैत्ररथादिकजे वन तिनमें विहार करत भए २४ कमल के जे केसर तिनकी सी है गंधजाकी
ऐसी जो देवी ता करके रमैवे ता के मुख की जो सुगंध ताते लोभित भयो बहुत जा दिनन की गणना तिन कूं रमत आनंद कूं प्राप्त होत भयो २५ ईद्र
सो उरवसी कूं न देष के गंधर्वन कूं प्रेरत भयो उरवसी करि रहित जो मेरो स्थान सो नहीं सोभा देहै २६ ते गंधर्व आधी रात में अंधेरे में
आयके राजा के पास राखे उरवसी के वेटा तिन कूं हरत भए २७ लिये जात जे पुत्र तिनको रुदन सुनिके उरवसी बोली अरे
कुनाथ नपुंसक आपकूं वीर माने ऐसो याके विस्वास ते मैं नष्ट भई चोरनने मेरे पुत्र हरलीये दिन में यह पुरुष है

तब देवता असुरन कौं ऐसो संग्राम जाते ऐसो तारकामय संग्राम होत भयो ७ तब अंगिरा ने ब्रह्मा सौं कही तब ब्रह्मा जी चंद्रमा कौं निरकार कें तारा कौं बृ
हस्पति के अर्थी दिवाय देत भए बृहस्पति है सो तारा कूं गर्भ सो जानत भए ८ हे दुष्ट बुद्धि और ने मेरे क्षेत्र में राख्यो गर्भ ताय वेगि डार दे ९ ते असती
संतान की रैइछा नाहीं ऐसो जो मैं सो न दईं स्त्री ताय भस्म नहीं करूंगो ९ लज्जित भई जो तारा सो सोने की सी देह कौ निजा कौ ऐसो जो बालिक ता
य सो त्याग करत भई ता बालक कूं मैं चंद्रमा और बृहस्पति दोउ चाहत भये १० यह मेरौ बालिक है तेरो नहीं है ऐसे दोउ झगरत लगे तब ऋषि देव
ता पूछत भयो तब लज्जित जो तारा सो बोलत न भई ११ तब बालक क्रोध कर माता सौं बोल्यो हे असत्ये प्रपना जो दोष ताय कौन नहीं कहे रे मौं

सुरासुरविनाशोऽभूत्समरस्तारकामया निवेदितोऽथांगिरसा सोमं निर्भर्त्स्य विश्वकृत तारां स्वभर्त्रे प्रायच्छदंतर्वत्नीमवैत्पतिः ८
त्यज त्यजाशु दुष्प्रज्ञे मत्क्षेत्रादाहितं परैः नाहं त्वां भस्मसात्कुर्यां स्त्रियं सांतानिकेऽसति ९ तत्याज व्रीडिता तारा कुमारं कनकप्रभं स्पृ
हामांगिरसश्चक्रे कुमारे सोम एव च १० ममायं न तवेत्युच्चैस्तस्मिन्विवदमानयोः पप्रच्छुर्ऋषयो देवा नैवोचे व्रीडिता तु सा ११
कुमारो मातरं प्राह कुपितोऽलीकलज्जया किं न वोचस्यसद्वृत्ते आत्मावद्यं वदाशु मे १२ ब्रह्मा तां रह आहूय समप्राक्षीच्च सांत्वय
न् सोमस्येत्याह शनकैः सोमस्तं तावदग्रहीत १३ तस्यात्मयोनिरकृत बुध इत्यभिधां नृपः बुद्ध्या गंभीरया येन पुत्रेणापोडुरा
ण्मुदं १४ ततः पुरूरवा जज्ञे इलायां य उदाहृतः तस्य रूपगुणौदार्यशीलद्रविणविक्रमान् १५ श्रुत्वोर्वशींद्रभवने गीयमाना
न्सुरर्षिणा तदंतिकमुपेयाय देवी स्मरशरार्दिता १६ मित्रावरुणयोः शापादापन्ना नरलोकतां निशम्य पुरुषश्रेष्ठं कंदर्पमिव
रूपिणं १७ धृतिं विष्टभ्य ललना उपतस्थे तदंतिके १८ कौन कौ है कहत है १२ ब्रह्मा है सो तारा कूं एकांत में बुलाय कैं सावधान

कर पूछत भए तब तारा ने लें है सी कहत भई चंद्रमा कौ है तब चंद्रमा ताय ग्रहण करत भयो १३ ब्रह्मा है सो ता कौ नाम बुध धरत भये
गंभीर बुद्धि देख कें जा बुध कर कैं चंद्रमा आनंद कूं प्राप्त भयो १४ ताते इला में पुरूरवा भयो जो पहिले कहि आए ताके रूप गुण उदारता शी
ल द्रव्य पराक्रम इंद्र के घर में नारद ने गाए तिने सुनि कैं उरवसी है सो कामबाणन कर पीडित भई सो ता के पास आवत भई १६ मित्रा
वरुण कौ जो साप ता तें मनुष्य लोक कूं प्राप्त भई पुरुषन में श्रेष्ठ कंदर्प सो है रूप जाकौ ऐसो जो पुरूरवा ताय देख कें धीरज करकें ता
के निकट ठाडी होत भई १७ आनंद कर कें प्रफुल्लित है नेत्र जा के ऐसो जो राजा सो वा स्त्री कूं देख कें सुंदर वाणी कर कें बोलत भयो १८

१म· ताके वसुअनंत ताके युयुधान ताके सुभाषण ताके श्रुत ताके जय ताके विजय ताके ऋत भयो ताके शुनक ताके वीतहव्य ताके धृति भयो धृति के
२४ बहुलाश्व भयो ताके कृति सो बड़े जनक भये २६ ये मिथिलावंश के राजा कहे आत्मविद्या में चतुर भये योगेश्वरन के प्रसाद करि के सु
खदुःखादिक करि के घरन में हू मुक्त भये २७ इति श्रीभागवते नवम· त्रयोदशोऽध्यायः १३ चौदवें अध्याय में आदि लै के समापति तांई चंद्रमा
को वंश कहें हैं जा वंश में पुरूरवा ते आदि लेके पुन्य है कीर्ति जिनकी ऐसे राजा तेऊ कीये हैं १ चौदवें अध्याय को गुरु की स्त्री तारा ताने चंद्रमा
ते बुध भयो ताते पुरूरवा भयो ताकी उरवसी में छह बेटा होत भये सो वर्णन करै हैं १ अथ· हे राजा याते आगे चंद्रमा को वंस तो सुनौं जा वंस में पुरू

वस्वनंतो यत्सुतो युयुधानात्सुभाषणः श्रुतस्ततो जयस्तस्माद्विजयोऽस्मादृतः सुतः २४ शुनकस्तत्सुतो जज्ञे वीतहव्यो धृतिस्ततः
बहुलाश्वो धृतेस्तस्य कृतिरस्य महावशी २५ एते वै मैथिला राजन्नात्मविद्याविशारदाः योगेश्वरप्रसादेन द्वंद्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि २७ इति भाग·
नवम· त्रयोदशोऽध्यायः १३ श्रीशुक· अथातः श्रूयतां राजन्वंशः सोमस्य पावनः यस्मिन्नैलादयो भूपाः कीर्त्यंते पुण्यकीर्तयः १ सहस्रशि
रसः पुंसो नाभिह्रदसरोरुहात् जातस्यासीत्सुतो धातुरत्रिः पितृसमो गुणैः २ तस्य दृग्भ्योऽभवत्पुत्रः सोमोऽमृतमयः किल विप्रौषध्यु
डुगणानां ब्रह्मणा कल्पितः पतिः ३ सोऽयजद्राजसूयेन विजित्य भुवनत्रयं पत्नीं बृहस्पतेर्दर्पात्तारां नामाहरद्बलात् ४ यदा स देव
गुरुणा याचितोऽभीक्ष्णशो मदात् नात्यजत्तत्कृते जज्ञे सुरदानवविग्रहः ५ शुक्रो बृहस्पतेर्द्वेषादग्रहीत्सासुरोडुपं हरो गुरुसुतं स्नेहात्
सर्वभूतगणावृतः ६ सर्वदेवगणोपेतो महेंद्रो गुरुमन्वगात् ॥७॥ पुरूरवा ते आदि लै के पुन्य कीर्ति जे राजा ते कीर्तन करीये हैं १ हजा

रन हैं शिर जिनके ऐसे जे भगवान् नारायण तिनकी नाभिकमल ते ब्रह्मा होत भयो ताके पुत्र अत्रि होत भयो गुणन करि के ब्रह्मा के स
मान है २ अत्रि के आनंद के आंसुन ते अमृतमय चंद्रमा पुत्र होत होत भयो सो ब्रह्मा ने ब्राह्मण औषधी तारागण इनको पति कीयो ३ सो चंद्र
मा तीनों भुवन जीत के राजसूय करके ... होत भयो बृहस्पति की गर्भवती स्त्री तारा जो ताको बरी हरत होत भयो ४ देवतान के गुरु बृहस्पति ति
न ने बेर बेर चंद्रमा याचना कीयो परि मद ते तारा कूं न देत भयो ताके अर्थ देवता दानवन को युद्ध होत भयो ५ बृहस्पति से जो वैर ताते शु
क्र असुरन सहित जो शुक्र सो चंद्रमा को शरण करत भयो सगरे भूतगणन करि सहित महादेव सो स्नेह ते गुरु पुत्र जो बृहस्पति ताय २५
शरण करत भये ६ सब देवतागणन करि सहित इंद्र सो गुरु को ओर जात भयो ॥

देवतावोंले बिना देहही शरीरधारीनके नेत्रमें पलकवसों पलकनकेलगायवे उघरवेमें लखवेतो उझे ११ मनुष्यनको बिना राजा भयमानें
ऋषिनेनें निमिको देहतायुमथतभए तातें बालकहोत भयो १२ सोजन्मकरकेजनक नामभयो वैदेहतें भयो यातें विदेहनाम है
मथतेंभयो तातें मिथुलनाम भयो जानें मिथुलापुरी वसाई १३ ता मिथुलके उदावसु भयो ताके पुत्र नंदवर्द्धन भयो तातें सुकेत ताके
देवरात १४ तातें बृहद्रथ भयो ताके महावीर्य ताके सुधृत ताके धृष्टकेतु ताके हर्यश्व ताके मरुत भयो १५ मरुततें प्रतीक भयो ताके कृत
रथ ताके देवमीढ ताके विसृत ताके महाधृत भयो १६ तातें कृतरात तातें महारोमा ताके स्वर्णरोमा ताके ह्रस्वरोमा तातें सीरध्वज भयो

देवा ऊचुः विदेह उष्यतां कामं लोचनेषु शरीरिणां उन्मेषणनिमेषाभ्यां लक्षितोध्यात्मसंस्थिता: ११ अराजकभयं नृणां मन्यमा
ना महर्षयः देहं ममंथुः स्म निमेः कुमारः समजायत: १२ जन्मना जनकः सोभूत वैदेहस्तु विदेहजः मिथिलो मथनाज्जातो
मिथुला येन निर्मिता: १३ तस्मादुदावसुस्तस्य पुत्रोभून्नंदिवर्द्धनः ततः सुकेतुस्तस्यापि देवरातो महीपते १४ तस्माद्बृहद्र
थस्तस्य महावीर्यः सुधृतपिता: सुधृतेर्धृष्टकेतुर्वै हर्यश्वोथ मरुस्ततः १५ मरोः प्रतीपकस्तस्माज्जातः कृतरथो यतः देवमी
ढस्तस्य पुत्रो विश्रुतोथ महाधृति १६ कृतरातस्ततस्तस्मान्महारोमाथ तत्सुतः स्वर्णरोमा सुतस्तस्य ह्रस्वरोमा व्यजायत १७ ततः
सीरध्वजो जज्ञे यज्ञार्थं कर्षतो महीं सीता सीराग्रतो जाता तस्मात्सीरध्वजः स्मृतः १८ कुशध्वजस्तस्य पुत्रस्ततो धर्मध्वजो नृपः धर्म
ध्वजस्य द्वौ पुत्रौ कृतध्वजमितध्वजौ १९ कृतध्वजात्केशिध्वजः खांडिक्यस्तु मितध्वजात् कृतध्वजसुतो राजन् आत्मविद्याविशारदः २०
खांडिक्यः कर्मतत्वज्ञो भीतः केशिध्वजाद्द्रुतः भानुमांस्तस्य पुत्रोभूच्छतद्युम्नस्तु तत्सुतः २१ सुचिस्तु तनयस्तस्मात्सनद्वाज ततोभवत्
ऊर्द्ध्वकेतु सनद्वाजादजोथ पुरुजित्सुतः अरिष्टनेमिस्तस्यापि श्रुतायुस्तत्सुपार्श्वकः ततश्चित्ररथो यस्य क्षेमाधिर्मिथिलाधिपः २२ समस्मात्स
मरथस्तस्य सुतः सत्यरथस्तथा आसीदुपगुरुस्तस्मादुपगुप्तोग्निसंभवः २४ यज्ञके अर्थ पृथ्वी खोदैहैं तब हलके अग्रभागतें सीता कन्या होत भई

तातें सीरध्वज नाम भयो १८ ताके पुत्र कुशध्वज भयो ताके धर्मध्वज भयो ताके दोय बेटा भये कृतध्वज मित्रध्वज १९ कृतध्वजतें केशिध्वज भयो:
मित्रध्वजतें खांडिक्य भयो हे राजन् कृतध्वजको बेटा आत्मविद्यामें पारंगत भयो २० खांडिक्य सो कर्म तत्वको जाननवारो भयो सो केशिध्वजके डर
केमारें भाजगयो केशिध्वजके भानुमत भयो ताके सतद्युम्न भयो २१ ताके सुचि ताके सनद्वाज भयो ताके ऊर्द्ध्वकेतु ताके पुरुजित ताके रिष्टनेमि:
ताके श्रुताय ताके सुपार्श्व भयो ताके चित्ररथ ताके क्षेमाधि तातें समरथ २३ तातें सत्यरथ तातें उपगुरु भयो ताके अग्निके अंशतें उपगुप्त भयो २४

न॰ यतईक्ष्वाकवोवमास्तुमित्रांन होइगो स्तुमित्रकृपायकेगोत्रपुत्रमेन्मासहैं प्राप्तिहोइगो १६ इति भागवतेनवम॰ स्कंधे १२ तेरहवेंअध्यायमेंइक्ष्वाकवो
८ उत्रजोनिमितिनाकोवंसवर्णनकरेहे गावुसमैंयलज्ञानीराजाजनकआदिक्रहोतभए १ शुक॰ हेराजनइक्ष्वाककोपुत्रनिमितेयजनेआरंभकर
कैं वशिष्ठहेतापरित्वजवर्णकरतभए सोवशिष्ठबोल्योहेराजा इंद्रनेमपहिलैवर्णकीयोहै १ तायज्ञकोनिवृत्तकरिकेमेंआउंहुं तवताईपेंडो
देखिनिमिदेसोत्सुनि वे चुप्प होतभयो सोवशिष्ठइंद्रकौयज्ञतायकरतभये २ विद्वानजोनिमिसोयाजीवकुचंचलमानिकेंगौतमादिकजनको
बुलायकें तवताईगुरूनआए तवताईयज्ञकोआरंभकरतभए ३ ईंद्रकोयज्ञकरकेंआएजेगुरू सोसिष्यकीजोअन्यायतायदेखकें यहपंडितमें
ब्रुसायकें तवताईगुरूनआए तवताईयज्ञकोआरंभकरतभए

इक्ष्वाकुरूणामयंवंशमास्तुमित्रांतोभविष्यति: पुनस्तं प्राप्य राज्ञां संस्थां प्राप्स्यथ वै कलौ १६ इति॰ नवम॰ राम वंशवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः १२
श्रीशुक उवाच॰ निमिरिक्ष्वाकुतनयो वसिष्ठमवृतर्त्विजं आरभ्य सत्रं सोऽप्याह शक्रेण प्राग्वृतोऽस्मि भो १ तं निर्वर्त्यागमिष्यामि तावन्मां
प्रतिपालय तूष्णीमासीद्गृहपति सोऽपीन्द्रस्याकरोन्मखं २ निमिश्चलमिदं विद्वान्सत्रमारभतात्मवान् ऋत्विग्भिरपरैस्तावन्नागमद्
यावता गुरुः ३ शिष्यव्यतिक्रमं वीक्ष्य निर्वर्त्य गुरुरागतः अशपत्पतताद्देहो निमेः पण्डितमानिनः ४ निमिः प्रतिददौ शापं गुरवेऽधर्म
वर्तिने तवापि पततां देहो लोभाद्धर्ममजानतः ५ इत्युत्ससर्ज स्वं देहं निमिरध्यात्मकोविदः मित्रावरुणयोर्जज्ञे उर्वश्यां प्रपितामहः ६
गन्धवस्तुषु तद्देहं निधाय मुनिसत्तमाः समाप्ते सत्रयागे च देवानूचुः समागतान् ७ राज्ञो जीवतु देहोऽयं प्रसन्नाः प्रभवो यदि तथे
त्युक्ते निमिः प्राह मा भून्मे देहबंधनं ८ यस्य योगं न वांछंति वियोगभयकातराः भजंति चरणाम्भोजं मुनयो हरिमेधसः ९ देहं नाव
रुरुत्सेऽहं दुःखशोकभयावहं सर्वत्रास्य यतो मृत्युर्मत्स्यानामुदके यथा १० [illegible] निमिनाको देह गिरो ऐसे शाप देतभए ४ निमिहू

सोधर्ममेंवर्तनहारोगुरू तिनकोंप्रतिशाप देतभए तेरोहू देहगिरो लोभतेधर्मकूनहींजानें ५ ऐसें कहि जो निमि सोअपने देहकूत्याग
करतभयो वशिष्ठहैसोमित्रावरुणतें उरवसीमेंजन्मलेतभए ६ मुनिनमेंजेउत्तमतेनिमिकोजोदेहताय सुगंधकीजेवस्तुतिनमें
धरकें यज्ञसमाप्तकरकें यज्ञमेंआएजे देवतातिनसूंबोल्यो ७ जोतुमप्रसन्नहुएहो जोसमर्थहोतोराजाकोदेहजिवाओ देवताबोलेत
थास्तु तवनिमिवोल्यो मोकोंदेहवंधनमतिहोउ ८ सवकोजोवियोगताकोंजोभयताकरकेंकातरजेलोकमेंयाहैं तेजोयोगताय
नहीवांछाकरेहैं हरिमेंहैवुद्धिजिनकीऐसेजेमुनि: तेमोहनकेलिये हरिकेचरणारविंदकोभजनकरेहे ९ दुःखशोकभयकोदेनवारो

शुक-हे राजन् कुशके अतिथि भयौ तातें निषध भयौ तातें नभ भयौ तातें पुंडरीक तातें क्षेमधन्वा भयौ तातें देवानीक तातें अनीह तातें
पारियात्र तातें बल तातें स्थल तातें वज्रनाभ सो सूर्यके अंशतें भयौ २ तातें खगण तातें विधृत भयौ तातें हिरण्यनाभ भयौ सो जैमिन
को शिष्य है योगको आचारी है ३ तातें कौशल देशमें भये जो याज्ञवल्क्य सो वडो हैं सिद्ध जामें हृदेकी गांठ छूटे ऐसो जो योग ताय प्रापित होत भये
हिरण्यनाभ को पुत्र पुष्य भयौ तातें ध्रुवसंधि भयौ तातें सुदर्शन तातें अग्निवर्ण तातें शीघ्र तातें मरु भयौ जो मरु तप योग करके सिद्ध कला
पग्राममें वैठो है कलियुगके अंत में नष्ट भयो जो सूर्यवंश ताय प्रवर्त्तन करेगो ६ तातें प्रसुश्रुत भयौ तातें संधि तातें अमर्षण तातें महस्वान् तातें वि

शुक उवाच: कुशस्य चातिथीस्तस्मान्निषधस्तत्सुतो नभः। पुंडरीकोऽथ तत्पुत्रः क्षेमधन्वाभवत्ततः॥१ देवानीकस्ततोऽनीहः पारियात्रोऽथ तत्सुतः।
ततो बलः स्थलस्तस्माद्वज्रनाभोऽर्कसंभवः। २ खगणस्तत्सुतस्तस्माद्विधृतीश्चाभवत्सुतः। ततो हिरण्यनाभोऽभूद्योगाचार्यस्तु जैमिनेः ३
शिष्यः कौशल्य आध्यात्मं याज्ञवल्क्योऽध्यगाद्यतः। योगं महोदयमृषिर्हृदयग्रंथिभेदकं ४ पुष्यो हिरण्यनाभस्य ध्रुवसंधिस्ततोऽभवत्। सुदर्शनो
तातें भानुमान — थाग्निवर्णः शीघ्रस्तस्य मरुः सुतः ५ योऽसावास्ते योगसिद्धः कलापग्राममास्थितः। कलेरंते सूर्यवंशं नष्टं भावयिता पुनः ६ तस्मा
तातें प्रतीक — त्प्रसुश्रुतस्तस्य संधिस्तस्याप्यमर्षणः। महस्वांस्तत्सुतस्तस्माद्विश्ववाहोऽभिजायत। ७ ततः प्रसेनजित्तस्मात्तक्षको भविता पुनः। ततो
बृहद्बलो यस्तु पित्रा ते समरे हतः। ८ एते हीक्ष्वाकुभूपाला अतीताः शृण्वनागतान्। बृहद्बलस्य भविता पुत्रो नाम्ना बृहद्रणः। ९ उरुक्रियस्त
स्य वत्सस्ततो वत्सवृद्धो भविष्यति। प्रतिव्योमस्ततो भानुर्दिवाको वाहिनीपतिः १० सहदेवस्ततो वीरो बृहदश्वोऽथ भानुमान्। प्रतीकाश्वो भानुमतः
सुप्रतीकोऽथ तत्सुतः। ११ भविता मरुदेवोऽथ सुनक्षत्रोऽथ पुष्करः। तस्यांतरिक्षस्तत्पुत्रः सुतपास्तदमित्रजित् १२ बृहद्राजस्तु तस्यापि बर्हि
स्तस्मात्कृतंजयः। रणंजयस्तस्य सुतः संजयो भविता ततः। १३ तस्माच्छाक्योऽथ शुद्धोदो लांगलस्तत्सुतः ततः प्रसेनजित्तस्मात्क्षुद्रको भवि
ता ततः। १४ रणको भविता तस्मात्सुरथस्तनयस्ततः। सुमित्रो नाम निष्ठांत एते बार्हद्बलान्वयाः। १५ विश्वबाहु होत भयो ७ तातें प्रसेनजित तातें तक्ष
क तातें पुत्र तातें बृहद्बलः जो बृहद्बल तेरो पिता ने संग्राम में मारो ८ ये इक्ष्वाकु वंशी राजा भये ९ और होइंगे तिनें सुन बृहद्बल को बे
टा बृहद्रण नाम होइगो ताके उरुक्रिय ताके वत्स ताके वत्सवृद्ध होइगो ताके प्रतिव्योम ताके भानु ताके दिवाक ताके वाहिनीपति १० ताके सहदेव ताके वीर
ताके बृहदश्व ताके सुप्रतीक ११ ताके मरुदेव ताके सुनक्षत्र ताके पुष्कर होइगो ताके अंतरीक्ष ताके वेटा सुतपा ताके अमित्रजित् १२ ताके बृहद्राज
ताके बरही ताके कृतंजय ताके रनंजय ताके संजय होइगो १३ ताके शाक्य ताके शुद्धोद ताके वेटा लांगल ताके प्रसेनजित् ताके क्षुद्रक होइगो १४

तामे मेयात स्याकं छोडकैं हं त मे मन नल गायकैं निर्द्वंदनिरहंकार होके भगवन के संग विचरतें हैं १९ जो विषय सो सुनो सो ऊठा हैं यह
जानिकें ध्यान करें भोगन करें यह संसार अपनो नाश करें हैं विद्वान हैं सो आत्मा मे हैं हृदय जाको प्रेम सो लोरे २० नउस कौं वैराग्य या तिरे
सो ऐसें स्त्री संकल हिकें पर कों जो वयना यपर लेग्रथी देके अपनी जरा अवस्था ताय ग्रहण करत भए गई हे चाह जिनकी २१ हे चतुर अ
हो राजा भरथ दिगा मेड ग्रह कों राज्य दीयों दक्षिण मे यदु कों दीयो उत्तर मे उरवसु को दीयो उत्तर मे अनु कं राज्य दीयो २२ और सगरे जो भू
मंडल मध्य ताकों राज्य पर कुं अवशेष करके ताके वडे भैयान कं ताहीकों वस करके आप वन को जात भयो २३ वहुत वर्षन ताई वि
षेन कों सेवन कीयो छे इन्द्रिन कों सुख ताय एक क्षण मे त्याग करत भयो भये हे पंख ताके ऐसो पक्षी ताजे से घोसु ध्याकं त्याग करें हे २४

तस्मादेतामहं त्यक्त्वा ब्रह्मण्यध्याय मानसं निर्द्वन्द्वो निरहंकारश्चरिष्यामि मृगैः सह १९ दृष्टं श्रुतमसद् बुद्ध्वा नानुध्यायेन्न संवि
शेत संसृतिं चात्मनाशं च तत्र विद्वान्स आत्मदृक् २० इत्युक्त्वा नाहुषो जायां तदीयं पूरवे वयः दत्त्वा स्वजरसं तस्मादाददे विगत
तस्पृहः २१ दिशि दक्षिणपूर्वस्यां द्रुह्युं दक्षिणतो यदुं प्रतीच्यां तुर्वसुं चक्र उदीच्यामनुमीश्वरं २२ भूमंडलस्य सर्वस्य पूरुमर्ह
त्तमं विदुः अभिषिच्याग्रजांस्तस्य वशे स्थाप्य वनं ययौ २३ आसेवितं वर्षपूगान् षड्वर्गं विषयेषु सः क्षणेन मुमुचे नीडं जा
तपक्ष इव द्विजः २४ स तत्र निर्मुक्तसमस्तसंग आत्मानुभूत्या विधुतत्रिलिंगः परेऽमले ब्रह्मणि वासुदेवे लेभे गतिं भागवतीं प्रती
तः २५ श्रुत्वा गाथां देवयानी मेने प्रस्तोभमात्मनः स्त्रीपुंसोः स्नेहवैक्लव्यात् परिहासमिवेरितं २६ सा संनिवासं सुहृदां प्रपायामिव
गच्छतां विज्ञायेश्वरतन्त्राणां मायाविरचितं प्रभोः २७ सर्वत्र संगमुत्सृज्य स्वप्नौपम्येन भार्गवी कृष्णे मनः समावेश्य व्यधुनोल्लि
गमात्मनः २८ नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे सर्वभूताधिवासाय शान्ताय बृहते नमः इतीएकोनविंशोऽध्यायः १९

छोडा हे सन स्तसंग जानें आत्मा के अनुभव करकैं निरस्त कीयो हैं त्रिगुणरूप लिंगदेह जानें विख्यात ऐसो यपाति सो निर्जल पर व
त्र वासुदेव तिन मे भागवती गति हो तम भये २५ देवयानी है सो पागायाकु सुनके अपनो प्रस्तोभ मानत भई स्त्री पुरुष कौ जो वैक्लव्य
ताते परिहास की सी नाई कह्यों हे २६ सो देवयानी ईश्वर के आधीन ते सुहृद तिनको निवास सो ईश्वर की माया कर के रच्यो है २७ जैसे प्रा
रमे चलें जात हैं तिनकों प्याऊ पे जैसें मिलाप होय हें तैसें जानु के स्वप्न की उपमा करके सव वांछित छोड के श्रीकृष्ण मे मन धरके अप
नेलिंग देह कों नाश करत भई २८ सो जो भगवान सर्वज्ञ सगरे भूतन मे रेवास जिनको शांतहूं अरूप वासुदेव तिनके अर्थ
नमस्कार हे २९ इती एकोनविंशो १९ वीस अध्याय मे पित्ता के मसाईने पायो है राज्य सन कौं वडो व भव जानें ऐसे सो जो भरत ताके वंश मे

टू॰ स्कू॰ ९ व्यक्तनयां वेद्मिहत्वांसु

भा॰न॰ ६० शुकदेवजी कहे हैं हे भरत वंस मैं भये राजा पुरु तिनको जो वंस ताय मैं कहूं हूं जामैं तुम भये हो जा वंस मैं राजऋषि न के वंस ब्राह्मण के वंस ते होत भये १ पुरु को बेटा जन्मेजय भयो ताके प्रचिन्वान भयो ताके प्रवीर भयो ताके मनस्यु भयो ताके चारुपद होत भयो २ ताके सुद्यु पुत्र भयो ताके संताप भयो ताके अहंकार भयो ताके रुद्रास्व भयो ३ ताके ऋतेयु कक्षेयु स्थंडलेयु कृतेयु जलेयु संततेयु धर्मेयु सत्येयु व्रतेयु छोटो वनेयु ४ ई दस पुत्र घृताची अपसरा मैं भये जैसे जगत के जो प्राण ताके दस इंद्री होहैं ५ ऋतेय के रंतभार भयो ताके सुमति ध्रुव प्रतीरथ तीन पुत्र भये प्रतीरथ को बेटा कण्व भयो ६ ताके मेधातिथि भयो ताते प्रस्कन्नादिक ब्राह्मण भये सुमति को बेटा रेभ भयो ताको बेटा दुस्यंत भयो ७ दुस्यंत है

शुक उवाच॥ पुरोर्वंशं प्रवक्ष्यामी यत्र जातोसि भारत: यत्र राजर्षयो वंश्या ब्रह्मवंश्याश्च जज्ञिरे १ जन्मेजयो ह्यभूत्पूरो: प्रचिन्वांस्तत्सुतस्तत: प्रवीरोथ मनुस्युर्वै तस्माच्चारुपदोभवत् २ तस्य सुद्युरभूत्पुत्र स्तस्माद्बहुगवस्तत: संयातिस्तस्याहंयाती रौद्राश्वस्तत्सुत स्मृत: ३ ऋतेयुस्तस्य कक्षेयु स्थंडलेयु कृतेयुकं जलेयु संनतेयुश्च धर्मसत्यव्रतेयव ४ दशैते प्सरस: पुत्रा वनेयुश्चावम: स्मृत: घृताच्यामिंद्रियाणीव मुख्यस्य जगदात्मना ५ ऋतेयो रंतिभारो भूत्त्रयस्तस्यात्मजा: नृप: सुमतीर्ध्रुवोप्रतिरथ: कण्वोप्रतिरथात्मजा ६ तस्य मेधातिथीस्तस्मात्प्रस्कण्वा द्याद्विजातय: पुत्रो भूत्सुमते रेभीर्दुष्यंतस्तत्सुतो मत: ७ दुष्यंतो मृगयां याते कण्वाश्रमपदं गता तत्रासीनां स्वप्रभया मंडयंतीं रमामिवा । विलोक्य सद्यो मुमुहे देवमायामिव स्त्रियं ८ बभाषे तां वरारोहां भटै कतिपयैर्वृता: तद्दर्शनप्रमुदित: संनिवृत्तपरिश्रम: ९ पप्रच्छ कामसंतप्त प्रहसन् श्लक्ष्णया गिरा का त्वं कमलपत्राक्षी कस्यासि हृदयंगमे १० किंवा चिकीर्षितं त्वत्र भवत्या निर्जने वने व्यक्तं रांसुमध्यमे ११ नहीं चेत पौरवाणामधर्मे

सो सिकार खेलवे कूं गयो सो कण्व के आश्रम मैं गयो तहां आश्रम कूं अपनी कांति कर के मंडित करे है लक्ष्मी की सी नाई ता स्त्री कूं देखकें तत्काल मोहित होत भयो जैसे देव माया देखके मोहित होहैं ८ राजा है सो श्रेष्ठ है जघन जाको ऐसी जो स्त्री ताय बोलत भयो कितनेक जे भट तिनकर के सहित ताके दर्शन कर के आनंदित भयो निवृत्त भयो है श्रम जाको ९ कामकर के तप्त राजा सो हसत सुंदर वाणी कर पूछत भयो ते कमलपत्राक्षी हे हृदय कूं आनंद देनवारी तू कोन है कौन की बेटी है १० कहा करवे की इच्छा है या निर्जन वन मैं रहै है हे सुंदर रहै के हिजा की निश्चय क्षत्री की बेटी है यह मैं जानतु पुरु के वंस मैं भये तिनको चित्त कबहु अधर्म मैं न रमै ११ तब सकुंतला बोली मैं विश्वामित्र की बेटी हूं मेनका अपसरा मैं भई हूं जब वह स्वर्ग कूं चली तब मोकूं इत डार गई या बात कों एक कण्व ऋषि जाने है हे वीर ते रो कहा प्रिय करूं १२ राम ६०

हेकमलनेत्र इहांवेठेहो हमारी प्रजाको ग्रहणाकरो वनकेअन्नमेरहेहैं जिनेभोजनकरो जोतुमेरुचेतो याराज्यहांरहो १३ दुष्यंतबो लेहेसुंदर २ हेमकुटीजाकीकुशलकेवणमेंनमालूमहीजोग्रहे राजानकीजेकन्या तेग्रपनेसमानजोवरतायग्रापहीवरेहें १४ ग्रवस्यमे वरूंगो ग्रेसोजेसोधर्महोइतैसेई गांधर्वविधिकरकेंशकुंतलाकूं व्याहनभयो राजादेसकालकोजो विधाननामजाने १५ सफलहेवी र्यजाको ग्रेसोजोराजऋषीरानीमेंवीर्यधारणाकरतभयो सवेरहीग्रपनेपुरकूंजातभयो सोशकुंतलासमयकरकेंपुत्रकूंउपजाव तभई १६ कणवहेसोवालककीजातकर्मादिकक्रियातिनेकरतभए सोवालकसिंघासनकूंवांधकें तिनकेंसंगवलकरकेंखेलतभयो १७

शकुंतलोवाच ॥ विश्वामित्रात्मजेवाहं सकामेनकथावने वेदेतदुग्यवांत्वयेवोवीर किंकरवामते ग्रास्यतांघरविराद्दुपग्र न्यतामर्हणंवनाः भुज्यतांसंतनीवाराउष्यतांयदिरोचते १३ दुष्यंतउवाच ॥ उपन्नमिदंसुभ्रुजातायाकुशकान्वये स्वयंहिव णतेराज्ञांकन्यकासदृशंवरं १४ उंमित्युक्तेयथाधर्ममुपयेमेशकुंतलां गांधर्वविधिनाराजादेशकालविधानवित् १५ ग्र मोघवीर्योराजर्षिमहिष्यांवीर्यमादधेश्वोभूतेस्वपुरंयातःकालेनासूतसासुतं १६ कणवकुर्वीतरस्यवनेचक्रेसमुचितक्रि याःवध्वामृगेंद्रांस्तरसाक्रीडतीस्मसवलवालकाः १७ तंदुरत्ययविक्रांतिमादायाप्सरसोत्तमाः हरेरंसांशसंभूतंभर्तरंमि कमागमत् १८ यदानत्रग्रहेराजाभार्यापुत्रावनिंदतौ शृण्वतांसर्वभूतानांखवाग्गाहाशरीरिणी १६ मातामस्त्रापितुःपुत्रो येनजातःसएवसाः भरस्वपुत्रंदुष्यंतमावमंस्थाशकुंतलां २० रेतोधाःपुत्रोनयतिनरदेवयमक्षयात् त्वंचास्यधातागर्भ स्यसत्यमाहशकुंतला २१ पितुर्युपरतेसोपिचक्रवर्तीमहायशाः महिमागीयतेतस्यहरेरंशचरेदुवि २२ श्रीनारायजी ॥

दुरत्ययहेंपराक्रमजाकोहरकोजो ग्रंशताकोग्रंशतातेंभयोजोपुत्रतायलेकें स्त्रीनमेंउत्तमजोशकुंतलासोभर्ताकेनिकटजा तभई १८ राजाहेसोनिर्दोखनहीं ग्रपनीस्त्रीग्रोरपुत्रतिनेंजवनहींग्रहणाकरतभयो तवजनतीहेसरीरजाको ग्रेसीग्राका शवाणीभई १६ माताहेसोग्राधारपात्रहें जाकरकेभयोसोइहै हेदुष्यंततेरोपुत्रहें याकोपालनकरशकुंतलाकीग्रवज्ञामति करें २१ वंशकोकरनवारोजोपुत्रसोयमकेलोकतेंपिताकूंतारेहैं तुम्हाकोपितारेगर्भकोधारनवारोहे शकुंतलासांचकहे हें २२ तवराजास्त्रीपुत्रनकोग्रहणाकरतभयो पिताकेमरेपीछेसोईवालकवडोजाकोजससोचक्रवर्तीभयो हरकेग्रंस

भा.न.
६१

राजाके दाहने हाथमे चक्रकों चिन्हहै पावजनेकमलकोचिन्हहैं सो महाभिषेक करैं कीयो सो नदा राजाधिराज भयो सो राजा
गंगापै पचपन ५५ अश्वमेधयज्ञन करके रजावरन भयो औरमामतेय जो ऋषि तिनें मोहित करके यमुनाके तीरपै अठत्तर ७८
यज्ञकेलीयें अश्व घोडा हे तिनें बाधत भयो वहुत जो धन ताय देत भयो दुष्यंतको बेटा राजा भरत ताको सुदर जो देसा अग्नि को
संचय होत भयो जा अग्नि संचयमे अथवा देशामे हजार जे ब्राह्मण तिने वडो दाता जो भरत ताने दीनी जे गऊ तिने एक एक ब्रा
ह्मण एक एक वद्ध ग्रहण करत भये वद्धको प्रमाण १३ तेह हजार एक सौ चौरासीको होहै २६ सो भरत नेतीससे घोडा यज्ञके लीयें बां

चक्रं दक्षिणहस्तेस्य पद्मकोसस्य पादयोः ईजे महाभिषेकेण सोभिषिक्तोधिराड्विभुः २४ पंचपंचाशता मेध्यैर्गंगा
यामनु वाजिभिः मामतेयं पुरोधाय यमुनामनु च प्रभुः २४ अष्टसप्ततिमेध्याश्वान्बबंध प्रददद्वसु भरतस्य हि दौ
ष्यंतेरग्निः साचीगुणे चिता २५ सहस्रं बद्वसो यस्मिन् ब्राह्मणा गा विभेजिरे त्रयस्त्रिंशत्छतं ह्यश्वान्बद्ध्वा विस्मापय
न्नृपान् २६ दौष्यंतीरत्यगान्मायां देवानां गुरुमाययौ मृगान्छुक्लदतः कृष्णान्हिरण्येन परिवृतान् २७ अदात्
कर्मणि मष्णारे नियुतानि चतुर्दश भरतस्य महत्कर्म न पूर्वे नापरे नृपा २८ नैवापुर्नैव प्राप्स्यंति बाहुभ्यां त्रिदिवं यथा कि
रातहूणान्यवनान्पौंड्रान्कंकान्खशांछकान् २९ अब्रह्मण्यान्नृपांश्चाहन्म्लेछान्दिग्विजये खिलान् जित्वा पुरा
सुरादेवान्ये रसौकांसि भेजिरे ३० देवस्त्रियो रसां नीताः प्राणिभिः पुनराहरत् ३१ सर्वकामान्दुदुहतुः प्रजानां तस्य रोदसी सम

धिकैं राजानि कूं प्राश्चर्य देत भयो देवतानको जो भैभव ताय अतिक्रमन करत भयो आनेयज्ञ जो हरि ताय प्राप्त होत भ
ये २७ सुपेद हैं दांत जिनके मृग कीसी है जाति जिनकी कारे सो नेकुर के अलंकृत औसे चौधे लाख राथी तिनै मष्णनाम जो दे
कर्म ताय देत भयो २८ भरतको वडो जो कर्म ताय पहले भऐ हैं राजा ते नही प्राप्त भये और आगे होयगे ते नही पामेगे जैसे हाथन
करके स्वर्गकूं कोई नही पावे और न पावेगे २९ किरात हूण म्लेछ कूं हूकं करवस मक्कू अब्रह्मण्य राजा और सब म्लेछ इनें दिग्वि
जैन में मारत भयो ३० महले देवतनको जीतकर के रसातल के भेजन भये वली जे दैत्य तिनने देवतानकी जे स्त्री तिनें रसातलमें
गये तिनें फेर राजा भरत लाय देत भये ३१ ताकी प्रजानकूं संपूर्ण जे कामना तिनें द्यावापृथ्वी पूरन करत भई सत्ताईस वर्ष ताई इनि

सोचक्रवर्त्ती भरतलोकपालहैं नामजाकौ ऐसेजोऐश्वर्य राजाधिराजकी संपत्य अखिल आज्ञा औरप्राण येसवकुंहैतें ऐसे
विचारकेउपरामकुंप्राप्तिभयो ३३ हेराजानाभरथकेंवंदभैदेप्रावेराजाकोवेटीअपनेसमनतीनस्त्रीहोतभई तेराजानेकही तुम्हारेपु
त्रमेरीउनहारकहीयहसुनिकें कहुंराजाधिभयारी कीसंजावरवैतमेत्यागकरेगो याभयतेंपुत्रहैतिनेमारनभई ३४ ताकोंवंसहथाभयो
तबपुत्रकेलीयेंमरुत्नसोमयज्ञकरकेंएजावरतभयो तबमरुतदेतेंभरद्वाजनामजोपुत्रतापदेतभए ३५ भरद्वाजकैसोभयो ताकीकथा
कहेहैं गर्भणीभैयाउतथ्यकीस्त्री तामेंचारीकरकेंमैथुनकरहकवहंभवजेभए जो वृहस्पतिसोगर्भमेंस्थितजोबालकताने मनेकीयो

ससम्राड्लोकपालाख्यमैश्वर्यमधिराड्घ्रितं चक्रंचास्खलितंप्राणान्मृषेत्युपरराम ह ३३ तस्यासन्नृपवैदर्भ्यः पत्न्यस्तिस्रः सु
संमताः जघ्नुस्त्यागभयात्पुत्रान्नानुरूपइतीरिते ३४ तस्यैवंवितथेवंशेतदर्थंयजतःसुतं मरुत्स्तोमेनमरुतोभरद्वाज
मुपाददुः ३५ अन्तर्वत्न्यांभ्रातृपत्न्यांमैथुनायबृहस्पतिः प्रवृत्तोवारितोगर्भंशप्त्वावीर्यमवासृजत् ३६ तंत्यक्तुकामांममतां
भर्तुस्त्यागविशंकितां नामनिर्वचनंतस्यश्लोकमेनंसुराजगुः ३७ मूढेभरद्वाजमिमंभरद्वाजंबृहस्पते यातौयदुक्त्वापितरौ
भरद्वाजस्ततस्त्वयं ३८ चोद्यमानासुरैरेवंमत्वावितथमात्मजं व्यसृजन्मरुतोबिभ्रन्दत्तोऽयंवितथेन्वये ३९
इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेपुरुवंशवर्णनेविंशोऽध्यायः २०

यसाद्दसरेकूंठोरनहीं तबक्रोधभए जोवृहस्पतिसोवालेकूंप्राधरोहें ऐसेसापदेवेंअपनोवीर्यराषतभए ३६ तबवृहस्पतिवोयी
थैराजीके प्रभावकरकेंवाहिरनिकस्यो सोस्त्रीभिमैगिस्यो तबतकालवालकहोइगयो तायछोडवेकीइछाकरैहैं भर्त्तीकेत्यागकरवेसं
कितहै ऐसीजोममतानाकेंवालककोनामजानमैंनिकरें ऐसोजोश्लोकनायगावतभए ३७ नतोपुत्रछोडिकैवलीजोममता तास्
वृहस्पतजीवोले हेमूढेयापुत्रकूंपोषणकरवेकोंदोकेंइमननतोनेभयोहै यातेंनारीकोपुत्रहै तबममतावोली हेवृहस्पति तुमही
याकोपालनकरो मातेंतोलेंअन्यायतेंभयोहै ऐसेंकहिकेंदोउछोडिकेंचलेगए यातेंयाकोनामभरद्वाजभयो ३८ देवतानेमेरे

भा०न० शुकदेवजी कहते हे राजन् इक्कीसवे अध्याय में दुस्यंत को बेटा जो भरथ ता को वंश कहत हैं जा वंश मे रंतदेव अजमीढादिक तिन की कीर्ति
४२ विस्तार ते वरनन करी यै हे १ वितथ को बेटा जो मन्यु ता ते वृहत्क्षत्र जय महावीर्य नर गर्ग ये पांच पुत्र होत भए १ हे पांडुपुत्र संकृत
के गुरु और रंतदेव ये होत भए रंतदेव को जो यश सो या लोक परलोक में गाइये हे २ आकाश मात्र है वित्त जाको जो जो मिले ताहि ताहि
देते आप भूखे रहे ते निष्किंचन है धीर हे कुटुंब सहित दुःख हि पावै हैं ता राजा कु अडतालीस दिन बिन जल पीये वितीत होत भए ३

श्लो० वितथस्य सुतान्मन्योर्बृहत्क्षत्रो जयस्ततः महावीर्यो नरो गर्गः संकृतिस्तु नरात्मजः १ गुरुश्च रंतिदेवश्च संकृते
पांडुनंदन रंतदेवस्य महिमा इहामुत्र च गीयते २ वियद्वित्तस्य ददतो लब्धं लब्धं बुभुक्षतः निःकिंचनस्य धीरस्य सकुटुंबस्य
सीदतः ३ व्यतीयुरष्टचत्वारिंशदहान्यपिबतः किल घृतपायससंयावं तोयं प्रातरुपस्थितं ४ कृच्छ्रप्राप्तकुटुंबस्य क्षुत
तृड्भ्यां जातवेपथोः अतिथिर्ब्राह्मणः काले भोक्तुकामस्य चागमत् ५ तस्मै संव्यभजत्सोन्नमादृत्य श्रद्धयान्वितः हरिं सर्वत्र
संपश्यन्स भुक्त्वा प्रययौ द्विजः ६ अथान्यो भोक्ष्यमाणस्य विभक्तस्य महीपते विभक्तं व्यभजत्तस्मै वृषलाय हरिं स्मरन् ७
याते शूद्रे तमन्योगादतिथिः श्वभिरावृतः राजन्मे दीयतामन्नं सगणाय बुभुक्षते ८

कष्ट कूं प्राप्ति हे कुटुंब जाको भूख प्यास करके कांपते हे तिन्हा कौं ता राजा कूं प्रातःकाल घीई खीर थूली जल भोजन कूं प्राप्त होत भयो
ता समें भोजन की इच्छा करे हे ता ही समे ब्राह्मण एक आवत भयो ४ सो राजा श्रद्धा करि भगवत आदर करके ता ब्राह्मण कू अर्ध अन्न दे
ताय देत भयो सर्वत्र हरि कूं देखत सो ब्राह्मण भोजन करके गयो ५ ता के पीछे भोजन की इच्छा करे हे कुटुंब के अर्थ अन्न आदिक कौ
भाग करे हे तब और के शूद्र अतिथि आवत भयो राजा ते सो बांट कीयो जो अन्न ताई शूद्र के अर्थ हरि को स्मरन करके देत भयो ६ शूद्र
के जात संते और स्वान सहित अतिथ कुत्तान करके सहित आवत भयो वाल्यो हे राजा कुत्तान करके सहित भूखो हों मैं ता के अर्थ अन्न दे ७

सोराजाव हलसन्मनसंवजीवों जो आन्नताय देकरकें कुत्तानके अर्थ कुत्तानकों जो पतिताके अर्थ नमस्कार करत भयो ८ राजा जासंतृप्त होई
इलनों पानीमात्र वाकीरह्यो ताय पीवेकी इछा करें तास समय एक चांडाल आवत भयो वोसो तेराजा प्यासो जो मैं ताके अर्थ जल देउ ९ ताकी करुणा
जो वाणी ताय सुनकें वहुतेश्रम होयतें सें कृपाकरकें संतप्त जो राजा सो अमृत सो वचन ताय कहत भयो १० ईश्वरतें मैं अणिमादिकसिद्धीन तीमा
उहुं और मोक्ष हूं ताय वी न चाहूं माँगुहुं तो कहा वांसूं हैं सबप्राणीन के देहधारीन को जो दुख ताय मो ताकूं पकारकें भीतर स्थित होइमें प्राप्त होंउ
जा मो करकें सगरे सुखी होइ ११ अथ प्यास श्रम सरीरकौ परिभ्रम दैन्य क्लम सोक खेद मोह ते सगरे कृपण जीविवेकी इछा करें ऐसो जो प्राणी ताकूं

मत्प्राणदन्ताः शिष्टं यद्बहुमानपुरस्कृतम् तच्च दत्वा नमश्चक्रे स्वभ्यः स्वपतये विभु ८ पानीयमात्रमुच्छेसंकल्पैकपरितर्पणं पास्यतः
पुल्कसोभ्यागाद्देहि शुभस्य मे ९ तस्य तां करुणां वाचं निशम्य विपुलश्रमं कृपया भृशसंतप्त इदमाहामृतं वच १० न कामयेहंग
तिमीश्वरात्परामष्टर्द्धियुक्तामपुनर्भवं वा आर्त्तिं प्रपद्येखिलदेहभाजामंतस्थितो येन भवंतिदुःखः ११ क्षुत्तृट्श्रमो गात्रपरिभ्रमश्च
दैन्यं क्लमः शोकविषादमोहा सर्वे निवृत्ताः कृपणस्य जंतोर्जिजीविषोर्जीवजलार्पणान्मे १२ एवं प्रभाष्य पानीयं म्रियमाणः पि
पासया पुल्कसायाददाद्धीरो निःसर्गकरुणो नृप १३ तस्य त्रिभुवनाधीसा फलदा फलमिछतां आत्मानं दर्शयाञ्चक्रु मायाविष्णु
विनिर्मिता १४ स वै तेभ्यो नमस्कृत्वा निःसंगो विगतस्पृहः वासुदेवे भगवती भक्त्या चक्रे मनः परं १५ ईश्वरालंवनं चित्तं कुर्वतोनन्य
राधसः मायागुणमयी राजन्स्वप्नवत्प्रत्यलीयतः १७

जीवनकेहेतु जलकों जो अर्पन ताते मेरे निवृत्ति होतभए १३ ऐसे कहकें प्यासके मारें व्याकुल हैं सुभाव करकें दयामान जो राजा सो चांडाल
के अर्थ जल देतभयो १४ त्रिलोकीके ईश्वर फलकौ जो इछा करें तिनकूं फल देनवारें ब्रह्मा विष्णु रुद्र ते अपने रूपकुं दिखावत भये विष्णु कीर
ची मायातें ऐसें मानत भये १५ सो राजा तिनके अर्थ नमस्कार करकें निःसंग निस्पृह तोकें भक्ति करिकें केवल वासुदेव सों हैं राजा स्वप्नवत्
सी नांई लीन होत भई १७ ताके प्रसंगकौ जो प्रभाव ताकरकें रंतदेवके जे अनुवर्ती ते सगरे जोगी नारायणके आश्रय जिनकूं ऐसे होत भए १८

भा. न. गर्गतें सीनी होत भयो सिनी तें गार्ग्य नाम ब्रह्मकुल प्रवर्त्त होत भयो १९ महावीर्य तें दुरतक्षय भयो तातें त्र्यारुणि कवि पुष्करारुणि ये तीन होत भए
४३ जे ब्राह्मण गति कूं प्राप्त भए ब्रहत्क्षत्र कौ पुत्र हस्ती भयो जानें हस्तनापुर कीयो २० अजमीढ द्विमीढ पुरुमीढ ये हस्ती के पुत्र होत भए अजमीढ
के वंश में भए प्रियमेध तें आदि लैके ते ब्राह्मण होत भए २१ अजमीढ तें और ब्रहदिषु नाम पुत्र होत भयो ताके पुत्र ब्रहद्धनु भयो ताकें ब्रहत्काय
भयो ताकें पुत्र जयद्रथ भयो २२ ताकौ पुत्र विशद भयो ताकें सेनजित भयो ताकें रुचिराश्व दृढहनु काश्य वत्स ये पुत्र भए २३ रुचिराश्व कौ पुत्र

तत्प्रसंगानुभावेन रंतिदेवानुवर्त्तिनः अभवन्योगिनः सर्वे नारायणपरायणाः १८ गर्गाच्छिनिस्ततो गार्ग्यः क्षत्राद्ब्रह्म ह्यवर्त्तत
दुरितक्षयो महावीर्यात्तस्य त्र्यारुणिः कविः १९ पुष्करारुणिरित्यत्र ये ब्राह्मणगतिं गताः ब्रहत्क्षत्रस्य पुत्रोभूद्धस्ती यद्धस्तिनापुरं २०
अजमीढो द्विमीढश्च पुरुमीढश्च हस्तिनः अजमीढस्य वंश्याः स्युः प्रियमेधादयो द्विजाः २१ अजमीढाद्ब्रहदिषुस्तस्य पुत्रो ब्रहद्धनुः
ब्रहत्कायस्ततस्तस्य पुत्र आसीज्जयद्रथः २२ तत्सुतो विशदस्तस्य सेनजित्समजायत रुचिराश्वो दृढहनुः काश्यो वत्सश्च तत्
सुताः २३ रुचिराश्वसुतः पारः पृथुसेनस्तदात्मजः पारस्य तनयो नीपस्तस्य पुत्रशतं त्वभूत् २४ स कृत्व्यां शुककन्यायां ब्रह्मदत्त
मजीजनत् स योगी गवि भार्यायां विष्वक्सेनमधात्सुतं २५ जैगीषव्योपदेशेन योगतंत्रं चकार ह उदक्सेनस्ततस्तस्मात्
भल्लाटो बार्हदीषवः २६ यवीनरो द्विमीढस्य कृतिमांस्तत्सुतः स्मृतः नाम्ना सत्यधृतिस्तस्य दृढनेमिः सुपार्श्वकृत् २७

पार भयो पार कौ पुत्र पृथुसेन भयो और पुत्र नीप भयो ताकें पुत्र सौ भए ये २४ सोई नीप शुक की कन्या कृत्वी तें ब्रह्मदत्त ई नाय उपजा
वत भए जो गी जो ब्रह्मदत्त सो सरस्वती जो भार्या तामें विष्वक्सेन नाम पुत्र उपजावत भयो २५ सोई जोगीस जैगीषव्य कौ उपदेश
ता करिकें योगतंत्र ई नाय करत भयो ताकौ पुत्र उदक्सेन भयो तातें भल्लाट होत भयो ये ब्रहदिषु के वंश में भये २६ द्विमीढ कौ बेटा
यवीनर होत भयो ताकें कृतमान भयो ताके सत्यधृत भयो ताके दृढनेम भयो ताके सुपार्श्व भयो २७

ताते सुमति भयो ताके सनतमान भयो ताते कृती भयो जो कृती हिरण्यनाभ ते योग पाईके प्राचीसामवेद की षट संहिता पढत भयो ता को वेटा नीप भयो ताके उग्रायुध भयो २८ ताके क्षेम भयो ताके सुवीर ताके रिपुंजय ताके वहुरथ होत भयो पुरमीढ के पुत्र न भयो २९ अजमीढ की स्त्री नलनी ता में नील भयो ता कौ शांत भयो ३० शांत के सुशांत भयो ता को पुत्र पुरज भयो ताके अर्क भयो भर्म्याश्व के वेटा चमुदगल ते आदि लेके भये पवीनर वृहद विश्वकाम पिल्य संजय ए भये ३१ भर्म्याश्व ने सो पुत्र न सकहत भयो मेरे विषयन के रक्षा करवे में समर्थ होउं ये पुत्र देशन के पांचन के पालवे में समर्थ हैं या ते उनको विराजा मुद्गल ता ते मेथुन होत भयो दिवोदास

सुपार्श्वात्सुमतिस्तस्य पुत्रः सन्नतिमांस्ततः। कृती हिरण्यनाभाद्यो योगं प्राप्य जगौ स्म षट् २८ संहिता प्राच्यसाम्नां वै नीपो ह्युग्रायुधस्ततः। तस्य क्षेम्यः सुवीरोऽथ सुवीरस्य रिपुंजयः २९ ततो बहुरथो नाम पुरुमीढोऽप्रजोऽभवत्। नलिन्यामजमीढस्य नीलः शान्तिस्तु तत्सुतः ... पञ्चासन्मुद्गलादयः ३१ यवीनरो बृहदिषुः काम्पिल्यः संजयः सुताः। भर्म्याश्वः प्राह पुत्रा मे पञ्चानां रक्षणाय हि ३२ विषयाणामलमिमे इति पञ्चालसंज्ञिताः। मुद्गलाद्ब्रह्मनिर्वृत्तं गोत्रं मौद्गल्यसंज्ञितम् ३३ मिथुनं मुद्गलाद्भार्म्याद्दिवोदासः पुमानभूत्। अहल्या कन्यका यस्यां शतानन्दस्तु गौतमात् ३४ तस्य सत्यधृतिः पुत्रो धनुर्वेदविशारदः। शरद्वांस्तत्सुतो यस्मादुर्वशीदर्शनात्किल ३५ शरस्तम्बेऽपतद्रेतो मिथुनं तदभूच्छुभम्। तद्दृष्ट्वा कृपयागृह्णाच्छान्तनुर्मृगयां चरन्। कृपः कुमारः कन्या च द्रोणपत्न्यभवत्

नाम पुत्र भयो अहल्या कन्या भई जा में गोतम के पुत्र सतानंद होत भयो ताके सत्यधृत भयो सो धनुषविद्या में पारंगत भयो ता को वेटा सरद्वान भयो जा ते उर्वसी के दर्शन के रेत वीर्य है सो सरकंडन के समूह में गिरत भयो ता मे एक मिथुन होत भयो ३५ संतन जो सो सिकार खेलन वन में ता मिथुन को देख कें कृपा करकें ग्रहण करत भयो ता में वालक है सो कृपाचार्य भये कन्या है सो द्रोन की स्त्री कृपी भई इती श्री नवमें एकविंशोऽध्यायः २१ अव वाईसा की अध्याय में दिवोदास को वंश कहिके रिक्षु के वंश में जरासिंधु युधिष्ठरादिक दुर्योधनादिक तिनके वंस वरणन करे हैं १ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजा दि

वोदासतैं मित्रायु होत भयौं ताकौ पुत्र च्यवन भयौं ताके सुदास भयौं ताके सहदेव ताके सोमक ताके जंतु भयौं १ ताके सौ पुत्र भये तिनमें
छोटौ प्रसत भयौ प्रसत के द्रुपद भयौ ताके द्रौपदी कन्या भई धृष्टद्युम्नादिक पुत्र भये २ धृष्टद्युम्न के धृष्टकेतु भयौं भर्म्याश्व के वंश के
कहैं ये पंचाल के राजा भये ३ जो अजमीढ कौ बेटा रिक्ष कह्यौ ताके संवरन भयौं ताकि सूर्य की कन्या तपती तामें कुरुक्षेत्र के पति कुरु
भये ४ कुरु के परीक्षित सुधनु जन्हु निसध ये होत भये सुधनु के सुहोत्र भयौ ताकै च्यवन भयौ ताके कृती भयौं ताके उपरिचर नाम वसु
भये ताके वृहद्रथ जिनमें मुख्य ऐसे कुसांब मत्स प्रत्यग्र चेदिप ये पुत्र भये ताके कृती भयौ ५ ताके उपरिचरि नाम वसु भयौं ताके वृ

श्रीशुक उवाच: मित्रायुश्च दिवोदासात्च्यवनस्तत्सुतो नृपा सुदासास्सहदेवोथ सोमकौ जंतुजन्मकृत्: १ तस्य पुत्र श
तं तेषां यवीयान्पृषतस्सुता द्रुपदो द्रौपदी तस्य धृष्टद्युम्नादयासुता: २ धृष्टद्युम्नात धृष्टकेतुर्भार्म्या पंचालका इमे:
योजमेढसुतेह्यन्या: रिक्षासंवरणा: स्ततः ३ तपत्यां सूर्यकन्यायां कुरुक्षेत्रपति: कुरु: परीक्षनुसुधनुर्जन्हुनिषध:
श्चकुरोसुता: ४ सुहोत्रोभूत्सुधनुषश्च्यवनोथततः कृतीवसुस्तस्योपरिचरो वृहद्रथमुखास्ततः: ५ कुशांबम
त्स्यप्रत्यग्रचेदिपाद्याश्चेदिपा वृहद्रथात्कुशाग्रोभूतऋषभस्तस्यतत्सुता ६ जज्ञे सत्याहितोपत्यं पुष्पवांस्तत्सु
तोजहु अन्यस्यामपि भार्यायां सकले द्वे वृहद्रथात् ७ ते मात्रा बहिरुत्सृष्टे जरया चाभिसंधिते जीवजीवेति क्रीडंत्या
जरासंधोभवत्सुत: ८ ततश्च सहदेवोभूत्सोमापीयच्छ्रुतश्रवा परीक्षिदनपत्योभूत्सुरथो नाम जान्हवा: ९

हद्रथ भयौ वृहद्रथ के कुशाग्र भयौं ताके ऋषभ भयौं ताकौ पुत्र सत्याहित भयौं ताके पुष्पवान भयौं ताकौ बेटा जहु भयौं
और जो एक स्त्री में तामें द्वै वृहद्रथ तें बालक की २ फांक होत भई तें ७ तें माता ने बाहर डार दीनी जरा जो राक्षसी ताने मिलाई
जीव जीव ऐसे क्रीडा करत भयौं तब जी परौ सो जरासंध नाम पुत्र होत भयौं ताके सहदेव भयौ ताके सोमापी नाम पुत्र भयौं
ताके श्रुतश्रवा नाम पुत्र भयौ परीक्षित सो अपुत्र भयौ जन्हु कौ बेटा सुरथ नाम होत भयौं ९ श्रीरामजी सहाय नमः ।।

तातें विदूरथ भयो तातें सार्वभौम भयो ताको बेटा जैसेन भयो ताके राधिक भयो तातें अयुतायु भयो १० तातें क्रोधन भयो तातें देवातिथ भयो ताके ऋक्ष ताके डलीप ताकैं प्रतीप भयो ११ प्रतीप कें देवापि संतनु वाल्हीक ये तीन भए देवापि है सो पिता को राज्य छोडि कें वन मैं गयो १२ तब संतन राजा होत भयो संतनु पहलो जन्म मैं महाभिषक है नाम जाको ऐसो जो होत भयो आजा कूं कर कैं छीवे है परंतु योवन होजाय औ अच्छो सांतताय प्राप्ति होय ताकर कें संतनु नाम होत भयो १३ तिन कें राज्य मैं बारै वर्ष इंद्र न वरस्यो तव ब्राह्मणनें संतनु सु कही तुम बडे भैया कें रहित राज्य भोग करो हौ तातें पुर देश वाढवे कें लीयै वडे कूं राज्य देउ १४ ब्राह्मणनें

ततो विदूरथस्तस्मात्सार्वभौमस्ततो ऽभवत् जयसेनस्तत्तनयो राधिकोऽतो ऽयुतो ह्यभूत् १० ततश्चाक्रोधनस्तस्माद्देवातिथिरमुष्य च: ऋक्षस्तस्य दिलीयोऽभूत्प्रतीपस्तस्य चात्मजः ११ देवापिः शंतनुस्तस्य वाल्हीक इति चात्मजाः पितृराज्यं परित्यज्य देवापिस्तु वनं गतः १२ अभवच्छंतनू राजा प्राङ्महाभिषसंज्ञितः यं यं कराभ्यां स्पृशति जीर्णं यौवनमेष्यती १३ शांतिमाप्नोति चैवाग्र्यां कर्मणा तेन संतनुः समा द्वादश तद्राज्ये न ववर्ष यदा विभुः १४ शंतनुर्ब्राह्मणैरुक्तः परिवेत्तायमग्रभुक् राज्यं देह्यग्रजायाशु पुरराष्ट्रविवृद्धये १५ एवमुक्तो द्विजैर्ज्येष्ठं छंदयामास सोऽब्रवीत् तन्मंत्रिप्रहितैर्विप्रैर्वेदाद्विभ्रंशितो गिरा: १६ वेदवादातिवादान्वै तदा देवो ववर्ष ह: देवापिर्योगमास्थाय कलापग्राममास्थितः सोमवंशे कलौ नष्टे

ऐसे कहै जो संतनु सो वन मैं जाय कें राजा कों प्रजा पालिवो वडो धर्म है ऐसे राज्य कूं स्वीकार करो ऐसे प्रार्थना करी तातें पहलें ही संतनु के मंत्री पठाए जे ब्राह्मण तिनैं पाखंड मत कूं आश्रै जो वाणी ताकरकें देवापि कूं पतित कर कें राज्य के योग न कीयो वे द को निंदक कीयो तब संतनु को राज्य गयो इंद्र नें वर्षा कीनी देवापि है सो योग मैं स्थित होकें कलापग्राम मैं वसत भए कलयुग मैं चंद्रवंश नष्ट हो ओर सतयुग की आदि मैं फिर वंश चलावेगो १७ वाल्हीक तैं सोमदत्त भयो तातें भूरिश्रवा शल जे होत भये संतनु के गंगा मैं ज्ञानवान् भीष्म होत भए सव धर्म के वेत्तान मैं श्रेष्ठ है महाभागवत है कवी है वीरकें जे रथ तिन मैं श्रेष्ठ है जिनें युद्ध

मैपरसरामकूंप्रसन्नकीये: सांतनकेंदासकंन्यामैं चित्रांगदपुत्रभयो छोटोविचित्रवीर्य्यहोतभयो चित्रांगदहै सो चित्रांगदनामजो
गंधर्वतानेमारयो २० जासत्यवतीमें साक्षातहरिकीकला वेदकेरक्षक मुनक्रिष्णजिनकोनाम ऐसेव्यासहोतभये जिनतेमै
भयोहूं सोयहश्रीभागवतपढतभयो २१ भगवानजोव्यास सोअपनेसिष्यजेपैलादिक तिनेछोडकेमेजोसांतपुत्र ताकेअर्थ
परमगोप्ययहश्रीभागवततायगावतभये २२ स्वयंवरमैभीष्मजीनेवलतेहरी कासीकेराजाकीवेटी अंविका अंवालका
दोऊ तिनेविचित्रवीर्यसोव्याहतभयो २३ तिनमेंआसक्तहृदयहैजाको षईरोगनेग्रस्योनाईरोगकरकेमरयो २३ अपुत्रजोभै

वाल्हीकात्सोमदत्तोभूद्भूरिर्भूरिश्रवास्ततः शलश्चशांतनोरासीद्गंगायांभीष्मआत्मवान् १९ सर्वधर्मविदांश्रेष्ठोमहा
भागवतःकवि १९ वीरयूथाग्रणीर्येनरामोपियुधितोषितः संतनोर्दासकंन्यायांजज्ञेचित्रांगदःसुतः २० विचित्रवीर्यः
श्चावरजोनाम्नाचित्रांगदोहतः यस्यांपराशरात्साक्षादवतीर्णोहरेःकला २१ वेदगुप्तोमुनिःकृष्णोयतोहमिदमध्यगां हित्वा
स्वशिष्यान्पैलादीन्भगवान्वादरायणः २२ मह्यंपुत्रायशांतायपरंगुह्यमिदंजगौ विचित्रवीर्योथोवाहकाशीराजसुतेवलात् २३
स्वयंवरादुपानीतेअंविकांवालिके उभे तयोरासक्तहृदयोगृहीतोयक्ष्मणामृतः २४ क्षेत्रेप्रजस्यवैभ्रातुर्मात्रोक्तोवादरा
यणः धृतराष्ट्रंचपांडुंचविदुरंचाप्यजीजनत् २५ गांधार्यांधृतराष्ट्रस्यजज्ञेपुत्रशतंनृप तत्रदुर्योधनोज्येष्ठोदुःशलाचापि
कंन्यका २६ शापान्मैथुनरुद्धस्यपांडोःकुंत्यांमहारथा जाताधर्मानिलेंद्रेभ्योयुधिष्ठिरमुखास्त्रयः २७ नकुलसहदेवश्चमा
द्र्यांनासत्यदस्रयोः द्रौपद्यांपंचपंचभ्यःपुत्रास्तेपितरोभवन् २८ युधिष्ठिरात्प्रतिविंध्यःश्रुतसेनोवृकोदरात् अर्जुनाच्छ्रुतकीर्तिस्तु

भ्राताकेक्षेत्रमेंमाताने आज्ञादीयेव्यासदेवजीसोधृतराष्ट्रपांडुविदुरईनेउपजावतभये २४ धृतराष्ट्रकेगांधारीसूं पुत्रहोतभये तिनमे
दुर्योधनवडोभयो दुःशलाकंन्याभई २५ वनमेमृगकेपासतेमैथुनतेरुक्योऐसोजोपांडताकीस्त्रीजोकुंतीतामेधर्मपवनइंद्रइनतेयु
धिष्ठिरजिनमेमुख्यऐसेतीनपुत्रहोतभये माद्रीमेअश्विनीकुमारतेनकुलसहदेवहोतभये २६ पांचोजेयुधिष्ठिरादिकतिनतेद्रोपदीमें
पांचपुत्रहोतभयेतेरेपितरहोतभये २७ युधिष्ठिरतेप्रतिविंध्यभयोभीमसेंनतेश्रुतसेनभयो अर्जुनतेश्रुतकीर्तिभयो नकुलतेशतानी
॥ कभयोसहदेवकोवटाश्रुतिकर्माभयो २९ ॥ २९ ॥ २८

ऐसीही पांचौनकी ओरई स्त्री हैं तिन मे भये युधिष्ठर ने ओरवी मैं देवक भयो भीमसैन ने हिडंवा मैं घटोत्कच भयो २९ भीमसेन नै काली
मे सर्वगत भयो सहदेव ने सुहोत्र होत भयो सो पार्वती की वेटी विजया सो उपजावत भई ३१ करेणुमती मैं नकुल ने नरमि
त्र नाय उपजावत भयः ऐसे ही अर्जुन है सो उलूपी मैं एरावंत नाय उपजावत भयो तैसे ई मनिपुरपति की वेटी तामैं बभ्रुवाहन व भ्रु
वाहन नाय उपजावत भयो सो बभ्रुवान अर्जुन को वेटा है परंतु नानाने गोद लीयो पाते मनिपुरपति को पुत्र कहायो तेरो पति
अभिमन्यु सुभद्रा मे होत भयो ३३ सो सगरे अतीरथीन को जीतन वारो भयो वीर भयो ताते उत्तरा मैं तुम भये कौरवन को क्ष
सहदेवसुतो राजन् श्रुतकर्मा तथापरे युधिष्ठिरात्तु पौरव्यां देवकोऽथ घटोत्कचः २९ भीमसेनाद्धिडंवायां काल्यां सर्वगत
स्ततः सहदेवात्सुहोत्रं तु विजयासूत पार्वती ३० करेणुमत्यां नकुलो नरमित्रं तथार्जुनः इरावंतमुलुप्यां वै सुतायां बभ्रुवा
हनं मणिपुरपतेः सोपि तत्पुत्रः पुत्रिकासुतः ३२ तव तातः सुभद्रायामभिमन्युरजायत सर्वातिरथजिद्वीर उत्तरायां ततो
भवान् ३३ परीक्षीणेषु कुरुषु द्रौणेर्ब्रह्मास्त्रतेजसा त्वं च कृष्णानुभावेन सजीवो मोचितोंतकात् ३४ तवेमे तनयास्ता
त जनमेजयपूर्वकाः श्रुतसेनो भीमसेन उग्रसेनश्च वीर्यवान् ३५ जनमेजयस्त्वां विदित्वा तक्षकान्निधनं ग
तं सर्पान्वै सर्पयागाग्नौ स होष्यति रुषान्वितः ३६ कावषेयं पुरोधाय तुरं तुरगमेधयाट् समंतात्पृथ्वीं सर्वां जित्वा य
क्ष्यति चाध्वरैः ३७ तस्य पुत्रः शतानीको याज्ञवल्क्यात्त्रयीं पठन् अस्त्रज्ञानं क्रियाज्ञानं सौनकात्परमेष्यति ३८ सहस्रानीक
भये सो ते अस्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र तेज करकै कृष्ण के प्रभाव करकै जीव सहित मृत्यु तें तुम छुटे हे तात तेरे ये पुत्र है
जनमेजय जिनमे जनमेजय जिनमे बडो श्रुतसेन पराक्रमी उग्रसैन जनमेजय तेरो तक्षक ते मृत्यु भई ३६ यह तुमैं सुनि
कै क्रोधयुक्त सर्पजज्ञ की जो अग्नि तामे सर्पहै तिने होम करेंगो ३७ कवस के वेटा भरि जाको नाम ताय प्रोहित करकै
सब पृथ्वी जीत के यज्ञन करकै यजन करैंगो अस्वमेध यज्ञ करेंगो ३८ ताको शतानीक होयगो सो याज्ञवल्क्य ते तीनो
वेद पढेंगो अस्त्रज्ञान क्रियाज्ञान तिने सौनक ते प्राप्त होयगो ताको वेटा सहस्रानीक होयगो ताके अस्वमेधज होयगो ३९

५८ [illegible]

ताके प्रसोमसुत होयगो ताके नेमिचक्र होइगो गंगा करके हस्तिनापुर हरेगो तब कोसीकीपुरी ता मैं वसेगो ५० ताते चित्ररथ होयगो ताते कविरथ होयगो ताते वृष्णिमान ताके सुखसेन ताके सुनीथ राजा होयगो ५१ ताके निरचक्षु ताके सुखीनल ताके पुत्र परिप्लव होयगो ताके सुनय ताके मेधावी ताके नृपंजय ताके दुर्व ताते तिमि होयगो तिमि के बृहद्रथ सुदास ताके सुतानीक ५३ ताके दुर्दमन ताको बेटा वहीनर ताके दंडपाणि ताके निमि ताके सेमक होयगो ५४ ब्रह्मक्षत्र को यह वंश ताको देव ऋषिलोसत्कार कीयो सेमक जो राजा ता पाप के कालियुग मैं समाप्ति होयगो ५५ याके अनंतर है वृहद्रथ मगध के वंस के राजा तिनि नें रेमध्यकारु

प्रसीमक स्ततस्यापि नेमिचक्रः सुतस्ततः गजाह्वये हृते नद्या कौशाम्ब्यां साधु वत्स्यति ४९ उक्तस्ततश्चित्ररथस्तस्माच्छुचिरथः सुतः ५० तस्माच्च वृष्टिमांस्तस्य सुषेणोथ महीपतिः सुनीथस्तस्य भविता नृचक्षुर्यत्सुखीनलः ५२ परिप्लवः सुतस्तस्मान्मेधावी सुनयात्मजः नृपंजयस्ततो दूर्वस्तिमिस्तस्माज्जनिष्यति ५३ तिमेर्बृहद्रथस्तस्माच्छतानीकः सुदासजः शतानीकात् दुर्दमनस्तस्यापत्यं वहीनरः ५४ दंडपाणिर्निमिस्तस्य क्षेमको भवितान्नृपः ब्रह्मक्षत्रस्य वै प्रोक्तो वंशो देवर्षिसत्कृतः ५५ क्षेमकं प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ अथ मागधराजानो भाविनो ये वदामि ते ५६ भविता सहदेवस्य मार्जारिर्यच्छ्रुतश्रवाः ततो युतायुस्तस्यापि निरमित्रोथ तत्सुतः ५७ सुनक्षत्रः सुनक्षत्राद्बृहत्सेनोथ कर्मजित् ततः सुतंजयाद्विप्रः शुचिस्तस्य भविष्यति ५८ क्षेमोथ सुव्रतस्तस्माद्धर्मसूत्रः शमस्ततः द्युमत्सेनोथ सुमतिः सुबलो जनिता ततः ५९ सुनीथः सत्यजिदथ विश्वजिद्यद्रिपुंजयः बार्हद्रथाश्च भूपाला भा

व्यंहंसहदेव के मार्जारि होयगो ताके श्रुतश्रवा होयगो ५६ ताके अयुतायु ताके निरमित्र ताके सुनक्षत्र ताके बृहत्सेन ताके कर्मजित ५७ ताके सुतंजय ताके विप्र ताके शुचि ताके क्षेम ताके सुव्रत ताके धर्मसूत्र ताके सम होयगो ५८ ताके द्युमत्सेन ताके सुमति ताके सुबल ताके सुनीथ ताके सत्यजित ताके विश्वजित ताके रिपुंजय ५९ ये वृहद्रथ के वंश के राजा करें हजार बर्ष में [illegible] ता रहे ६० इति नवमे द्वाविंशो अध्यायः २२ नेई सके अध्याय में अनु द्रुह्यु तुर्वसु [illegible] को जो वंश [illegible] यदुको जो वंश ताय कहन लागे धुकी उसपरे नायक [illegible] एक को वंश ताकरी अब चौथे को वंश ताय [illegible] कहे देव जी के अनु के सभानर चक्षु परेस ये तीन पुत्र भये सभानर ते कालनर भयो ताको पुत्र सृंजय भयो ताके जनमेजय २ सो कि महाशाल ताके महामन भयो

उसीनर तितिक्षु ये महामनु के पुत्र भये। शिव वर क्रमी दक्ष ये चार उसीनर के पुत्र भये २ वृषादर्भ सुवीर मद्र केकय ये चार
शिव के बेटा भये तितिक्षु के रुसद्रथ भयो ताते होम भयो ताके सुतपा भयो सुतपा के बलि भयो ३ अंग वंग कलिंग इनते आदि लैके
सुह्म पुंड्र उड्र ये हैं संज्ञा जिनकी ऐसे जे राजा ते बलि के क्षेत्र मैं दीर्घतमा ते उत्पन्न भये ४ एते मैं ते राजा अपने अपने नाम के छह देश
तिनैं करत भये ५ अंग ते खनपान ताते दिविरथ ताके बेटा धर्मरथ भयो ताके चित्ररथ भयो सो संतान रहित भयो सो राजा रोमपा
द है ऐसे विख्यात भयो ताको दशरथ सखा सो अपनी कन्या जो सांता ता को देत भयो ताको ऋष्यशृंग ब्याहत भये इंद्र के न

शुक उवाच: अनोः सभानरश्चक्षुः परेष्णुश्च त्रयः सुताः सभानरात्कालनरः सृंजयस्तत्सुतस्ततः १ जनमेजयस्तस्य पुत्रो महाशा
लो महामनाः उसीनरस्तितिक्षुश्च महामनस आत्मजौ २ शिविर्वरः कृमिर्दक्षश्चत्वारोसीनरात्मजाः वृषादर्भः सुवीरश्च मद्र
केकय आत्मजाः शिवेश्चत्वार एवासंस्तितिक्षोश्च रुषद्रथः ३ ततो होमोथ सुतपा बलिः सुतपसोभवत् अंगवंगकलिंगा
द्याः सुह्मपुंड्रोड्रसंज्ञिकाः ४ जज्ञिरे दीर्घतमसो बलेः क्षेत्रे महीक्षितः चक्रुः स्वनाम्ना विषयान् षडिमान्प्राच्यकांश्च ते ५ ख
नपानोंगतो जज्ञे तस्माद्दिविरथस्ततः सुतो धर्मरथो यस्य जज्ञे चित्ररथोऽप्रजाः ६ रोमपाद इति ख्यातस्तस्मै दशरथः सखा
शांतां स्वकन्यां प्रायच्छदृष्यशृंग उवाह यां ७ देवेऽवर्षति यं रामा आनिन्युर्हरिणीसुतं नाट्यसंगीतवादित्रैर्विभ्रमालिंगनार्हणैः
स तु राज्ञोऽनपत्यस्य निरूप्येष्टिं मरुत्वते प्रजामदाद्दशरथो येन लेभेऽप्रजाः प्रजाः चतुरंगो रोमपादात्पृथुलाक्षस्तु तत्सुतः
बृहद्रथो बृहत्कर्मा बृहद्भानुश्च तत्सुताः १० आद्याद्बृहन्मनास्तस्माज्जयद्रथ उदाहृतः विजयस्तस्य संभूत्यां ततो धृति
र्ततो धृतव्रतस्तस्य सत्कर्माधिरथस्ततः यो सौ गंगातटे क्रीडन्मंजूषांतर्गतं शिशुं कुंत्यापविद्धं कानीनमनपत्यो
करोत्सुतं ११ तातें अनावृष्टि भई। सो संगीत
वर्षते हिरनी के बेटा जो शृंगी ऋषि ताय स्त्री हैं ते मीत्र संगीत वादित्र विभ्रम आलिंगन पूजन इनकरिकै लावत भई सो शृंगी ऋ
षि अपुत्र जो राजा ताकुं इंद्र की इष्टि करिकै पुत्र देत भये जाकरिकै अपुत्र जो दशरथ सो पुत्र रहित सो पुत्रवान भयो रोमपाद ते चतुरंग
भयो ताके पृथुलाक्ष भयो १० ताके बृहद्रथ बृहत्कर्मा बृहद्भानु ये पुत्र भये बृहद्रथ के बृहन्मना भयो ताके जयद्रथ भयो ताके
विजय ताके संभूति मैं धृत भयो ताके धृतव्रत भयो ताके सत्कर्मा ताके अधिरथ भयो जो अधिरथ गंगातीर मैं क्रीडा करते
सो सिंदूक के भीतर बालक ताय देखत भयो कुंती ने त्याग कीयो कन्या अवस्था में भयो है ताय अपुत्र जे अधिरथ सो पुत्र करत भयो १२

भा०न०
६७

ताकरके वृषसेन भयौ द्रुह्युकै वभ्रु होत भयौ ताकै सेतु भयौ ताकेरब्ध भयौ ताके गांधार भयौ ताकै धर्म ताके घृत ताके
दुर्मद भयौ ताके प्रचेता प्रचेताके पुत्र ते म्लेछान भये सो उत्तर दिसामें वसत भये तुर्वसको वेटा वन्ही भयो ताके भार्ग भयो ताके
भानमान ताके त्रभान ताको करंधम उदार है बुद्धि जाकी १९ ताको मरुत भयो पुरुके वंशमें दुष्यंत भयौ ताके राज्य की कामना तें
मैं सो अपनो जो वंश ताय प्राप्त भयो पतिको ज्येष्ठ पुत्र ताको वंश ताय मैं वर्णन करूं हूं हे नरश्रेष्ठ जो वंश मनुष्यन के पापनकू
हरे है बडो पुन्यमान है मनुष्य है सो यदुको जो वंश ताय सुनके सब रे पापन करके मुक्त है सो छुटजाइ ताके वंसमें भगवान परमात्मा

वृषसेन सुतस्तस्य कर्णस्य जगतीपते द्रुह्योश्च तनयो वभ्रुसेतुस्तस्यात्मजास्तता आरब्धस्तस्य गांधारस्तस्य धर्मस्ततो धृ
ते १४ धृतस्य दुर्मदस्तस्मात्प्रचेताः प्राचेतसं म्लेछाधिपतियो भवन् उदीचीं दिशिमाश्रिता १५ तुर्वसोश्च सुतो वह्निर्भार्गो थ भानु
मान् त्रिभानुः तत्सुतोस्यपि करंधम उदारधी १६ मरुतस्तत्सुतो पुत्रः पुत्रं पौरवमन्वभूत् दुष्यंतः सपुनर्भेजे स्ववंशं राज्य
मुकं १७ ययातेर्ज्येष्ठपुत्रस्य यदोर्वंशं नरर्षभः वर्णयामि महापुण्यं सर्वपापहरं नृणां १८ यदोर्वंसं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते:
यत्रावतीर्णो भगवान्परमात्मा नराकृति १९ यदोः सहस्रजित्क्रोष्टा नलो रिपुरिति श्रुता चत्वारस्सूनवस्तत्र शतजित्प्रथमात्म
जा २० महाहयो वेणुहयो हैहयश्चेति तत्सुता धर्मस्तु हैहय सुतो नेत्रः कुंते पिताततः २१ सोहंजिरभवत्कुंतेः महिमान भद्र
सेनका दुर्मदो भद्रसेनस्य धनक कृतवीर्यसू: २२ कृताग्नि कृतिवर्मा च कृतौजा धनकात्मजा: अर्जुन कृतवीर्यस्य
सप्तद्वीपेश्वरो भवत् दत्तात्रेयाद्धरेरंस्यात् प्राप्तयोगमहागुणा: २४ ननूनं कार्तिवीर्यस्य गतिं यास्यंति पार्थिवा यज्ञदान तपो
योगै श्रुतिवीर्य्याजयादिभि २५ पंचाशीतिसहस्त्राणि ह्यव्याहतवल: समा॥ २५॥ २५॥ २५॥ २५॥ २५॥ २५॥ २५॥

रहत सो अवतार लेत भये यदुके सहस्रजित क्रोष्टा । अनल । रिपु ये चार वेटा भये २० तिनमें सहस्त्रजितको वेटा सतजित भयो
ताके महाहय भयौ और वेनुहय हैहय ये होत भये हैहयको वेटा धर्म भयौ ताकै नेत्र भयौ ताकै कुंत ताकै सोहंजी ताकै महिष्मान ताके भद्र
सेन २२ ताके दुर्मद ताके धनक भयो । कृतवीर्य । कृताग्नि । कृतवर्मा । कृतोजा ये धनक के वेटा भये २३ कृतवीर्यको अर्जुन •
सो सात द्वीपनको पति भयौ हरको अंश जो दत्तात्रेय ताते पाये योग महागुण जाने २४ कृतवीर्यको वेटा जो अर्जुन ताकी ग
ति राजा है ते यज्ञ दान तप योग श्रुति वीर्य्य जयादिक ई न करके नहीं प्राप्त होंगे: २५ नहीं नष्ट है वल जाको विनजाको न प्रकार को है स्मर

ताके हजार पुत्र भए तिनमें संग्राममें ते पांच बचे जयध्वज सूरसेन वृषभ मधु अपराजित ये पांच भए २७ जयध्वजतें तालजंघ भयो ताके सो
पुत्र भए तालजंघ है नाम जाको ऐसो जो क्षत्री कुल सो और्व की रीस तेज सों जरके सगरने संहार कीये २८ तिनमें बडो वीतहोत ताके मधु भ
यो ताके वृष्णी भयो ताके सौ पुत्र भए तिनमें वृष्णी जेठो भयो जाते यह कुल चल्यो हे राजा ते माधव वृष्णी यादव ये है संज्ञा जो नकी ऐसे तो
न भए २९ यदु को पुत्र जो क्रोष्टा ताके वृजिनवान् होत भयो ताके स्वाहित ताके विषद्गु ताके चित्ररथ ताके शशिबिंदु सो बडो योगी ताके महा
भोज होत भयो ताके स्वाहित चौदह रत्न जाके चक्रवर्ती सब को जीतन वारो भयो ताके दस हजार स्त्री भई ३२ तिनमें दस लाख हजार

अन्यवित्तस्मरणो बचजे सप्यषड्रुस्तु तस्य पुत्र सहस्रेषु पंचैवोर्वरिता मृधे जयध्वजः शूरसेनो वृषभो मधुरूर्जिता: २७ जयध्व
जस्तालजंघात स्य पुत्र शतं त्वभूत क्षत्रं तत्तालजंघाख्यमौर्वतेजोपसंहृतं २८ तेषां ज्येष्ठो वीतहोत्रो वृष्णि पुत्रो मधोः स्मृत: तस्य पुत्र
शतं त्वासीद्वृष्णिज्येष्ठं यत: कुलं २९ माधवा वृष्णयो राजन्यादवाश्चेति संज्ञिता यदुपुत्रस्य च क्रोष्टोः पुत्रो वृजिनवांस्ततः ३०
स्वाहितस्ततो विषद्रो कुर्वै तस्य चित्ररथस्तता: शशिबिंदुर्महायोगी महाभोजो महानभूत ३१ चतुर्दश महारत्न: चक्रवर्त्यपराजिता:
तस्य पत्नि सहस्राणां दशानां सुमहायशा: ३२ दसलक्ष सहस्राणि पुत्राणां तास्वजीजनत्र तेषां तु षट् प्रधानानां पृथुश्रवस आ
त्मजा: ३३ धर्मो नामोशना तस्य हयमेध शतस्य याट तत्सुतो रुचकस्तस्य पंचासन्नात्मजा: शृणु ३४ पुरुजित रुक्म रुक्मेषु पृथु
ज्यामघ संज्ञिता ज्यामघस्त्वप्रजोप्यन्यां भार्यां शैब्यापतिर्भयात् नाविंदत्शत्रुभवनात् भोज्यां कन्यामहारषीत ३५ रथसंस्थां निरीक्ष्याह
सैब्या पतिममर्षिता केयं कुहक मत्स्थानं रथमारोपितेति वै ३६

बेटा भये तिनमें छ उत्तम भये ३३ तिनमें प्रसिद्ध को वाके धर्म नाम
पुत्र भयो ताके सो अश्वमेध यज्ञ करनवारे रुचक भए ताके बेटा रुचिक भयो ताके पांच भए तिनके सुन्यो ३४ पुरजित रुक्म रुक्मेस पृथु ज्यामघ
ये हैं नाम जिनके जो मघ है सो अपुत्र सैब्या को पति है सो रानी के भय तें और भार्या ना करती ऐसो भयो ३५ एक दिना बैरी मारी सो वाके घरतें भा
ग्यानाम कन्या ताय हरत भयो रथमें बेठी जो कन्या ताय देखके क्रोध करके पति सों बोली हे कपटी परस्त्रीन है मेरे बेठवे को रथ तामे बेठाइहे ३६

भा॰न॰ जवमघवो त्यों यहतें रे वेटा कौ वहहैं तव से व्यहसि कैं वोली मैं वांऊ मेरें सो तिनहीं जानौं वेटा होई यह वेटा कौ वहू है से संभव है ३७ जवम
४८ घवो त्यों है रानी जा पुत्र कूं तू उपजावैंगी ताकी यह वहू होगी ऐसें स्त्री के भय के मारे कांपे है ऐसें राजा कौ ऐसो जो राजा ताकौं प्राणसंकट दे
खिकें पहलें प्रजा कीये विश्वेदेवा पितर तें राजा नें पुत्र होइ ऐसें अनुमोदन करत भए ३८ सो व्या गर्भ कौं धारण करत भई समय में पुत्र
६ उपजायो सो विदर्भ नाम कह्यौ सो वा भोज्या कूं व्याहत भयौ सो वधू व धू भई ३९ इति नवमे त्रयोविंशोऽध्यायः २३ चौवीसवें अध्याय में विदर्भ
के तिन पुत्र होत भए तिनकें नाना प्रकार के जे वंश ते राम कृष्ण कौं जो जन्म तहांताईं वर्णन करें हैं १ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् विदर्भ हें सो

स्नुषा तवेत्यभिहिते स्मयंती पतिमब्रवीत् अहं वंध्यासपत्नी च स्नुषा मे युज्यते कथं ३७ जनयिष्यसि यं राज्ञि तस्येयमुपयुज्यते :
अन्वमोदंत तद्विश्वेदेवाः पितर एव च : ३८ सा व्याग गर्भमधात् काले कुमारं सुषुवे शुभं स विदर्भ इति प्रोक्त उपयेमे स्नुषां
सतीं ३९ इति श्री भागवते नवम॰ यदुवंशानुकथने नाम त्रयोविंशोध्यायाः २३ श्रीशुक उवाच । तस्यां विदर्भोऽजनयत् पुत्रौ
नाम्ना कुशक्रथौ तृतीयं रोमपादं च विदर्भकुलनंदनं १ रोमपादसुतो बभ्रुः बभ्रोः कृतिरजायत : उशिकस्तत्सुतस्तस्मा
च्चैदिश्चैद्यादयो नृपा २ क्रथस्य कुंतिः पुत्रोऽभूत् धृष्टिस्तस्याथ निर्वृतिः ततो दशार्हो नामाभूत् तस्य व्योमः सुतस्ततः ३ जीमू
तो विकृतिस्तस्य यस्य भीमरथः सुतः ततो नवरथः पुत्रो जातो दशरथस्ततः ४ करंभिः शकुनेः पुत्रो देवरातस्तदात्मजः
देवक्षत्रस्ततस्तस्य मधुः कुरुवशादनुः ५ पुत्रो होत्रस्तनो पुत्र पुत्रस्तस्यायु सात्वतः भजमानो भजिर्दिव्यो वृष्णिर्देवावृधोंऽधकः ७

भोज्या मैं कुश क्रथ और रुद्र ये दो पुत्र हैं तिनै उपजावत भयो तीसरो रोमपाद भयो सो विदर्भ कुल कूं आनंद देन वारो भयो १ रोमपाद कौ वभ्रु भयो
वभ्रु कें कृत भयो ताकें उसीक भयो ताकें चेदीप भयो ताकें दमघोषादिक राजा भए २ क्रत कें कुंत भयो ताकें धृष्टी भयो ताकें निवृती भयो :
ताकें दशार्ह नाम पुत्र भयो ताकें व्योम भयो ताकें जीमूत भयो ताकें विकृत भयो ताकें भीमरथ भयो ३ ताकें नवरथ भयो ताकें दशरथ भ
यो ताकें सकुन भयो ताकें करंभीय भयो ताकें देवरात भयो ताकें देवक्षत्र भयो ताकें मधु ताकें कुरु ताकें अनु भयो ४ अनु कें पुरुहुत्र
होत भयो ताकें आयु ताकें सात्विक ताकें भजमान भज दिव्य वृष्णी देवावृध अंधक और महाभोज ये सात पुत्र भए ५ भजमान कें निम्लोची :
वसु

भयो किंकन धष्ठ ये पेमई स्त्री में भए दूसरी मे सतजित सहस्राजित अयुतजित ये तीन भये ६ देवावृद्धकौ बेटा बभ्रु भयो तिन दोनों
के ये श्लोक गाये हैं ७ जैसें दूरि तें सुनतु हैं तैसें निकट में देखें हैं बभ्रु है सो मनुष्यन में श्रेष्ठ है देवावृद्ध है सो देवतान के समान है ८
पांच साठि छै हजार आठ इतने पुरुष बभ्रु तें देववृद्ध तें मोक्ष तें ताप प्राप्ति भये ९ धर्मात्मा जो महाभोज ता के वंस मे भोज नाम होत
न भयो १० वृष्णी को बेटा सुमित्र भयो ता के युधाजित भयो देवैरी न के नाश करन वारे राजा ता के सिनी भयो ता के अनमित्र भयो ता

सात्वतस्य सुताः सप्त महाभोजस्य मारिष। भजमानस्य निम्लोचिः किंकणो धृष्टिरेव च। ८ एकस्यामात्मजाः पत्न्याः अन्य
स्यां च त्रयः सुताः शताजिच्च सहस्राजिदयुताजिदिति प्रभो ६ बभ्रुर्देवावृधस्तस्य तयोः श्लोकौ पठन्त्यमू यथैव शृणुमो दूरा
त्संपश्यामस्तथान्तिकात् १० बभ्रुः श्रेष्ठो मनुष्याणां देवैर्देवावृधः समः पुरुषाः पंचषष्टिश्च षट्सहस्राणि चाष्ट च। ११ येमृ
तत्वमनुप्राप्ता बभ्रोर्देवावृधादपि महाभोजो ऽतिधर्मात्मा भोजा आसंस्तदन्वये १२ वृष्णेः सुमित्रः पुत्रोऽभूद्युधाजिच्च परंतप।
शिनिस्तस्यानमित्रश्च निघ्नोऽभूदनमित्रतः। १२ सत्राजितः प्रसेनश्च निघ्नस्याथासतुः सुतौ। अनमित्रसुतो योऽन्यः शिनिस्त
स्य च सत्यकः। १३ युयुधानः सात्यकिर्वै जयस्तस्य कुणिस्ततः। युगंधरोऽनमित्रस्य वृष्णिः पुत्रोऽपरस्ततः। १४ श्वफल्कश्चित्ररथश्च
गांदिन्यां तु श्वफल्कतः। अक्रूरप्रमुखा आसन्पुत्रा द्वादश विश्रुताः १५ आसंगः सारमेयश्च मृदुरो मृदुविद्गिरिः। धर्मवृद्धः
सुकर्मा च क्षेत्रोपेक्षोऽरिमर्दनः। १६ शत्रुघ्नो गंधमादश्च प्रतिबाहुश्च द्वादश। तेषां स्वसा सुचाराख्या द्वावक्रूरसुतावपि ७ देववानुपदे
वश्च तथा चित्ररथात्मजाः। पृथुर्विदूरथाद्याश्च बहवो वृष्णिनंदनाः १८ कुकुरो भजमानश्च शुचिः कंबलबर्हिषः। कुकुरस्य सुतो वह्नी

निघ्न के सत्राजित प्रसेन भए अनमित्र को बेटा और सिनि भयो ता के सत्यक भयो १२ सत्यक कौ बेटा युयुधान ता के जय ता के कुनि
ता के युगंधर अनमित्र को बेटा और वृष्णी नाम भयो ता के स्वफल्क चित्ररथ ये भए स्वफल्क तें गांदिनी में अक्रूर आदिक ऐसे
विख्यात बारह पुत्र होत भए १३ तिन के नाम कहै हैं आसंग सारमेय मृदुर मृदुविद गिरि धर्मवृद्ध सुकर्मा क्षेत्रोपेक्ष अरिमर्दन १४ शत्रुघ्न
गंधमाद प्रतिबाहु ये बारह भए तिन की बहिन सुचारा भई और दोय अक्रूर के बेटा भए १५ देववान उपदेव ये भए पृथु विदूरथ इनतें आदि
लै कें चित्ररथ के बेटा भए औसें बहुत वृष्णी के पुत्र होत भये १८ कुकुर भजमान शुचि कंबलबर्हिष ये भए कुकुर को पुत्र वह्नि भयो

भा. न. ताके कपोतरोमा भयो ताके अनु भयो जाको तुंवरनाम गंधर्व सखा होत भयो अंधक ते दुंदुभी भयो ताके अरिद्योत भयो ताके पुनर्वसु भयो
४९ ताके आहुक आहुकी कन्या भई आहुक के देवक उग्रसेन ये भये २ देवक के देववान् उपदेव सुदेव देववर्द्धन ये चार देवक के पुत्र भये २१
तिन के सात बहिन भई धृतदेवा शांतिदेवा उपदेवा श्रीदेवा देवरक्षिता सहदेवा देवकी ते वसुदेव जी व्याही २२ उग्रसेन के ये दास
सुनामा न्यग्रोध कंक संकु सुहु ते सेती राष्ट्रपाल सृष्टि तुष्टिमान ये उग्रसेन के बेटा भए २४ कंसा कंसवती कंका सूरभू राष्ट्रपालिका ये उ
ग्रसेन के बेटी भई ते वसुदेव के छोटे भैयान की स्त्री भई २५ भजमान के विदूरथ भयो ताके सूर भयो ताके सिनी ताके स्वयंभोज ताके हृदीक

कपोतरोमा तस्यानु सखा यस्य च तुंवरुः अंधकाद् दुंदुभिस्तस्मादरिद्योतः पुनर्वसु २० तस्याहुकश्चाहुकी च कन्या चैवाहुकात्मजौ देवक
श्चोग्रसेनश्च चत्वारो देवकात्मजाः २१ देववानुपदेवश्च सुदेवो देववर्द्धन तेषां स्वसारः सप्तासन् धृतदेवादयो नृप शांतिदेवोपदेवा च
श्रीदेवा देवरक्षिता सहदेवा देवकी च वसुदेव उवाह ताः २२ कंसः सुनामा न्यग्रोधः कंकः शंकु सुहूस्तथा राष्ट्रपालोऽथ सृष्टिश्च तुष्टिमा
नौग्रसेनयः २४ कंसा कंसवती कंका सूरभू राष्ट्रपालिका उग्रसेनदुहितरो वसुदेवानुजस्त्रियः २५ सूरो विदूरथादासीत् भजमा
नस्तु तत्सुतः शिनिस्तस्मात् स्वयं भोजो हृदीकस्तत्सुतो मतः २६ देवबाहुः शतधनुः कृतवर्मेति तत्सुताः देवमीढस्य सूरस्य मारि
षा नाम पत्न्यभूत् २७ तस्यां स जनयामास दश पुत्रानकल्मषान् वसुदेवं देवभागं देवश्रवसमानकं २८ संजयं श्यामकं कंकं शमीकं
वत्सकं वृकं देवदुंदुभयो नेदुरानका यस्य जन्मनि २९ वसुदेवं हरेः स्थानं वदंत्यानकदुंदुभिं पृथा च श्रुतदेवा च श्रुतकीर्तिः श्रुत
श्रवाः ३० राजाधिदेवी चैतेषां भगिन्यः पंच कन्यका कुंतेः सख्युः पिता सूरो ह्यपुत्रस्य पृथामदात् ३१ साप दुर्वाससो विद्यां देवहूतिं प्रतोषितात्

भयो ताके देवबाहु भयो सतधनु कृतवर्मा भयो ताके देवमीढ भयो ताके सूर भयो तिनकी मारिसा नाम स्त्री भई २७ तामें निस्पाप दस पुत्र भए
वसुदेव देवभाग देवश्रव आनक संजय स्यामक कंक समीक वत्सक वृक ये भए २८ जब वसुदेव को जन्म भयो तब देवतान ने नगारे ढोल बजाये
वसुदेव हरि के स्थान हैं याते इनको नाम आनकदुंदुभि कहत हैं पृथा श्रुतदेवा श्रुतकीर्ति श्रुतश्रवा राजाधिदेवी ये पांच कन्या वसुदेव की व
हिन की बहिन भई पिता को सूर सो अपुत्र अपने सखा कुंत ताकूं पृथा दे ताय दत्त भयो ३१ सा पृथा दुर्वासा ते देवतान के बुलाइवे की विद्या
ताय प्राप्ति भई कैसे दुर्वासा ते सेवा कर के प्रसन्न कीये हैं ता विद्या की परीक्षा लेवे को लीये पवित्र होइ के सूर्य ते ताय बुलावत भई ३२

ताई समय आय गए जे सूर्य तिनाय देख के विस्मित है मन जाकौं ऐसी जो कुंती सो बोली मैंने विद्या की परीक्षा लेवे के लीयें विद्याप्रयोग कीनी ही :
तुम तें कछु काम नहीं अपने स्थान कूं जाऔ और मेरे अपराध कूं क्षमा करो ३३ सूर्य बोले देवतान को दर्शन सफल है तो मैं पुत्र तेरे ताय धारण करेंगें
न वा ली में के नाहूं नहीं कहे हैं जैसें योनि दूषित न होइ तैसें करूंगो ३४ ऐसे वचन कहि सूर्य सो तामें गर्भ धरकें स्वर्ग कूं जात भयो तत्काल बालक भयो :
दूसरो जानो सूर्य है ३५ सो कुंती लोकापवाद तें डरपी वा बालक कूं सिंदूक में धरकें नदी में बहावत भई सत्य है पराक्रम जाको ऐसो पांडु
ता कुंती कूं ब्याहत भयो ३६ करूष देश को राजा वृद्धशर्मा सो श्रुतदेवा तेनाय ब्याहत भयो जामें दंतवक्त्र होत भयो पहिले जन्म में ऋषीन्ने साप

ततो देवो पागतं देवं वीक्ष्य विस्मितमानसा प्रत्ययार्थं प्रयुक्ता मे याहि मेव क्षमस्व मे ३३ अमोघं दर्शनं देवी आधास्ये त्वयि चात्मजः यो
निर्यथा न दुष्येत कर्त्ताहं ते सुमध्यमे ३४ इति तस्यां स आधाय गर्भं सूर्यो दिवं गतः सद्यः कुमारः संजज्ञे द्वितीय इव भास्करः ३५
तं सात्यजन्नदीतोये कृच्छ्राल्लोकस्य बिभ्यती प्रपितामहस्तामुवाह पांडुर्वै सत्यविक्रमः ३६ श्रुतदेवां तु कारूषो वृद्धशर्मा समग्र
हीत् यस्यामभूद्दंतवक्त्र ऋषिशप्तो दितेः सुतः ३७ कैकेयो धृष्टकेतुश्च श्रुतकीर्तिमविंदत संतर्दनादयस्तस्यां पंचासन् कैके
यसुता ३८ राजाधिदेव्यामावंत्यौ जयसेनोऽजनिष्ट ह दमघोषश्चेदिराजा श्रुतश्रवसमग्रहीत् ३९ शिशुपालः सुतस्तस्याः
कथितस्तस्य संभवः देवभागस्य कंसायां चित्रकेतुबृहद्बलौ ४० कंसवत्यां देवश्रवसः सुवीर इषुमांस्तथा कंकायामानकात्तजा
नौ सत्यजित्पुरुजित्तथा ४१ सृंजयो राष्ट्रपाल्यां च वृषदुर्मर्षणादिकान् हरिकेशहिरण्याक्षौ शूरभूम्यां च श्यामकः ४२

दीयो सो दिति को बेटा भयो ३७ केकय देश को राजा धृष्टकेतु सो श्रुतिकीर्ति ताय प्राप्त भयो ताके संतर्दन ते आदि लेके पांच पुत्र भये ३८
उज्जैन के राजा विंद अनुविंद तिनने राजाधिदेवी में जैसेन ते सो उपजावत भयो ३९ चंदेरी को राजा दमघोष सो श्रुतिश्रवा तेनाय ग्र
हण करत भयो ताके बेटा सिसुपाल भयो ताको जन्म पहिले कह आये देवभाग की कंसा इस्त्री तामें चित्रकेत बृहद्बल भये ४० देव
श्रवा के कंसवती में सुवीर इषुमान ये २ भये कंक ने कंका में बक सत्यजित पुरुजित ये ३ भये ४१ सृंजय ते सो राष्ट्रपाली में वृषदुर्म
र्षणादिक तिनने उपजावत भयो श्यामक ते सो सूरभूमि में हरिकेश हिरण्याक्ष ते उपजावत भयो ४२ मत्स कहे तें मिश्रकेसी अपसरा में

भा०न ५०

सामीवहैंसदामिनीते सो सुमित्र अर्जुन पालदि तिनैं उपजावत भई गो वषते सो कृर्णी नामें रिन धाम जय इनैं उपजावत भई ४४ पोर
वीरोहिणी भद्रा मदिरा रोचनी इला और देवकी ते आदि लैकें वासुदेवजी की स्त्री होत भई ४५ वलदेव औ गद सारन दुर्मद विपुल ध्रुव कृत
इनते आदि लैके वादर रोहणी के पुत्र भये ४६ सुभद्र भद्रवाह दुर्मद भद्र ये पोरव्या के पुत्र भये नंदा घाघा सभए ४७ नंद उपनंद कृतक स
र इनते आदि लैकें महारावेपुरुनाय उपजावत भए ४८ हस्त के माग द इनते आदि लैकें रोचना मे होत भए दइ जिनमे मुख्य उरवंश
लते आदि लैके तेइला मे होत भए ४८ आनकदुंदुभी जो वसुदेव तातें धृतदेवा में विपृष्ठ नाम राजपुत्र होत भयो देवाजक प्रमुख इन ते

मित्रके स्यामसर सिंदूजा दीन वत्सरस्तथा तस्य पुत्रारि प्राल्वा दीन दूवी ह्यां रकआद्ये ४३ सुमित्रार्जुन वाणा दीन सम्मी भांजुतस्त
मिनी कंकष्ष कार्णिजा थांवे ऋत धाम जयावपि ४४ पोरवी रोहिणी भद्रा मदिरा रोचिना ईला देवकी प्रमुखा आसन् पुत्र्यानकदुं
दुंदुभी ४५ वलगद प्रार णंच दुर्मद विपुल ध्रुवं वसुदेवस्तु रोहिण्यां कृतादीन उपादयत ४६ सुभद्रो भद्रवाहश्च दुर्मदो भद्रएव च
पोरव्यास्तनयास्येते भूताघाघासभवन् ४७ नंदोपनंद कृतक सुराद्या मदिरात्मजाः कौसल्या केशिनं त्वेक मसूत कुलनंदनं ५०
रोचनायाततोजाते हस्त हेमांगदादयः इला या मुरुवल्का दीन् यदुमुख्यान जीजनत ४८ विपृष्ठो धृतदेवायामेकआनकदुंदुभेः प्र
तिदेवात्मजाः शांतिप्रमुखानि सुतादया ५० राजनामल्पवर्षाद्याः उपदेवासुतादसा वसुहंसस्तु वसाधाश्री देवा पोल्लषट्सुतान ५१ दे
वलक्षत्रपालप्रानव पुत्रा गदादया वसुदेवस्तु तान षावादधे सहदेव पुत्तवि र, नकुल्यांश्च सा मोदमी वसुमिव वसुदेवस्य देवकी
मष्ठपुत्रानजीजनत ५३ कीर्तिमंत सुषेणं च भद्रसेनमुदारधी ऋजुं सम दैनं भद्रसंकर्षणं महीश्वरं १४ अष्टम स्यतयोरासी स्वयमेवाहरि

आदि लैकें सांतदेवा कै पुत्र भए ५० वाल्पवर्षते आदि लैकैं जे राजा ते दस उपदेवा के पुत्र भए वसुहंस सुवेसा इनते आदि ले कैं छै पुत्र
श्रीदेवा के भये ५१ गदते आदि लैके दै देवरक्षता के भए ५२ वासुदेव हैं सो नृपसहदेवा कैं पेत्व पुत्र ये जिनमें मुख्य आठ तिनैं उपजा
वत भए जे संघ मे हैं सो सा सात वसुनक उपजावत भयो ५३ वसुदेव हैं सो देवकी में आठ पुत्र उपजावत भयो कीर्तिमान सुषेन
भद्रसेन रितु संमर्दन और संकर्षन ते ईश्वर से नर श्रेष्ट भये ५४ जिनके आठये स्वयं हरि आप ही भिक्षप करने पुत्र होत भए हे राजन तेरी सही

जासमें धर्मकौ नाश होतु हैं पापकी वृद्धि होय है तब भगवान् ईश्वर हरि सो आत्मा है ताय प्रगट करै है ५६ पृथ्वी के पति राजा है या आत्मा जो पर मेश्वर ताकूं जन्म कर्म नाहीं जो आत्मरूप सो अपनी माया बिना नाहीं है ५७ जाकी माया की जो चेष्टा सो पुरुष के उत्पत्ति स्थिति नाश के अर्थ है भगवान् को जो अनुग्रह सो माया के प्रवृत्ति निवृत्ति के लीये और मोक्ष के लीये होत है ५८ अक्षोहनीन के पति राजान कों है चिन्ह जिनके ऐसे जे असुर तिन करि के दबी ऐसी जो पृथ्वी ताके भार दूर करवे के लीये कीयो है उद्यम जाने ऐसो जो भगवान् मधुसूदन सो बलदेव सहित देवन के ईश्वर तिन करि के मन करि के उनमन न कर सकै ऐसे जे कर्म तिन्हें करे हैं ५९ कलि युग में होइंगे जे लोग तिनके दुःख सोक तम इनकों नाश

यदा यदा हि धर्मस्य क्षयो वृद्धिश्च पाप्मनः तदा तु भगवानीश आत्मानं सृजते हरि: ५६ न ह्यस्य जन्मनो हेतुः कर्मणो वा महीपते आत्ममायां विनेशस्य परस्य द्रष्टुरात्मनः ५७ यन्मायाचेष्टितं पुंसः स्थित्युत्पत्त्यप्ययाय हि अनुग्रहस्तन्निवृत्तेरा त्मलाभाय चेष्यते ५८ अक्षौहिणीनां पतिभिरसुरैर्नृपलाञ्छनैः भुव आक्रम्यमाणाया अभाराय कृतोद्यमः ५८ कर्माण्य परमेयानि मनसापि सुरेश्वरैः सहसंकर्षणश्चक्रे भगवान्मधुसूदनः ६० कलौ जनिष्यमाणानां दुःखशोकतमोनुदं अनुग्रहाय भक्तानां सुपुण्यं व्यतनोद्यशः ६१ यस्मिन्सत्कर्णपीयूषे यशस्तीर्थवरे सकृत् श्रोत्राञ्जलिरुपस्पृश्य धुनुते कर्म वासनां ६२ भोजवृष्ण्यन्धकमधुशूरसेनदशार्हकैः श्लाघितेहः श्लाघितेहा दारैर्वा वोविक्रमलीलया नृलोकं रमयामास मूर्त्यासर्वाङ्गरम्यया ६४

करनवारी अतिपवित्र अपनो जस सुनाय भक्तन पे अनुग्रह करवे के लीये विस्तार करत भये ६० सो भक्तन के कानन कूं अमृत तुल्य यश रूप जो तीर्थ श्रेष्ठ तामे कौन सोई भई अंजली पीवेके दोना साधन सो तिन्हें ऐसो जो पुरुष सो एकवेर हू आचमन मात्र करके कर्म वासना नाश करत है ६१ भोज वृष्णी अंधक मधु सूरसेन दसार्ह इनकरिके श्लाघा करवे जोग्य है लीला जिनकी कुरु संजय पांडु इनकरि के गाई है लीला जिनकी ऐसे जो श्रीकृष्ण सो स्नेह युक्त मुसिक्यान लीला एवं देषिन मनन तारस्यों उदार ऐसे जे वच नपेरा क्रम लीला इन करि कें सब अंगन करकें सुंदर ऐसी जो मूर्ति ता करकें मनुष्यलोक देता यर मावत भए ६३

मकराकृत जे कुंडल तिन कर के सुंदर प्रकाशित जे कपोल तिन कर के सुंदर विलास कर के सहित नित्य है
उत्सव जा में ऐसो जो श्रीकृष्ण को मुख ता पर नेत्रन कर पीवत नर नारीन महोत्सव भयो और परम आनं
द कूं प्राप्त भये पलकन को लगिवो देखि के राजा निमि पै क्रोध करत भये ६५ निज रूप कर प्रगट भये हैं
ता पीछे पुरुष बालक से होके व्रज में गये व्रजवासीन को वध सो अर्थ जिन्ने बहुत कीये हैं और जिन्ने
वैरी जे कंसादिक तिन्ने मारि के स्त्रीन में से कहान पुत्र उपजाय के अपनो वेदमार्ग लाय लोकन में ऊ विस्ता

यस्याननं मकरकुंडलचारुकर्णभ्राजत्कपोलसुभगं सविलासहासम् नित्योत्सवं न ततृपु
र्दृशिभिः पिबंत्यो नार्यो नराश्च मुदिताः कुपिता निमेश्च ६५ जातो गतः पितृगृहाद्व्रजमेधितार्थो
हत्वा रिपून्सुतशतानि कृतोरुदारः उत्पाद्य तेषु पुरुषः क्रतुभिः समीजे आत्मानमात्मनिगम
न्प्रथयञ्जनेषु ६६ पृथ्व्याः स वै गुरुभरं क्षपयन्कुरूणामन्तःसमुत्थकलिना युधि भूपचम्वः
दृष्ट्या विधूय विजये जयमुद्विघोष्य प्रोच्योद्धवाय च परं समगात्स्वधाम ६७ इति श्रीभागवते न
॥ वमस्कंधे चतुर्विंशोऽध्यायः २४ श्रीरस्तु मंगलं चास्तु ॥

ए कर तु यज्ञन करि कें अपनी आप पूजा करत भये ६६ और व्रज के भीतर उपज्यो कलह ता कर के पृ
थ्वी को बड़ो जो भार ता पृथ्वी को नाश करत युद्ध में दृष्टि कर के ई राजान की जे सेना तिन्ने नाश कर के अर्जु
न कूं विजय देकें उद्धव कूं परम तत्व को उपदेश कर के ता ई स्वरूप कर के अपनो जो धाम तहां जा
त भये ६७ इति श्री भागवते महापुराणे नवमस्कंधे यदुकीर्तने नाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४ जो जे लक्ष्म
न तिन कर के लक्षित नोमकार की भांति तिन कर लक्षित परमानंद है स्वरूप जा को ऐसो जो पारब्रह्म सनाथ हमें

नाभाग तै सो तिननै दई ओत नर बोल्यौ हे ईस यह सब तुम्हारो है हे यह मेरौ पिता कहत भयौ हे ब्रह्मन् मैं शिर करि कैं तुम्हें प्रसन्न करूं हूं ९ द्र
द्रबो लेनेरो पिता धर्म कहत भयो तुहूं सांच बोल्यो तातें मंत्रदृष्टि ज्यो जो न तातौ कूं ज्ञान रूप सनातन ब्रह्म दऊंगो १० मेरे यज्ञ में शेष रह्यो जो
द्रव्य सो मैं नै दीयो तू ग्रहण करि ऐसें कहि कें भगवान् जो भक्तवत्सल रुद्र सो अंतरहित होत भए ११ जो पुरुष सावधान होय कें सवेरे या सांझ
या चरित्र कों स्मरण करैगो सो कवि होय गो और मंत्रज्ञ होइगो आत्मा की जो गति ताय प्राप्ति होइगो १२ ता नाभाग ते महा भागवत सुकृती अं
अभरे बरीष होते हुये जो कहूं न खंडन भए ब्राह्मण को शाप सो ऊ जा अंबरीष को स्पर्स न करत भयो १३ राजा पूछे हैं हे भगवान् बुद्धिमान राजर्षि अंबरीष

नाभागस्तं प्रणम्याह तवेश किल वस्त्विति इत्याह मे पिता ब्रह्मन् शिरसा त्वां प्रसादये ९ यत्ते पिता वदद्धर्मं त्वं च सत्यं प्रभाषसे ददा
मि ते मंत्रदृशो ज्ञानं ब्रह्म सनातनं १० गृहाण द्रविणं दत्तं मत्सत्रपरिसेवितं इत्युक्त्वान्तर्हितो रुद्रो भगवान् सत्यवत्सलः ११
य एतत्संस्मरेत्प्रातः सायं च सुसमाहितः कविर्भवति मंत्रज्ञो गतिं चैव तथात्मनः १२ नाभागादंबरीषोऽभून्महाभागवतः कृ
ती: नास्पृशद्ब्रह्मशापोऽपि येन प्रतिहतः क्वचित् १३ राजोवाच: भगवच्छ्रोतुमिच्छामि राजर्षेस्तस्य धीमतः न प्राभूद्यत्र नि
र्मुक्तो ब्रह्मदंडो दुरत्ययः १४ श्रीशुक उवाच: अंबरीषो महाभागः सप्तद्वीपवतीं महीं अव्ययां च श्रियं लब्ध्वा विभवं चातुलं भुवि: १५
मेनेऽतिदुर्लभं पुंसां सर्वं तत्स्वप्नसंस्तुतम् विद्वान्विभवनिर्वाणं तमो विशति यत्पुमान् १६ वासुदेवे भगवति तद्भक्तेषु च सा
धुषु: प्राप्तो भावं परं विश्वं येनेदं लोष्ठवत्स्मृतं १७

ताको जो चरित्र ताय मैं सुनिवे की इच्छा करूं हूं जा अंबरीष पैं चलायो दुरत्य
य ब्रह्मदंड सो समर्थ न होत भयो १४ शुकदेव जी कहे हैं हे महाभाग अंबरीष सो सात द्वीप नकरि कें युक्त पृथ्वी नतीहैं ना प्रजा को ऐसी
संपत्ति अतुल वैभव करि कें ताय पाय कें पुरुषन कूं दुर्लभ है तें परि वैभव के नाश कूं जाने हैं यातें स्वप्न की सी नाई सब कूं होमानत भयो
जा वैभव करि कें पुरुष हैं सो मोह में ई बैठे १६ भगवान वासुदेव तिन में वा तिन के भक्त जे साधु तिन में परम भाव कूं मासि भए या भाव
करि कें या विश्व को तुच्छ करत भयो १७ सो अंबरीष कछु चरणारविंद में मन देत ताय नरत भयो भगवान के गुण वर्णन करि वे में बचन दें

तिनेकरत भए हाथ हैं तिनें हरि के मंदिर को मार्जनादिक तिन में करत भए कान हैं तिन्हें हरि की कथा के सुनिवे में करत भए मुकुंद के जे
स्वरूप तिन के जे स्थान तिन के दर्शन में नेत्र करत भये और भक्तन को जो गात्र ताके स्पर्श तें अंग संग करत भये तिन के चरणन में च
ढी तुलसी ताकी जो सुगंध ता में नासिका करत भए हरि कूं अर्पण कीयो जो प्रसाद ता में जीभ करत भए १९ हरि के जे क्षेत्र तिन में जाइ
वे के लीये चरण करत भए हरि के चरण कूं जो प्रणाम ता में शिर करत भए माला चंदनादिक जो सेवा ताय दास भाव करत भए विषय
इच्छा हू करके नहीं करत भए उत्तमश्लोक जो भगवान् तिन के जे जन तिन कूं आश्रय जो रति जैसें होय तैसें करत भए २० ऐसें कर्मन को

स वै मनः कृष्णपदारविंदयोर्वचांसि वैकुंठगुणानुवर्णने करौ हरेर्मंदिरमार्जनादिषु श्रुतं चकाराच्युतसत्कथोदये १८ मुकुंद
लिंगालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शेंऽगसंगमं घ्राणं च तत्पादसरोजसौरभे श्रीमत्तुलस्या रसनां तदर्पिते १९ पादौ हरेः क्षेत्रपदानु
सर्पणे शिरो हृषीकेशपदाभिवंदने कामं च दास्ये न तु कामकाम्यया यथोत्तमश्लोकजनाश्रया रतिः २० एवं सदा कर्मकलापमात्म
नः परेऽधियज्ञे भगवत्यधोक्षजे सर्वात्मभावं विदधन्महीमिमां तन्निष्ठविप्राभिहितः शशास ह २१ ईजेऽश्वमेधैरधियज्ञमीश्वरं
महाविभूत्योपचितांगदक्षिणैः ततैर्वसिष्ठासितगौतमादिभिर्धन्वन्यभिस्रोतमसौ सरस्वतीं २२ यस्य क्रतुषु गीर्वाणैः सदस्या
ऋत्विजो जनाः तुल्यरूपाश्चानिमिषा व्यदृश्यंत सुवाससः २३ स्वर्गो न प्रार्थितो यस्य मनुजैरमरप्रियः शृण्वद्भिरुपगायद्भि
रुत्तमश्लोकचेष्टितं २४ संमर्द्धयंति तान्कामाः स्वाराज्यपरिभाविताः दुर्लभा नापि सिद्धानां मुकुंदं हृदि पश्यतः २५ २५ २५

जो समस्त ताय भगवान् में अर्पन करत विप्र जे ब्राह्मण तिन करि के शिक्षा लेत यह जो पृथ्वी ताय पालन करत भयो २१ बडी विभूति कर
के रचे अंग दक्षिणा जिन में वशिष्ठ असित गौतमादिक तिन करि विस्तार कीये जे अश्वमेध तिन करि के धन्व देश में सरस्वती के तीर यज्ञ के अधि
पाता ईश्वर तिने पूजन करत भयो २२ ताके यज्ञन में सभासद ऋत्विज और जन ते देवतान करि सहित तुल्य है रूप जिन को नहीं लगे है प
लक जिन के सुंदर हैं वस्त्र जिन के ऐसे देषियत भये २३ जा राजा के मनुष्यनें देवतान कूं प्यारो जो स्वर्ग सो प्रार्थना नहीं कीयो भगवान की
जो चेष्टा ताय सुनते और गामते २४ जाते मुकुंद हृदे में देखते ऐसे जे जन तिन्हें सिद्धन कूं दुर्लभ स्वरूप सुख करि के प्रति से कीये जो

तप करिकें युक्त भक्तियोग स्वधर्म ता करकें हरिकूं प्रसन्न करत सो अंबरीष होलें होलें सगरे जे संग तिनें त्याग करत भए २६ घरनु में स्त्रीन में पुत्र
नमें बंधुन में उत्तम रथ घोडा और वस्तुन में अक्षय रत्न आभरण आयुधादिक अनंत खजानें तिन में झूठी ममता करत भए २७ ऐसे एकभक्तिभाव कर
कें प्रसन्न भए जो हरि सो वैरीन कूं भय देत भक्तन की रक्षा करें ऐसो जो चक्र ता यें अंबरीष कूं देत भए २८ तुल्य है शील जाको ऐसी जो रानी ता करि
कें सहित कृष्ण के आराधन की है इच्छा जाकें ऐसे जे वीर अंबरीष सो वर्ष लाईं द्वादशी व्रत धारण करत भए २९ व्रत के अंत में कार्तिक में तीन
तीन दिन उपवास करत भए कालिंद्री में स्नान कीयें सो मधुवन में हरि की पूजा करत भए ३० महाभिषेक की जो विधि ता करिकें सब सामिग्रीन की

स इत्थं भक्तियोगेन तपोयुक्तेन पार्थिवः स्वधर्मेण हरिं प्रीणन् संगान्सर्वान् शनैर्जहौ २६ गृहेषु दारेषु सुतेषु बंधुषु द्विपोत्तमस्यं
दनवाजिवस्तुषु अक्षय्यरत्नाभरणायुधादिषु अनंतकोशेष्वकरोदसन्मतिः २७ तस्मा अदाद्धरिश्चक्रं प्रत्यनीकभयापहं॥
एकांतभक्तिभावेन प्रीतो भृत्याभिरक्षणं २८ आरिराधयिषुः कृष्णं महिष्या तुल्यशीलया युक्तः सांवत्सरं वीरो दधार द्वाद
शीव्रतं २९ व्रतांते कार्तिके मासि त्रिरात्रं समुपोषितः स्नातः कदाचित्कालिंद्यां हरिं मधुवनेऽर्चयत् ३० महाभिषेकविधिना
सर्वोपस्करसंपदा अभिषिच्यांबराकल्पैर्गंधमाल्यार्हणादिभिः ३१ तद्गतांतरभावेन पूजयामास केशवं ब्राह्मणांश्च महा
भागान्सिद्धार्थानपि भक्तितः ३२ गवां रुक्मविषाणीनां रूप्यांघ्रीणां सुवाससां पयःशीलवयोरूपवत्सोपस्करसंपदां ३३
प्राहिणोत्साधुविप्रेभ्यो गृहेषु न्यर्बुदानि षट् भोजयित्वा द्विजानग्रे स्वाद्वन्नं गुणवत्तमं ३४ लब्धकामैरनुज्ञातः पारणायोप
चक्रमे तस्य तर्ह्यतिथिः साक्षाद्दुर्वासा भगवानभूत् ३५

जो संपति ता कर कें अंबर गहनें गंध फूलमाला ३१ इन करिकें तिनरी
मे प्राप्ति जो भाव ता करकें केशव जो भगवान तिनें पूजन करत भयो बडो है भाग जिन कों सिद्ध है प्रयोजन जिन कों ऐसे जे ब्राह्मण तिनें पू
जन करत भयो ३२ सोने के हैं सींग जिनके रूपे के खुर सुंदर हैं वस्त्र जिनके ऐसे जे ब्राह्मन दूध की शील रूप बछरा दोहनी ऐसी सं
पति जिन कों ३३ ऐसी जो गौ सो साठि किरोरि तिनें ब्राह्मणन के घर घरन में पठावत भए पहिलें गुणवान स्वाद अन्न ताय ब्राह्मन भोज
नकरावत भये ३४ पायो है काम जिनें ऐसे जे ब्राह्मण तिन करकें

राजा है सो अतिथ नाई उठिकैं आसन अर्घ इन करिकैं पूजा करत भये चरन मूल में गिरकैं भोजन के लीयें प्रार्थना क-
भा.न. ९ रत भयो ३६ दुर्वासा है सो राजा की प्रार्थना मानिकैं मध्यान संध्या करवे कों लीये गये कालिंदी कों पवित्र जो जल ता में स्नान क-
रत भये अरु तहां ब्रह्म को ध्यान करत भये ३७ घरी भर बाकी रही जो द्वादशी ता में पारनो करवे कूं राजा धर्म को जान-
नवारो सो ब्राह्मनन करके सहित धर्म संकट में चिंता करत भयो ३८ ब्राह्मण के अतिक्रम में दोष है द्वादशी में पारनो
करे तो दोष है या कर के मेरो भलो होई अधर्म मो कूं स्पर्श न करै सो करो ब्राह्मनन के संग विचार कैं निश्चै कीयो केवल

तमानर्चातिथिं भूयः प्रत्युत्थानासनार्हणैः ययाचेभ्यवहाराय पादमूलमुपागतः ३६ प्रतिनंद्य स तां याञ्चां कर्तु-
मावश्यकं गतो निममज्ज बृहद्ध्यायन् कालिंदीसलिले शुभे ३७ मुहूर्तार्द्धावशिष्टायां द्वादश्यां पारणं प्रति चिंत-
यामास धर्मज्ञो द्विजैस्तद्धर्मसंकटे ३८ ब्राह्मणातिक्रमे दोषो द्वादश्यां यदपारणे यत्कृत्वा साधु मे भूयादधर्मो वा
न मां स्पृशेत् ३९ अंभसा केवलेनाथ करिष्ये व्रतपारणं प्राहुरब्भक्षणं विप्रा ह्यशितं नाशितं च तत् ४० इत्यपः प्रा-
श्य राजर्षिश्चिंतयन्मनसाच्युतं प्रत्याचष्ट कुरुश्रेष्ठ द्विजागमनमेव सः ४१ दुर्वासा यमुनाकूलात्कृतावश्यक आ-
गतः राज्ञाभिनंदितस्तस्य बुबुधे चेष्टितं धिया ४२ मन्युना प्रचलद्गात्रो भ्रुकुटीकुटिलाननः बुभुक्षितश्च सु-
तरां कृतांजलिमभाषत ४३ अहो अस्य नृशंसस्य श्रियोन्मत्तस्य पश्यत धर्मव्यतिक्रमं विष्णोरभक्तस्येशमा-
निनः ४४ यो मामतिथिमायातमातिथ्येन निमंत्र्य च अदत्त्वा भुक्तवांस्तस्य सद्यस्ते दर्शये फलम् ४५

जल कर के पारनो है ता य करूंगो है ब्राह्मणा हो जल कौ जो भक्षण ता य वी भोजन कहै है और भोजन नहीं कहै है ४०
सो अंबरीष जल पायकें पारनो करत भयो हे कुरुवंस में श्रेष्ठ मन करिकें हरि कों चिंतवन करत ब्राह्मण के आ-
यवे को पेंडो देखत भयो ४१ कीयो है आवश्यक जिनने असे जो दुर्वासा सो जमुना कूल तें आये राजा नें आदर कीयो
राजा की चेष्टा ता य बुद्धि कर के जानत भयो ४२ क्रोध कर कें कांपे है शरीर जा को भ्रकुटीन कर के कुटिल है मुख जा को
अतिभूखो जो दुर्वासा सो हाथ जोरे जो राजा ता सूं बोलत भयो ४३ यह क्रूर संपत्ति कर कें मत्त विष्णु को अभक्त आपे कूं ई-
श्वर माने असो यह राजा ता के धर्म को जो अतिक्रम ता य देखो ४४ जो राजा आयो जो अतिथ मैं ता य भोजन के लीयें नोति कें व

ऐसें कहि क्रोध करकें जरत जो दुर्वासा सो एक जटा उखारकें माथा टाकदिकें ता जाके अर्थ कालअग्नि कोसी है उपमा जाकी ऐसी जो कृत्या ताप्रकट
न भयो ४६ खड्ग है हाथमें जाके पावकरकें भूमिको कपावहै प्रकासित चली आवै नायदेखकें स्थानतें न चलत भयो ४७ महात्माजो भगवान तिन
भक्तकी रक्षाके लीयें पहिलेंई आज्ञादीया जो चक्र सो ताकृत्याकुं जराय देत भयो जैसें क्रोधकी पो जो सर्प ताहि दावानल जराय देत भयें ४८ आपनो
प्रयास निस्फल गयो नायदेखकें दुर्वासा भाजत भयो डरप्यो प्राणबचायवेके लीयें दिसानमें भाजत भयो ४९ भगवानको जो चक्र सो ताके पीछे
दौरत भयो जैसें उठी है ज्वाला जाकी ऐसो जो दावाग्नि सो सांपके पीछें दौरे है तैसें पीछें लग्यो चक्र नायदेखिकें दुर्वासा सुमेरकी गुफामें प्रवेश

एवं ब्रुवाण उत्कृत्य जटां रोषविदीपितः तया स निर्ममे तस्मै कृत्यां कालानलोपमां ४६ तमापतंतीं ज्वलतीमसिहस्तां पदा भुवं
वेपयंतीं समुद्वीक्ष्य न चचाल पदान्नृपः ४७ प्रादिष्टं भृत्यरक्षायां पुरुषेण महात्मना ददाह कृत्यां तां चक्रं क्रुद्धाहिमिव पावकं ४८
तदभिद्रवदुद्वीक्ष्य स्वप्रयासं च निस्फलं दुर्वासा दुद्रुवे भीतो दिक्षु प्राणपरीप्सया ४९ तमन्वधावद्भगवद्रथांगं दावाग्निरुद्धूत
शिखो यथाहिं तथानुसक्तं मुनिरीक्षमाणो गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः ५० दिशो नभः क्ष्मां विवरान्समुद्रांल्लोकान्सपालांस्
त्रिदिवं गतः सः यतो यतो धावति तत्र तत्र सुदर्शनं दुष्प्रसहं ददर्श ५१ अलब्धनाथः सपदा कुतश्चित्संत्रस्तचित्तोऽरणमे
षमाणः देवं विरंचं समगाद्विधातस्त्राह्यात्मयोनेऽजिततेजसो मां ५२ ब्रह्मोवाचः स्थानं मदीयं सह विश्वमेतत्
क्रीडावसाने द्विपरार्द्धसंज्ञे भ्रूभंगमात्रेण हि संदिधक्षोः कालात्मनो यस्य तिरोभविष्यति ५३ श्रीकृष्णायनमः

रिवेके लीयें जात भयो दिसा आकाश पृथ्वी विवर समुद्र लोकपालन सहित तिनमें स्वर्गमें गयो जो दुर्वासा सो जहां जहां दौरयो तहां
तहां सुदर्शन देखत भयो ५१ जासमें कहूं नहीं पायो है कोई रक्षाकरनवारो जाने डरप्यो है चित्त जाको सो नो सरन कूं
ढूंडत ढूंडत ब्रह्माके पास जात भयो है और तुम आज्ञी सो परकहीके हे विधाता हरको जो चक्र है सो यातें अब तुम मेरी रक्षा के
रो ५२ तब ब्रह्मा बोलो विश्व करकें सहित यह मेरो स्थान नाय नायनाश करवेकी इच्छाकरत जो कालरूपी भगवान ताके क्री
डाको जो अन्त द्विपरार्द्ध है नाम जाको तामें भ्रकुटीके जो भंगमात्र करकेन नष्ट होजायगो ऐसें ब्रह्माते सो दुर्वासाने कहत भयो ५३

हे दुर्वासा मैं रुद्र दक्ष भृगु ये जिन मैं मुख्य प्रजानके ईस भूतन के ईश देवतान के ईश मुख्य जिन मैं ऐसे सब हम जा भगवान की माथे
पै धरि अर्थनल करि आज्ञा नायम सिर हो कैं लोकन कौ जो हित सो जैसे है होइ तैसे आज्ञा करत है ५४ हं जाने नाहीं कीयो विष्णु चक्र ने जरा
यो जो दुर्वासा सो कैलासवासी महादेव ताकी सरन गयो ५५ महादेव बोले हे नातन हम सब नै वडे परमेश्वर ताने हम नहीं प्रभाव
करि सके है और हम ब्रह्मा ही भरे जीव तिनके जाको ब्रह्मांड स्वरूप जा प्रकार के रजा रन काल कर के होहैं जिन ब्रह्मांडन मे हम भ्रम
तडोले हैं ५६ मै सनत्कुमार नारद ब्रह्मा कपिल अपांतर तमदेवल धर्म आसुरी मरीच ये जिनमे मुख्य और सिद्धन के ईश्वर या

अहं भवो दक्षभृगुप्रधानाः प्रजेशभूतेशसुरेशमुख्याः सर्वे वयं यन्नियमं प्रपन्ना मूर्ध्न्यार्पितं लोकहितं वहामः ५४ ऋषिरुवा
प्रत्याख्यातो विरिंचेन विष्णुचक्रोपतापितः दुर्वासाः शरणं यातः शर्वं कैलासवासिनं ५५ शंकर उवा वयं न तात प्रभवाम भूम्नि य
स्मिन्परेऽन्येऽप्यजजीवकोशाः भवंति काले न भवंति हीदृशाः सहस्रशो यत्र वयं भ्रमामः ५६ अहं सनत्कुमारश्च नारदो भग
वानजः कपिलोऽपान्तरतमो देवलो धर्म आसुरी मरीचप्रमुखाश्चान्ये सिद्धेशाः पारदर्शिनाः विदाम न वयं सर्वे यन्मायां
मायया वृता ५८ तस्य विश्वेश्वरस्येदं शस्त्रं दुर्विषहं हि नाः त्वमेव शरणं याहि हरिस्ते शं विधास्यति ५९ ततो निराशो दुर्वा
सा पदं भगवतो ययौ वैकुंठाख्यं यदध्यास्ते श्रीनिवासः श्रीया सह ६० संदह्यमानोऽजितशस्त्रवह्निना तत्पादमूले पतितः
सवेपथुः आहाच्युतानंत सदीप्सित प्रभो कृतागसं मावहि विश्वभावन ६१ अजानता ते परमानुभावं कृतं मयाघं
भवितः प्रीयाणां विधेहि तस्यापचितिं विधातर्मुच्येत यन्नाम्न्युदिते नारकोऽपि ६२

केदे खन वारे सब रम जाकी माया कूं नहीं
जाने हैं माया नैं घेरे हैं ५८ सो जो विश्वेश्वर भगवान तिन को शस्त्र है हमपें सह्यो न जाय ऐसो सुदर्शन ताई के सरण जा हरि तोकूं सुख करे
गें ५९ तब न राजा सो दुर्वासा सो विश्वेश्वर भगवान तिन को स्थान वैकुंठ तहां जात भयो तहां श्रीनिवास लक्ष्मी सहित रहे है ६०
भगवान के शस्त्र की जो अग्नि ता कर जरे है कांपें है सरीर जाको सो हरके चरन मूल में गिरत भयो हे अच्युत हे अनंत हे साधु
नके वांछित हे प्रभो हे विश्वभावन अपराधी जो मैं ताय रक्षा करो ६१ तुमारे प्रभाव कूं न ती जानूं मैंने तुमारे प्यारेन को अप
धन कीयो है या कौ प्रायश्चित करो तुमके सै हो के सो है तुमारो नाम ता नाम लीये तें नरक मैं थित है सो उमुक्त होते ६२

भगवानबोलेमैंभक्तनकेपराधीनहीहूं सुतंत्रहीसोनहीं भक्तननैंअस्योहैंहृदयजाको भक्तजनहैंप्यारेजाकूं असेहैं ६३ मेमेरेभक्त
साधुजिनविनाआत्माहूकीआसानहीकरूं अनंतकीजोलक्ष्मीनायईछानहीकरूं जिनमैपरमगतीमेरे ६४ जेभक्तस्त्रीघरपुत्रप्यारेप्रानधन
यहलोकपरलोकछोडकेंमेरेसरणआरे तिनेछोडिवेकूंकैसेउत्साहकरूं ६५ मोमेंबांध्योहैहृदयजिनें समदृष्टीसाधुभक्तजनमेंमोहि
वसकरेहैं जैसेंउत्तमजेस्त्रीनेउत्तमजोपतितायवसकरेहैं ६६ मेरीसेवाकरकेंप्राप्तिभईजोलोक्यादिकचारमुक्ति तायनतीइच्छाव
रैहैं सेवाईकरकेंपूर्णहैं कालमेंनापाकीयोस्वर्गादिकतापकतानेइच्छाकरें ६७ साधुहैंतेमेरेहृदयहैं मेंसाधुनकोहृदयहूं मोतेंओ

॥श्रीभगवानुवाच॥ अहंभक्तपराधीनोह्यस्वतंत्रइवद्विज साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रियः ६३ नाहमात्मानमाशा
सेमद्भक्तैःसाधुभिर्विना श्रियंचात्यंतिकींब्रह्मन्येषांगतिरहंपरा ६४ येदारागारपुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिमंपरं हित्वा
मांशरणंयाताःकथंतांस्त्यक्तुमुत्सहे ६५ मयिनिर्बद्धहृदयाःसाधवःसमदर्शनाः वशीकुर्वंतिमांभक्त्यासत्स्त्रियःसत्पतिंय
था ६६ मत्सेवयाप्रतीतंचसालोक्यादिचतुष्टयं नेच्छंतिसेवयापूर्णाःकुतोन्यत्कालविद्रुतं ६७ साधवोहृदयंमह्यंसाधु
नांहृदयंत्वहं मदन्यत्तेनजानंतिनाहंतेभ्योमनागपि ६८ उपायंकथयिष्यामितवविप्रनिशामय अयंह्यात्माभिचार
स्तेयतस्तंयाहिवैभवान् ६९ साधुषुप्रहितंतेजःप्रहर्तुःकुरुतेशिवं तपोविद्याचविप्राणांनिःश्रेयसकरेउभे तेएव
दुर्विनीतस्याकल्पेतेकर्तुरन्यथा ७० ब्रह्मंस्तद्गच्छभद्रंतेनाभागतनयंनृप क्षमापयमहाभागंततःशांतिर्भ
विष्यति ७१ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेचातुर्थोध्यायः ४ श्रीमन्नारायणवासुदेवकीजै

रहूंतेनहीजानैहैं मेंतिननेंओरकूंनहीजानूंहूं ६८ जापेंतेनैंअभिचारकीयो नाईराजाकेसरणजासाधुनपेचलायोजोतेजसो
प्रहारकरनवारेकोअमंगलकरेहै ६९ तपविद्याहैसोब्राह्मणनकेश्रेयकरेहैं तेईअनम्रजोब्राह्मणताकेअमंगलकरे
है ७० हेब्राह्मणतातैंजानेरोकल्याणहोइ नाभागकोबेटाराजातायक्षमाकरावनतातेंसांतिहोयगी ७१ इतीभागव
तेनवमेंचतुर्थोध्याया ४ पांचकीअध्यायमैविष्णुचक्रहै तायप्रसन्नकरकें माराहसंकटतेंदुर्वासाअंबरीषनेरक्षाकीयेसो

शुकदेवजी कहे हे राजन् ऐसे भगवान्ने आज्ञा दीनी चक्रने तपायो दुर्वासा सो अंबरीषके निकट आय कै दुखित होइ के ताके
चरणनको ग्रहण करत भयो १ ताको उद्यम देखिके चरणके स्पर्श करके पीडित अंबरीष सो हरको जो सस्त्र ताय स्तुति करत
भयो २ तुम अग्नि हो तुम्हरी भगवान सूर्य हो जोतिनको पति चंद्रमा सो तुम हो जल तुम हो पृथ्वी तुम हो आकास पवन तुम हो मा
त्रा इन्द्री तुम हो ३ हे सुदर्शन हे हजार हे धारा जाकी हे हरिके प्यारे हे सबके अस्त्रनके नास करे हे पृथ्वीके पति तुमारे अर्थ नमस्कार है
ब्राह्मनताको सरण होउ ४ धर्म तुम हो सब यज्ञनके भोक्ता तुम हो लोकपाल तुम हो सर्वात्मा तुम हो ईश्वरको परम तेज तुम हो ५

॥श्रीशुक उवाच॥ एवं भगवतादिष्टो दुर्वासाश्चक्रतापितः अंबरीषमुपावृत्य तत्पादौ दुःखितो ग्रहीत् १ तस्य सोद्यमम
वीक्ष्य पादस्पर्शविलज्जितः अस्तावीत्तद्धरेरस्त्रं कृपया पीडितो भृशं २ अंबरीष उवाच त्वमग्निर्भगवान्सूर्यस्त्वं
सोमो ज्योतिषां पतिः त्वमापस्त्वं क्षितिर्व्योम वायुर्मात्रेंद्रियाणि च ३ सुदर्शन नमस्तुभ्यं सहस्राराच्युतप्रिय सर्वास्त्रघा
तिन्विप्राय स्वस्ति भूया इडस्पते ४ त्वं धर्मस्त्वमृतं सत्यं त्वं यज्ञोऽखिलयज्ञभुक् त्वं लोकपालः सर्वात्मा त्वं तेजः पौरु
षं परं नमः सुनाभाखिलधर्मसेतवे ह्यधर्मशीलासुरधूमकेतवे त्रैलोक्यगोपाय विशुद्धवर्चसे मनोजवायाद्भुतकर्मणे गृणे ५
हैं ६ त्वत्तेजसा धर्ममयेन संहृतं तमः प्रकाशश्च धृतो महात्मनाम् दुरत्ययस्ते महिमा गिरां पते त्वद्रूपमेतत्सदसत्परावरं ७
यदा विसृष्टस्त्वमनंजनेन वै बलं प्रविष्टोऽजित दैत्यदानवं बाहूदरोर्वंघ्रिशिरोधराणि वृश्चन्नजस्रं प्रधने विराजसे ८
सत्वं जगत्त्राण खलप्रहाणये निरूपितः सर्वसहो गदाभृता विप्रस्य चास्मत्कुलदैवहेतवे विधेहि भद्रं तदनुग्रहो हि नः

हे सुनाभि तुमको नमस्कार है अखिल धर्मकी मर्यादा अधर्मसील जे असुर तिनके जरावन हारे त्रिलोकीके पालक विशुद्ध है
तेज जाको मन सो है तेज जाको मनसो तीव्र वेग जाको अद्भुत है कर्म जाको तिनके अर्थ नमस्कार ६ धर्ममय जो तुमा
रो तेज ताकर के नेत्रनको तम अन्याय हरो सूर्यादिकनको प्रकाश तुमारे तेज कर है तुमारी महिमा दुरत्यय है वानीन के पति
स्थूल सूक्ष्म पर अवर यह जगत सो तुम ने प्रकास कीयो है ७ हे अजीत हरने जब तुम बलात्कार दैत्य दानवनकी सेना में प्रवि
ष्ट कियो तिनकी भुजा उदर ऊरु चरन ग्रीवा इनेका टत विदारो तो ८ हे जगतके रक्षक भगवानने तुम दुष्टनके नाश के

जोहमारोदानहैईश्वरें स्वधर्मकीयोहै सोवांछनहोहै देवताजामें ऐसोहमारोकुलहै तोब्राह्मनगन पकरकेंरहितसो
ऊं २० सवगुनन कूंआश्रेएक भगवान सोसगरे भूतनमैं आत्माभावकरिकें जोहमपैप्रसन्नभएं तोब्राह्मनकोतप
गयो २१ शुकदेवजीकहे हेराजन् ऐसेराजाकूं अस्तुतिकरत संतें विष्णुचक्र जोसुदर्शन सोब्राह्मनकोंजरावैहै परि
राजाकीप्रार्थनाकरणांत भयो २२ अस्त्रकोजोतेजताकेतापकरदुषितभयो कल्यानभयो जोदुर्वासासोपरमआसी
र्वाददेतराजाकीवडाईकरनभयो २३ दुर्वासावोले हरकेदास तिनकोंजोमहात्म्य सोमनेआजदेख्यो जिन दासु

यद्यस्तिदत्तमिष्टंवास्वधर्मोवास्वनुष्ठितः कुलंनोविप्रदैवंचेद्द्विजोभवतुविज्वरः १० यद्यनोभगवान्प्रीतएकः
सर्वगुणाश्रयः सर्वभूतात्मभावेनद्विजोभवतुविज्वरः ११ शुकउवाच इतिसंस्तुवतोराज्ञोविष्णुचक्रं
सुदर्शनं अशाम्यत्सर्वतोविप्रंप्रदहद्राजयाच्यया १२ समुक्तोऽस्त्राग्नितापेनदुर्वासास्वस्तिमांस्ततः प्रशशंसतमु
र्वीशंयुंजानःपरमाशिषः १३ दुर्वासाउवाच अहोअनंतदासानांमहत्त्वंदृष्टमद्यमे कृतागसोऽपियद्राजन्मंग
लानिसमीहसे १४ दुष्करःकोनुसाधूनांदुस्त्यजोवामहात्मनां यैःसंगृहीतोभगवान्सात्वतामृषभोहरिः १५ य
न्नामश्रुतिमात्रेणपुमान्भवतिनिर्मलः तस्यतीर्थपदःकिंवादासानामवशिष्यते १६ राजन्ननुगृहीतोऽहं
त्वयातिकरुणात्मना मदघंपृष्ठतःकृत्वाप्राणायन्मेऽभिरक्षिताः १७ राजातमकृताहारःप्रत्यागमनकांक्षया
चरणावुपसंगृह्यप्रसाद्यसमभोजयत् १८ सोऽशित्वादृतमानीतमातिथ्यंसार्वकामिकं तृप्तात्मानृपतिंप्राह

तनें अपराधकरनहारोहूं मंगलहैतिनेंमांगिहोहैं २४ साधुनकूं दुस्करनकहाहैं महात्मानकूं दुस्त्यजनकहाहैं जिननें
सात्वतनमैंश्रेष्ठभगवानवसकीराहैं २५ जाकेनामश्रवणमात्रकरकें पुरुषनिर्मलहोवैं सोजोतीर्थपादभगवान्ता
केदासनकोंकहावाकीरहै २६ हेराजाकरुणात्माजोतुमतानेंमोपेअनुग्रहकीयो मेरेअपराधकूंपीछेकरकेंमेरे
प्राणरक्षाकीए २७ ब्राह्मणकेआइवेकीइछानृतीकीयोहै आहारजानें ऐसोजोराजासोचरणनमेंगिरकें
प्रसन्नकरकें भोजनकरावनभयो २८ सोदुर्वासा आदरतेंदीयो सवहैकामनाजामें ऐसोअतिथिनायभोजनक

[illegible]

[illegible] ९६

कृ७ नेष्ववीर्यंचपरानुभावं २६ एवंविधानेकगुणःसराजापरात्मनि ब्रह्मणिवासुदेवेक्रियाकलापैसमुवाह भ

भा.न. नुमजोभागवतनकोदर्शनस्पर्शनआलापनइनकरकेंदेहकूंपवित्रकरोहैंऐसेसोजोअम्बरीषकरकेंमेंप्रसन्नभयोंओर
अनुग्रहकीयो २० तुमारोयहउलको कर्मनायस्वर्गकीजेस्त्रीतेवेरवेरगामेंगी यहजोभूमिसोउमारोपरमगुणजोकी
९२ र्तिनायगावेगी २१ शुकदेवजीकहेहेराजनऐसेसोप्रसन्नजोदुर्वासासोराजाकोप्रशंसनकरकेंआज्ञामांगिकेंयाँ
आकाशमार्गकरकेंब्रह्मलोककूंजातभयो २२ गयोजोरुक्मिनीसोइननेकरकेंनआवतनभयोतिनतनेंमेंएकवर्ष
जातभयोराजादर्शनकीइच्छाकरतजललेकेंवर्तनाइरहतभयो २३ सोऽम्बरीषजोदुर्वासाकोयथापीछें

प्रीतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि तव भागवतस्य वै। दर्शनस्पर्शनालापैरातिथ्येनात्ममेधसा २० कुर्मीवदानमेततेगायंति स्वःस्त्रियो मुहुः। कीर्तिं परमपुण्यं च कीर्तयिष्यति भूरियं २१ शुक उवाच एवं संकीर्त्य राजानं दुर्वासाः परितोषितः। ययौ विहायसामंत्र्य ब्रह्मलोकमहैतुकं २२ संवत्सरोऽत्यगात्तावद्यावता नागतो गतः। मुनिस्तद्दर्शनाकांक्षो राजाऽब्भक्षो बभूव ह २३ गतेऽथ दुर्वाससि सोऽम्बरीषो द्विजोपयोगातिपवित्रमाहरत्। ऋषेर्विमोक्षं व्यसनं च बुद्ध्वा मेने स्ववीर्यं न परानुभावं २४ प्रथांवरीषेस्तनयेषुराज्यं समानशीलेषु विसृज्य धीरः। वनं विवेशात्मनि वासुदेवे मनो दधद्ध्वस्तगुणप्रवाहः २६ इत्येतत्पुण्यमाख्यानमंबरीषस्य भूपते। संकीर्तयन्ननुध्यायन् भक्तो भगवतो भवेत्। इतिश्रीभागवतेनवमेंपंचमोध्यायः ५

ब्राह्मणकूंभोजनकरायकेंअतिपवित्रजोअन्नतायआपभोजनकरकेंतभयो त्रिषदुःखयुतोतायदेखकेंअ
पनोधीर्यादिकदेखकेंभगवानकोप्रभावमाननतभयो २४ ऐसेअनेकहैंगुणजाकेऐसोजोराजासोपरमात्मा
वासुदेवतिनमेंक्रियाकलापनकरभक्तिभावकरतभयोजाभक्तिकरकेंब्रह्मलोकलोंभोगतिनेनकतु
च्छदेखतभयो २५ पीछेंसमानहेशीलजिनकोऐसेजेपुत्रतिनेराज्यदेकेंधीरजोअंबरीषसोवनमेंप्रवेश
करतभयोआत्माजोवासुदेवतिनमेंमनदेनायधारणकरतभयोदूरभयोहैंसंसारजिनको २६ ऐसेअं
बरीषजोराजाताकोयहजोपुन्यचरित्रतायकहेंगोस्मरणकरैगोसोभगवानकोभक्तहोयगो २७ इतिनव

छठी अध्याय में अंबरीषको वंस कहिकैं सातें परें अध्याय लेकें आठ जे अध्याय तिन करकैं इक्ष्वाकु को वंस कहैं हैं तहां छठें अध्या
यमें ससादि तें आदि लेकें मांधाता पर्यंत वंस कहै हैं प्रसंग तें मांधाता की वेटी को पति सोभरि ऋषि ताको चरित्र कहै हैं १
शुकदेव कहै हैं राजन् विरूप केतुमान शंभु ये तीन वेटा भये विरूप तें प्रसदस्व भयो ताको पुत्र रथीतर भयो १ अपुत्र जो
रथीतर ताके संतान के लीये प्रार्थना कीये अंगिरा सो तिसने जन करकैं पुत्र जे पुत्र तीने उपजावत भये २ ये रथीतर को जो
क्षेत्र ता मे उपजे अंगिरा तें भये ताते अंवरीष कहाये रथीतर को जो गोत्र ता मे मुख्य भये सो तो क्षत्रिय ब्राह्मण भये ३ छीक

श्रीशुक उवाच: विरूपः केतुमाञ्छंभुरंबरीषसुतास्त्रयः विरूपात् पृषदश्वोभूत्तत्पुत्रस्तु रथीतर १
रथीतरस्याप्रजस्य भार्यायां तंतवेर्थितः अंगिरा जनयामास ब्रह्मवर्चस्विनः सुतान् २ एते क्षेत्रप्रसूता
वै पुनस्त्वांगिरसाः स्मृताः रथीतराणां प्रवराः क्षत्रोपेता द्विजातयः ३ क्षुवतस्तु मनोर्जज्ञे इक्ष्वाकुर्घ्राणतः सुतः
तस्य पुत्रशतज्येष्ठा विकुक्षिनिमिदंडकाः ४ तेषां पुरस्तादभवन्नार्यावर्ते नृपा नृप पंचविंशतिः पश्चाच्च त्रयो म
ध्येपरेन्यतः ५ स एकदाष्टकाश्राद्ध इक्ष्वाकुः सुतमादिशत् मांसमानीयतां मेध्यं विकुक्षे गच्छ माचिरं ६ तथे
ति स वनं गत्वा मृगान् हत्वा क्रियार्हणान् श्रांतो बुभुक्षितो वीरः शशं चाददपस्मृतिः ७ शेषं निवेदयामास पित्रे
तेन च तद्गुरुः चोदितः प्रोक्षणायाह दुष्टमेतदकर्मकम् ८ तें जो मनु ताके घ्राण तें इक्ष्वाकु पुत्र होत भयो

ताके सौ वेटा तिन में जेठे विकुक्षि निमि दंडक ए तीन भये ४ तिनसों अन्य में आर्यावर्त्त में पूर्व ओर कूं समुद्र पर्यंत प-
चीस होत भये पचीस पश्चिम में भये तीन मध्य में भये और उत्तर दक्षिण कूं होत भये ५ सो इक्ष्वाकु राजा दिना अष्ट
काश्राद्ध में पुत्र ते ताय आज्ञा देत भये हे विकुक्षि तूं जा ढील मत करै पवित्र जो मांस ताय लै आउ ६ सो विकुक्षि वन-
में जाके श्राद्ध के योग्य मृगन कों मार कें श्रम कूं प्राप्त भये भूख लगी सो वीर एक ससा कूं खाय गयो पहलें सो कोन ती
यानें यत सब भूल गई ७ वाकी जो मांस ताय पिता के अर्थ देत भयो पिताने श्राद्ध के लीयें प्रेरे जे गुरू सो बोले यह मांस दुष्ट

[illegible]

भा.न. पुत्रकोंगुरुन्नेकह्योंजोकर्मनाथजानिकें क्रोधकरकेत्यागकरीहैविधिवरीजानें ऐसोजोपुत्रताएदेशनेंनिकारदेतभयो ९
९३ सोइक्ष्वाकुवासराजोविप्रनाकरकेसंवादते ताथकरतयोगीहोकें सरीरकोछोडत परमज्ञानत्वताएप्राप्तभयो १०
पिताकेगएसेतेविकुक्षिरेसोयहांआयकेपृथ्वीकोपालनकरतभयो यज्ञनकरकेंहरकीपूजाकीयो सोससादिया
नामकरकेविख्यातहोतभयो ११ तासससादकोबेटापुरंजयभयो सोइंद्रवाहककुत्स्थऐसेकाहेकर्मनकरकें एनाम
भएतिनेंसुनो १२ विश्वकूनाशकरें ऐसोदानवनकोदेवतानकेसंगयुद्धहोतभयो दैत्यननेंजीतेजेदेवनातिं

ज्ञात्वापुत्रस्यतत्कर्मगुरुणाभिहितंनृपः देशान्निःसारयामाससुतंत्यक्तविधिंरुषा ९ सतुविप्रे
णसंवादंज्ञापकेनसमाचरन् त्यक्त्वाकलेवरंयोगीसतेनावापयत्परं १० पितर्युपरतेभ्येत्यविकुक्षिःपृथ्वीमि
मां शासदीजेहरियज्ञैःशशादइतिविश्रुतः ११ पुरंजयस्तस्यसुतःइंद्रवाहइतीरितः ककुत्स्थइतिचाप्युक्तःशृणु
नामानिकर्मभिः १२ कृतान्तआसीत्समरोदेवानांसहदानवैः पार्ष्णिग्राहोवृतोवीरोदेवैर्दैत्यपराजितैः १३
वचनाद्देवदेवस्यविष्णोर्विश्वात्मनःप्रभोः वाहनत्वेवृतस्तस्यबभूवेंद्रोमहावृषः १४ ससन्नद्धोधनुर्दिव्यमा
दायविशिखान्शितान् स्तूयमानस्तमारुह्ययुयुत्सुःककुदिस्थितः १५ तेजसाप्यायितोविष्णोःपुरुषस्यमहात्म
ना प्रतीच्यांदिशिदैत्यानांन्यरुणत्त्रिदशैःपुरं १६ तैस्तस्यचाभूत्प्रधनंतुमुलंलोमहर्षणं यमायभल्लैरनयद्

ननेंयुद्धराजासहायकीयो १३ यानेंकरीइंद्रजोमेरोवाहनहोयतोदैत्यनकूंमारूं सबइंद्रकानकरिकेंअंगीकारकीयो तव
देवनकेदेवविष्णुकेआत्माजोविष्णुतिनकेवचनमें ताराजाकेलीयेंइंद्रबडोबैलहोतभयो १४ सोराजाकवचपहेर ९
कें दिव्यधनुषपैनेवाणतिनेंलेकें देवनास्तुतकीयोवाबैलपेचढकेंयुद्धकरवेकूं ककुदपेबैठतभयो १५ दैत्यनकूं
विष्णुकेतेजकरकेयुक्तजोराजा सोपश्चिमदिशामेंदैत्यनकोजोपुरताएदेवतानकरकेंघेरतभयो १६ दैत्यन
कोसंगराजाकोभयंकरसंग्रामभयो जेआपनेंसन्मुखआरेदैत्यतिनेंपैनेवाणनकरकें देहसहितनीयमकेलोककूंपहुचावतें १३

मलयकी अग्निनाकी सीनाई नाके उत्वणाश्वा नितपान नायन मदे खिके रकाछोड्के मारे जे देस्यनेपाना ल
कूजान भयो १८ पुरंजीनके सगरोधन इंद्रकों रतभयो सोराजाइमनामनकरकेकह्यो १९ पुरंजयकोपुत्र अन
नाभयो नाके पृथु भयो नाके विश्वगंध भयो नाके चंद्र भयो नाको वैरायष्ट नाश्व भयो २० नाके सावस्त भयो
नाके सावस्ती भयो नानेसावस्तीनामपुरीरची नाके वृहदश्व भयो नाके कुवलयाश्व भयो २१ जो कुवलयाश्व उ
तंक रिषीके प्रियकरवेके लीये ईसकी हजार बेटानकूं संगलैके धुंधनामजो असुर नायमारन भयो २२ याने

नस्येषु पातालविमुखं ग्रुवां नाज्जिमि बोल्वणं विष्णुर्द्ददुवुदे स्पाहम माना:स्वमालयं ॥ १८ जिल्वा पुरंध
नं सर्वमय छह्क्ष पाशिये स्त्यपृच्छतिसराजर्षि रिन्नुनाम मुराहना १९ पुरंजयस्य पुत्रोभूदनेना
स्तत्सुतः पृथुः विश्वगंधस्ततश्चंद्रो युवनास्तुतस्सुतः २० सावनस्सुतो येन सावस्ती निर्म्मेपुरी वृ
हदश्वस्ततिसावस्तीस्ततस्ततः कुवलयाश्वकः यः प्रियार्थमुतंकस्य धुंधुनामासुरं वली सुतानामे
कविंशत्या सहस्रे रहनहृतः २२ धुंधुमार इस्यातस्तत्सुता स्तेत्सु जज्वलुः धुंधोर्मुखाग्निना सर्व
त्रयएवावसेसितः दृढाश्वकपिलाश्वश्च भद्राश्व इतिभारतः २३ दृढाश्वपुत्रो हर्यश्रो निकुंभस्त
स्सुतस्मृतः वर्हणाश्वो निकुंभस्य कृशाश्वोथास्य सेनजित २५ युवनाश्वोभवतस्य सोनपत्यो व
नंगता भार्याशतेन निर्विण्णा ऋषयोस्य कृपालवः ईष्टीस्म वर्तयांचक्रुरैद्रीं ते सुसमाहिता २६

धुंधुमारनाम होत भयो ताधुंधुके वदनमुखकी अग्निकरिके सगरे जर गये तीनवाकों रहे दृढाश्व कपि
लाश्व भद्राश्व २३ दृढाश्वकोपुत्र दुखितह्वैके संनीनके संगलैके वनमें गयो नाके कृसाश्व नाके सेनजि
त २५ नाके युवनाश भयो सो अपुत्रहे याते दुखितहोके रानीनयुक्त वनमे गयो नवपाके पुत्रकेलीये कृपा
लजो रिषि इंद्रकों जोइष्टनायकरतभये २६

भा.न. राजा हे सो राति में प्यास के मारे जलदूढवे कूं यज्ञ के स्थान में प्रविष्ट भयो सो ब्राह्मणनकों सोवत देखवे के स्त्रीकूं देने जो वह
१६ मंत्रित जल ताय आप पीयो २६ उठे जे मुनि ते विना जलकों कलश ताय देखके पूछत भए कोन प्रभु को यह कर्म हे पुत्र को उ
पजावन वारो जल पीलीयो ईश्वर को पठायो राजा ताने पीयो यह जानि करके ईश्वर के अर्थ नमस्कार करत भये अहो ईश्व
र को बलही मुख्य हे पुर्ष को कछु नही २८ ता पीछे समे प्राप्ति भये संते युवनाश्व की दाहिनी कूख फार के चक्रवर्ती पुत्र हो
त भयो ३० यह बालक कोन को पीवेगो स्तनके लीये रोवे हे असे ब्राह्मणन ने करी तब इंद्र बोलो मोहि पीवेगो रोवे मत

राजा तद्यज्ञसदनं प्रविष्टो निशि तर्षितः दृष्ट्वा शयानान्विप्रांस्तान्पपौ मंत्रजलं स्वयम् २६ उत्थितास्ते निशाम्या
थ व्युदकं कलशं प्रभो पप्रच्छुः कस्य कर्मेदं पीतं पुंसवनं जलं २७ राज्ञा पीतं विदित्वाथ ईश्वरः प्रहितेन ते ईश्व
राय नमश्चक्रुरहो दैवबलं २८ ततः काल उपावृत्ते कुक्षिं निर्भिद्य दक्षिणं युवनाश्वस्य तनयश्चक्रवर्ती ज
जान ह २९ कं धास्यति कुमारोयं स्तन्ये रोरूयते भृशं मां धाता वत्स मा रोदीरितीन्द्रो देशिनीमदात् ३०
न ममार पिता तस्य विप्रदेवप्रसादतः युवनाश्वोथ तत्रैव तपसा सिद्धिमन्वगात् ३१ त्रसद्दस्युरितींद्रोंग
विदधे नाम तस्य वै यस्मात्त्रसंति ह्युद्विग्ना दस्यवो रावणादयः ३३ यौवनाश्व मांधाता चक्रवर्त्यवनीं प्रभुः
सप्तद्वीपवतीमेकः शशासाच्युततेजसा ईजे च यज्ञं क्रतुभिरात्मविद्भूरिदक्षिणैः सर्वदेवमयं देवं सर्वात्मक

रोवे मति असे कहि अपनी तर्जनी अंगुरीया ताके मुख में देत भयो ३१ विप्र देवतानकों जो प्रसाद ताते ताको पिता म
ह्यो नही युवनाश्व हे सो उत्तप करके सिद्ध प्राप्ति भयो ३२ हे राजा इंद्र हे सो ताको नाम त्रसद्दस्यु धरत भयो जाते चोर जे रा
वणादिक ते कांपे हे युवनाश्व को बेटा राजा चक्रवर्ती मांधाता सो सात द्वीपन सहित पृथ्वी ताय इंद्र के तेज करिके
इकली पालन करत भयो ३३ आत्मा कों जानन वारो सो मांधाता बहुत ही नी है दक्षिणा जिन में असे जे यज्ञ तिन करके
सर्वदेवमय सर्वात्मा इंद्रीन करके न दीखे असे जे विष्णु तिने पूजत भयो हे ३४ राम
२४

द्रव्य मंत्र विधि यज्ञ यजमान रित्विज धर्म देश काल यह सर्व तदात्मक कहे हैं ३५ जहां ताई सूर्य उदै होत हैं तहां ताई अस्त होत हैं सो सब मांधाता को क्षेत्र कहे हैं ३६ मांधाता ने ससिबिंदु की बेटी बिंदुमती तामें पुरुकुत्स अंबरीष जोगी मुचकुंद ई तीन पुत्र जावत भयो ३७ तिन के पंचास ५० बहेन भई ते सोभर मुनि कूं पति करत भई जमुना के जल के भीतर बैठ के बडो तप करे हैं सो मैथुन धर्मी मत्स्यराज को सुख देख के सोभर के चाह भई नव मांधाता सूं एक कन्या मांगत भये ३८ सो मांधाता बोले है ब्राह्मण हां स्वयंवर में जो कन्या तुम्हें वरे ताय तुम अंगीकार करो ४० सो हां सुन विचारे यह स्त्रीन कूं

द्रव्यं मंत्रो विधिर्यज्ञो यजमानस्तथर्त्विजः धर्मो देशश्च कालश्च सर्वमेतद्यदात्मकं ३५ यावत्सूर्य उदेती स्म यावच्च प्रतितिष्ठति सर्वं तद्यौवनाश्वस्य मांधातुः क्षेत्रमुच्यते ३६ शशबिंदोर्दुहितरि बिंदुमत्यामधान्नृपः पुरुकुत्समंबरीषं मुचुकुंदं च योगिनं ३७ तेषां स्वसारः पंचाशत्सौभरिं वव्रिरे पतिं यमुनांतर्जले मग्नस्तप्यमानः परं तपः ३८ निर्वृतिं मीनराजस्य दृष्ट्वा मैथुनधर्मिणः जातस्पृहो नृपं विप्रः कन्यामेकामयाचत ४० सोप्याह गृह्यतां ब्रह्मन्कामं कन्या स्वयंवरे स विचिंत्याप्रियं स्त्रीणां जरठोऽयमसंमतः ४१ वलीपलित एजत्क इत्यहं प्रत्युदाहृतः साधयिष्ये तथात्मानं सुरस्त्रीणामभीप्सितं ४२ किं पुनर्मनुजेंद्राणामिति व्यवसितः प्रभुः मुनिः प्रवेशितः क्षत्रा कन्यांतःपुरमृद्धिमत् ४३ वृतः स राजकन्याभिरेकः पंचाशता वरः तासां कलिरभूद्भूयांस्तदर्थेऽपोह्य सौहृदं ४४

प्यारो नहीं वृद्ध है सुपेद केस हैं मांथो कांपे है याकूं कोन कन्या वरेगी यह जानि के राजा ने नाहीं करी पर मैं तो अपना कूं सिद्ध करूंगो ४१ देवतान की स्त्रीन कूं वांछित होय राजान की स्त्रीन कूं वांछित होय यामें कहा कहनो है ऐसो विचार करत भये ४२ द्वारपाल ने मुनी है सो कन्यान को जो अंतपुर तामें प्रवेश करायो पचास कन्याने एक ही वर कीयो ४३ तासो भर के अर्थ तिन कन्यान में बडो कलह होत भयो सौहृद यकू छोड के यह मेरे अनुरूप है तेरे नहीं है ऐसे लडत भई तिनतीमे हो चित्त जिनको ४४

भा॰न॰ सोसोर नअरुग्वेदकेपटनहारे अपारहैतपजिनकोताकीसमृद्धकरिकै वहमोल्यहैसामिग्रीजिनकै नानाप्रकारकेहैउप
२५ वनजिनमेनिर्मलहैजलजिनमें सौगंधिकजेकमलतेहैजिनमे बहुमोल्यसेया आसनभूषणवस्त्रस्नानचंदन
भोजनमालाइनकरकेयुक्तअलंकृतहै स्त्रीपुरुषजिनमेंगावैहै पक्षीभौंरावंदीजनजिनमेऐसेजेघरतिनमैंनित
कल्याणरूपकेरमतभये ४७ सप्तदीपवतीजोपृथ्वीताकोपतिमांधाता सोतासौभरकोग्रहस्थाश्रमदेखिकैविस्मितहोइकै
चक्रवर्तीसंपत्याकरकेयुक्तजोगर्वताकोत्यागकरतभयो ४८ ऐसेघरनमेंरेरतिजिनकीऐसेजेसौभरसोनानासुखन

ममानस्तपोनायंवडनिलश्रुतचेतसां सबहुचस्ताभीरपारणीयतप:श्रियानर्घपछदेषु गृहेसुनानोपवना
मलांबासर:सुसौगंधिककाननेषु ४६ महार्हसैय्यासनवस्त्रभूषणस्नानानुलेपाभ्यवहारमाल्यकैः स्व
लंकृतस्त्रीपुरुषेषुनित्यदारेमेनुगायद्विजभृंगवंदिषु ४७ यद्गार्हस्थ्यंतुसंवीक्ष्यसप्तद्वीपवतीपतिः विस्मितः
स्तंभंजहात्सार्वभौमश्रियान्विता ४८ एवंगृहेष्वभिरतोविषयान्विविधैःसुखैः सेवमानोनचातुष्यदाज्यस्तो
कैरिवानलः ४९ सकदाचिदुपासीनआत्मापन्हवमात्मना ददर्शबह्वृचाचार्योमीनसंगसमुत्थितं ५० अहो
इमंपश्यतमेविनाशंतपस्विनःसच्चरितव्रतस्य अंतर्जलेवारिचरप्रसंगात्प्रच्यावितंब्रह्मचिरंधृतंयत् ५१
संगंत्यजेतमिथुनव्रतिनांमुमुक्षुः सर्वात्मनानविसृजेद्बहिरिंद्रियाणि एकश्चरन्रहसिचित्तमनंतईशे

करकेविषयनकोसेवनकरततृप्तिनहीभयो जैसेअग्निघृतकीबूंदनकरतृप्तनहींहै ४९ सोकहूंसमै
बैठेमीनसंगतेउठोमनकेकारनतेअपनेतपकोनाशताकोदेखतभयो जोसौभरऋग्वेदीनकोआचार्यहै ४९
अहोतपस्वीसुंदरहैव्रतजाको ऐसोजोमैंताकोविनाशताकोदेखो जलकेभीतरमत्स्यकोजोप्रसंगताते बहु
तकालसूधारणाकोयोजोतपसोभ्रष्टहोतभयो ५० मुक्तिहोवेकीइच्छाजाकेसोमिथुनहैव्रतजिनकोसंगता
कोसबप्रकारत्यागकरे इंद्रिनकोविषयनछोडे एकहीविचरेएकांतमेरहेंईश्वरमैंचित्तलगावैसंगकरेतोईश्व

जलमें एकांतमें तपकरें है सो मत्स्यके संगतें पंचास पुत्र होत भये फिर पांच हजार होत भये या लोकके परलोकके मनोरथ
तिनकों जो अंत ताय नहीं प्राप्त होउं मायाके गुणनने हरी हैं मति जाकी विषेनमें है पुरमार्थ बुद्ध जाकी ५२ ऐसें घरमें वसत
कोई समें विरक्त होइकें संग छोड़केवनमें जात भये पतिहैं देवता जिनकें ऐसी नें जाकी स्त्री सो ताके पीछें जात भई ५३
वनमें देहकूं सुखावें ऐसो जो तीक्ष्ण तप ताय करिकें अग्निन करकें सहित जो आत्मा ताय परमात्मामें मिलावत भये
५४ हे महाराज ते स्त्री अपने पतिकी अध्यात्मकी जो गति ताय देखिकें तत्प्रभाव करकें पीछें जात भई जैसें सांत जो अग्नि

एकस्तपस्व्यहं मयांऽभसि मत्स्यसंगात्पंचाशदासमुतपंचसहस्रसर्गः नांतं व्रजाम्युभयकृत्यमनोरथानां माया
गुणैर्हृतमतिर्विषयेर्थभावः ५२ एवं सवैगृहे कालं विरक्तो न्यासमास्थितः वनं जगामानुययुस्तत्पत्न्यः
पतिदेवताः ५३ तत्र तप्त्वा तपस्तीक्ष्णमात्मकर्षणमात्मवान् सहैवाग्निभिरात्मानं युयुज परमात्मनि ५४ ताः स्व
पत्युर्महाराजा निरीक्ष्याध्यात्मिकां गतिं अन्वीयुस्तत्प्रभावेन अग्निं शांतमिवार्चिषा ५५ इति श्री भागव
ते नवमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ६ शुक उवाच मांधातुः पुत्रप्रवरो योंबरीषः प्रकीर्तितः पितामहेन प्रवृतो यौवनाश्व
स्तु तत्सुतः हारीतस्तस्य पुत्रोऽभून्मांधातृप्रवरा इमे १ नर्मदा भ्रातृभिर्दत्ता पुरुकुत्साय योरगैः तया रसातलं नीतो भुज

ताय ज्वाला जैसें जात हैं ५५ इति श्री भागवते नवमे षष्ठोऽध्यायः ६ सातईं अध्यायमें मांधाताकों वंस कहे हैं जा वंस
में पुरुकुत्स महरिचंद्र कों उत्तम जो आख्यान सो गाइ यो हैं १ शुकदेवजी कहैं हैं हे राजा मांधाताको श्रेष्ठ पुत्र जो अंबरीष कह्यो
सो युवनाश्वनें पुत्रभाव करकें गोद लीयो अंबरीषको बेटा यौवनाश्व भयो ताके हारीत भयो ये मांधाताके गोत्रमें प्रबल
होत भये १ कुपुरुकुत्सके अर्थ सर्पनें बहन जो नर्मदा सो दीनी तान मर्मदाने पुरुकुत्सकों रसातलमें प्राप्त कीयो जो नवड़ा
सर्पनके इंद्र ऐसे आगे धाते ने पठाई है २ विष्णुकी शक्तिको धरनवारो पुरुकुत्स सो वहां जे गंधर्व तिनें मारत

जवनागन तैं वरपायो सोयाचारित्रकौं स्मरण करैगो ताकूं सर्पनतैं भय नहीं होइगो पुरकुत्स कौं वेटा त्रसदस्यु भयो
ताकै अनरण्य भयो ताके हर्यश्व भयो ताकूं अरुन ताके वंधन भयो ४ ताके सत्यव्रत भयो सो त्रसंकु नाम विख्यात भयो
पिताके श्रापतें चांडाल भावकूं प्राप्त भयो विश्वामित्र के तेज करकै सरीर सहित स्वर्ग में गयो दीखवेहैं देवतानने नीचो मूंड कु
रकैं पटकौं पर वितुने वलूतें वही थाम दियो ५ त्रसंकु कौं वेटा हरिश्चंद्र भयो जाके निमित्त विश्वामित्र और वसिष्ठ इनको
युद्ध भयो विश्वामित्र हे सो राजा सूर्यको दस रणके छलकरके हरिश्चंद्र कौं स विश्वलेलायो सो मुनि के क्रोध की ये जे वः

गंधर्वात्मनधीनत्रववद्धान्वे विस्मृमार्त्तिवक नागाल्लब्धवरः सर्पादि भयं स्मरतामिदं ३ त्रसदस्युः पौरु
कुत्सो योऽनरण्यस्य हर्यश्वस्तत्सुतस्ततः तस्मादरुणोऽथ त्रिवंधना ४ तस्य सत्यव्रतः पुत्रस्त्रिशंकुरिति विश्रुः
तः प्राप्तश्चांडालतां सापाद्गुरोः कौशिकतेजसा ५ ससरीरो गतः स्वर्गमद्यापि दिवि दृश्यते पातितोऽवाक्शिरा देवैस्तेनैव
स्तंभितो बलात् ६ त्रैशंकवो हरिश्चंद्रो विश्वामित्रवसिष्ठयोः यन्निमित्तमभूद्युद्धं पक्षिणोर्बहुवार्षिकं ७ सोऽनपत्यो वि
षण्णात्मा नारदस्योपदेशतः वरुणं शरणं यातः पुत्रो मे जायतां प्रभो ८ यदि वीरो महाराज तेनैव त्वां यजे इति ॥
तथेति वरुणेनास्य पुत्रो जातस्तु रोहितः ९ जातः सुतो ह्यनेनांग मां यजस्वेति सोऽब्रवीत् यदा पशुर्निर्दशः स्यादथ
मेध्यो भवेदिति १० ज्ञात्वा दंतायजस्वेति स प्रत्याह हायसोऽब्रवीत् यदा पशोः स्युर्दन्तास्थमेध्यो भवेदिति ११

सिवाईनेकौ हित्रूकोटि होऊ सो विश्वामित्र वसिष्ठ के सापसौं यौं नुव गुला होऊ ऐसे हो के वहुत वर्ष लडे ७ सो हरिश्चंद्र
अपुत्र भयो तव नारदके उपदेशतें वरुणकी सरण गयो हे प्रभो मेरे पुत्र होई जो पुत्र होइगो तो हे महाराज ताही पुत्र कर
कै तेरी पूजा करूंगो ऐसे सरण गयो तव वरुणने कही तेरे पुत्र होऊ तव रोहित नाम पुत्र भयो ९ तव वरुण वोलो तेरे
वेटा भयो है हे राजा या करकै मेरी पूजा कर तव हरिश्चंद्र वोल्यो जव दस दिनाको होई तव पवित्र होयगो १० दस दिना
होपीछे वरुण आयके कहन भयो अव पूजा कर तव राजा वोल्यो याके दांतनि कै तैं जव पवित्र होयगो ११

जवदांत भये नवरुणवोलेनू अवयज्ञाकरयाकेदांतगिरेनवपवित्रहोयगो १२ जववाकेदांतगिरेनवरुणवोल्यो यज्ञाकर
यापशुकेफेरदांत आमैंनवपवित्रहोगो १३ फेरदांतभयेनवरुणवोल्योनू अवयज्ञकर राजावोलेहेवरुणजवकवचपे
हैरवेकेयोग्यहोईनवयहपशुपवित्रहोगो १४ ऐसेपुत्रमेंजोअनुरागनाकरिकैंरवेहवयों ऐसेराजाकोचित्तमोहनानाका
लकोंवंचनाकरतजोराजा मानैकहो जोवरुणसोनाईनाईकालकोपैडोदेषतभयो १५ रोहितहैसोमोकरकें
वरुणकीयज्ञाकरैंगोयहपिताकोंकर्मजानिकेंप्राणवचायकेलीयेंधनुषहाथमेलेकेवनमेंजातभयो १६ कोधकोप

यशोर्निपतितादंतायज्ञस्वेतान्सोब्रवीत् यदायशोपुनर्दंताजायंतेथपशुर्मेधः १२ पुनर्जातायज्ञस्वेतीस
मत्याहाथसोब्रवीत् सानाहूकोयदाराजेनन्योयपशुश्चसूची १३ इतिपुत्रानुरागेणस्नेहयंत्रीनचेतसा कालं
वंचयतातंतःउक्तोदेवस्तमैक्षत १४ रोहितस्तदभिप्रज्ञापितुःकर्मचिकीर्षितं प्राणप्रेप्सुर्धनुष्पाणिररण्यानी
प्रत्यपद्यथा १६ पितरंवरुणग्रस्तंश्रुत्वाजातमहोदरं रोहितोग्राममेयायतमिंद्रस्तवपैधत १७ भूमेःपर्यट
नंपुण्यंतीर्थक्षेत्रनिसेवणैः रोहितायादिशच्छक्रःसोप्यरण्येवसत्समां १८ एवंद्वितीयतृतीयेचतुर्थेपंचमेतथा
अभ्येत्याभेत्यस्थविरोविप्रोभूत्वाहवृत्रहा १९ षष्ठंसंवत्सरंतत्रचरित्वारोहितंपुरी उपव्रजन्नजीगर्तादक्रीणान्म

जोवरुणतानेग्रस्योवडोभयोपयघ्योरैपेटजाकोंकर्मजानिकें ऐसोजोपितातायसुनिकैंरोहितहैसोगामवेंग्रा
मनलग्योतवइंद्रमनकरतभयो १७ तीर्थक्षेत्रईनकेसेवनकरकेंभूमिमैंपुन्यकरनडोलेऐसेइंद्ररोहित
केअर्थउपदेशकरतभयो सोरोहितवनमैंएकवर्षवसतभयो १८ ऐसेहीदूसरेवर्षतिसरेचौथेपांचमेंवर्षवृद्धो
ह्मणरूपवनकेंइंद्रआयकेमनैकरतभयो १९ रोहितछटवोवर्षवनमेंवीततकरअजगर्तानेमध्यमजोपुत्रताकोमो
ललेकैंपुरीमैंआवतभयोहै २०

सुनसेफ जाकौं सो ना मय कूं नाय पिता के अर्थ दैकें नमस्कार करत भयो २१ नव हरिश्चंद्र पुरुषमेध करिकैं वरुणादिक जे देवता तिनै प्रसन्न भयो नव वह सानै छोडो हैं उत्तर जाको ऐसो होत भयो २२ ताय ज्ञमें विश्वामित्र होता होत भयो जमदग्नि अध्वर्यु होत भये वसिष्ठ ब्रह्मा भये आयस्य मुनी सो उद्गाता भये २३ इंद्र है सो प्रसन्न होयकें हरिश्चंद्र कों सोने को रथ देत भयो सुनसेफ को जो माहात्म्य ताय आगें कहेंगे २४ भार्या सहित जो राजा ताको सत्य सार धृत ताय देखिकैं विश्वामित्र बहुत प्रसन्न होकें अविहत ज्ञान तिताय देत भयो २५ मन है ताय पृथ्वी में धारण कीयो पृथ्वी को जल में मिलाय जल को तेज में तेज कूं पवन में पव

सुनसेफं पशुं पित्रे प्रदाय समवंदित ततः पुरुषमेधेन हरिश्चंद्रो महायशाः २१ मुक्तोदरोयजे देवान्वरुणादीन्महत्कथा विश्वामित्रोभवत्तस्मिन्होता चाध्वर्युरात्मवान् २२ जमदग्निरभूद्ब्रह्मा वसिष्ठोऽयास्यसामगः तस्मै तुष्टो ददाविंद्रः सातकौंभमयं रथं २३ शुनःशेपस्य माहात्म्यमुपरिष्टात्प्रवक्ष्यते सत्यं सारं धृतिं दृष्ट्वा सभार्यस्य च भूपतेः विश्वामित्रो भृशं प्रीतो ददावविहितां गतिं मनः पृथिव्यां तामद्भिस्तेजसापोनिलेन तत् २५ खे वायुं धारयंस्तच्च भूतादौ तं महात्मनि तस्मिन्ज्ञानकलां ध्यात्वा तया ज्ञानं विनिर्दहन् २६ हित्वा तां स्वेन भावेन निर्वाणसुखसंविदा अनिर्देश्याप्रतर्क्येण तस्थौ विध्वस्तबंधनः २७ इती भागवते नवमस्कंधे सप्तमोध्यायः ७ हरितो रोहितसुतश्चंपस्तस्माद्विनिर्मिता चंपापुरी सुदेवोतो विजयो तस्य चात्मजः १ पवन कूं आकास में आकास कों अहंकार में अहंकार कूं महत्तत्व में मिलायकें ता में ज्ञानकला है ताय ध्यान करकें ता ज्ञानकला करकें अज्ञान कूं नाश करत ता ज्ञानकला कूं छोडकें निर्वाण सुख की जो संपत्ति ताकरकें छुट गयो है बंधन जाको ऐसो तो के अनिर्देश्य अप्रतर्क्य स्वरूप ताकर कें स्थित होत भये २७ इति श्री नवमे सप्तमोध्यायः ७ आठ के अध्याय में रोहित को वंश कहे हैं जा वंस में सगर राजा भये जाके बेटा कपिल देवजी के अपराध ते जर गये १ हरिश्चंद्र कैं तें राजन रोहित को बेटा हरित भयो ताके चंप भयो जाने चंपापुरी वसाई ताके सुदेव ताके विजय भयो १ ताके भरुक भयो ताके वृक भयो ताके बाहुक भयो सो वृक के वैरी नैं भूमि हर लीनी तब भार्यान कूं संग लेकें वन में

हद्रहोके मस्तुहोकें मस्तुकेंप्राप्त भयो लववरां नीपीछे मरन लगी नववरे वीलैं गर्भ जानि के मनें करी ३ जाकी सोतन ने गर्भ जानि कें
अन्नमें मिलाय कें विष यदीयों सो बालक विष करके सहित जन्म लेन भयो यातें वाको नाम सगर होन भयो वडो है
यप्राज्ञाको ४ सगर है सो चक्रवर्ती होन भयो जाके वेटाने सागर कीयो सो सगर नाल यवन घ मलेछ सक हैहै इनेगु
रुके वचन करकें मारो है कितनन कें न मारके विकृत रहे वेस जिनको ऐसे करत भयो ऐसे कीये ५ डिनकी ए कोई हाढीस
लुके धारन वारे कीये कोई एक मुले रहे केस जिन के कोई एक अर्धमुंडिन कीये कोई एक भीतर नहीं है वस्त्र जिन के ऐसे

भरुकस्तत्सुतस्तस्माद्बृहकस्तस्यापि वाहुकः सोरिभिर्हृतभूराज्या सभार्यो वनमाविशत् २ वृद्धं तं पंचतां प्राप्तं महिष्य
नुमरिष्यति आवेरीज्ञानतात्मानं प्रजावन निवारितः ३ आज्ञायास्यै सपत्नीभिर्गरोदत्तोंधसा सह सहतेनैव स
जातः सगराख्यो महायशा ४ सगरश्चक्रवर्त्यासीत्सागरोयत्सुतैः खातः तालजंघान्यवनान् सकान्हैहय वर्वरान्
अवधीद्गुरुवाक्येन चक्रे विकृतवेषिणः मुंडाञ्छ्मश्रुधरान्कांश्चिन्मुक्तकेशार्द्धमुंडितान् ६ अनंतर्वाससः कांश्चि
दवहिर्वाससोपरान् सोश्वमेधैरयजत सर्ववेदसुरात्मकं ७ और्वोपदिष्टयोगेन हरिमात्मानमीश्वरं तस्योत्सृष्ट
पशुं यज्ञे जहाराश्वं पुरंदरः ८ सुमत्यास्तनया दृप्ताः पितुरादेशकारिणः हयमन्वेषमाणास्ते समंतान्न्यखनन्मही ९॥

कीये नहीं वाहर है वस्त्र जिनकें ऐसे कीये ६ सो सगर और्वने उपदेश कीयो जो योग ताकर कें अश्वमेध न करके सर्वे
देवनारूप जो आत्मारूप जो हरि तिनकी पूजा करत भयो ७ ताके यज्ञ में छोडो जो घोडा ता यइंद्र हरत भयो सुमती के वे
टा पिता की आज्ञा के करन वारे गर्वयुक्त ने घोडा ढूंढवे कूं गये तिनने चार्यो ओर न खनन करकें पृथ्वी को खोदन भये ८
पूर्व उत्तर दिसा को जो कोन तामे कपिल देव जी के निकट घोडा देखन भये १० यह घोडा को हरन वारो चोर
है आंखि मूंद कें वेठो है याकूं मारो मारो ऐसे कहि साठ जे सारे ६० साठ हजार आपुहली लेके और दोरत भये
तासमें मुनी जो कपिल देव ते सो आंख खोलत भये ११ इंद्र ने हरयो है चित्त जिनको वडे न को जो अपरा

भा-न- धनाकरकैं नाकरकैनखूसगरकेवेटा अपनेसरीरनेनिकरीजोअग्नि ताकरिकैं छणमात्रमैं भस्म होयगये १२ हे
२८ राजा सगरकेवेटा कपिलदेवजीकै कोपकरकेजरे यहसाधुवादनहीहै शुद्धसत्त्वतैमूर्तिजिनकी जगतकोपवित्र
करेहै आत्माजिनको जिनमेरोसमयजो तमसोकैसेसंभावनाकरीएहै जैसेआकासमेभूमिकीरजकैसेसंभा
वनाकरीएहै १३ जिनैंकरके मुमुक्षुजोपुरुषसो दुरत्ययमृत्युकोमार्गसंसारसमुद्रतापनरैहै सोसर्वज्ञसवन

एषवाहरश्चोर: आस्तेमीलितलोचन: हन्यतांहन्यतांपाप:इतीषष्ठसहस्रिण: उदायुधाअभियपुरुन्मिष
तदामुनि ११ सरीराग्निनातावन्महेंद्रहृतचेतसः महद्व्यतिक्रमहतानस्मसादभवन्क्षणात् १२ न
साधुवादोमुनिकोपभर्जितानृपेंद्रपुत्राइतिसत्वधामनि कथंतमोरोषमयंविभाव्यतेजगत्पवित्रात्मनि
खेरजोभुव: १३ यस्येरितासांख्यमयीदृढेहनौर्ययामुमुक्षुस्तरतेदुरत्ययं भवार्णवंमृत्युपथंविपश्चित्परा
त्मभूत:स्यकथंपृथङ्मति: १४ योसमंजसइत्युक्त:सकेसिन्यानृपात्मजा: तस्यपुत्रोंसुमान्नामपितामह
हितेरत: १५ असमंजसआत्मानंदर्सयन्नसमंजस: जातिस्मर:पुरासंगाद्योगीयोगाद्विचालित: १६ आच
रन्गर्हितंलोकेज्ञातिनाकर्मविप्रीयं सरय्वांक्रीडतोबालान्प्रास्यदुद्वेजयञ्जनं १७ औरहिनारायण:

के आत्माजिनकेवैरीमित्रयजोभेददृष्ट सोकैसेहोहै १४ जोअसमंजसऐसेकह्यो सोकेसनीकोवेटाहे सोराजाके
देहतेभयोहै ताकोपुत्रअंसमानहे सोसगरकेहितकरवेमैरतहै १५ असमंजसजोआत्मातापदिखावेहै ता
मेअसमंजसहेपहलेजन्ममैंयोगीहो संगतेभ्रष्टतानभयो अबपहलोस्मरणकरतसंगडरकरवेकेलीयेअसमंजस
को उद्वेग दनलोकमेंनिंदितज्ञातिनकोजोविप्रीयकर्मताकोआचरनकरत खेलतजोवालकतिनेसरजूमेंप्रेकत १९

ऐसो है त्यनजाको स्नेह भय असमंजस सो पिताने त्यागकीयौं तव योगे श्चर्य्य करके जे बालक दुवाये हैं तिन्ने दिखायके जान भयो १८
सब रे अयोध्यावासी फेर आये जे बालक तिन्नू देखके विस्मय कू प्राप्त भये राजाहु सो दुख कू प्राप्त भयो १९ घोडा ढूंढवे के लीये भेज्यो अंस
मान सो काकाने खोदे जे गढेला तिन को मार्ग ताय जात भयो भस्म के समीप घोडा देखतो भयो २० तहां वैठे कपिल है नाम जिनको
ऐसे जो भगवान मुनि तिनने देखके सावधान है मन जाको हाथ जोर के नम्र होके अस्तुत करत भयो २१ अंसमान है सो कहतो है हे प्रभु हे सो
उ समाधि कीजे युक्ति तिनकर के आपते पर मेस्वर जो तुम ताय अबहु नही देखे हैं और कहां ते हम तुमको देखेंगे जे हम साके मन सरीर बुद्धि इ

एवं त्यक्तः पित्रा स्नेह भयो ह्यं योगैश्वर्येण वालांस्तान् दर्शयित्वा ततो ययौ १८ अयोध्यावासिनः सर्वे
वालकान् पुनरागतान् दृष्ट्वा विस्मिरे राजन् राजा चाप्यन्वतप्यत १९ अंशुमांश्चोदितो राज्ञा तुरंगान्वेषणे य
यौ पितृव्यखातानुपथं भस्मांत ददृशे हयं २० तत्रासीनं मुनी वीक्ष्य कपिलाख्यमधोक्षजं अस्तौत् समाहितम
ना प्रांजलिः प्रणतो महान् २१ अंसमान उ० न पस्यति त्वां परमात्मनो जनो न बुध्यते द्यापि समाधियुक्तिभिः कु
तोपरे तस्य मनः सरीर धी विसर्गसृष्टा वयमप्रकासा २२ ये देहभाजस्त्रिगुणप्रधाना गुणान्विपस्यंत्युत वा तम
श्च यन्मायया मोहितचेतसस्ते विदुः स्वसंस्थं न वहिः प्रकासा २३ त्वं ता महं ज्ञानघनं स्वभावप्रध्वस्त मायागुणभेद मोहैः
सनंदनाद्यैर्मुनिभिर्विभाव्यं कथं विमूढः परिभावयामि २४ प्रसांतमायागुणकर्मलिंगमनामरूपं सदसद्विमुक्तं ज्ञानो

न करके मे नाना स्वर्ग तिनमें स्रजे है तिन मेंसू विजो हमते करत देखेंगे। २२ जे देहधारी त्रयगुण जाबुधि सो है प्रधान जिनकी
याते वाहर देखे ज्ञान जिनको याकी माया करके मोहित है चित जिनको ते तुम सही को देखे हैं अपने भीतर स्थित तुम ताय नही जा
ने हैं २३ स्वभाव करके ध्वस्त कीये हैं माया गुण निमित जो भेद मोह ते जिन्ने ऐसे जे सनंदनादिक मुनि तिनकर के विचा
र करवे कू योग्य छे ज्ञान हे मूर्ति जिनकी ऐसे जे तुम ताय मूर्ख मैं केसे विचार करूं २४ प्रसांत माया गुण तिन कर के जे कर्म स्व
राशिक लिंग जे ब्रह्मादिक नहीं है रूप जाके कार्य कारण तिन कर के मुक्त पाते नहीं है नाम रूप जिनकू ज्ञान के उपदेस के लीये भ घर
कीयो है देह जिन्ने ऐसे जे पुराण पुरुष तुम ताय हम नमस्कार करे है २५ हमारी माया कर के रचो॥

जो लोक नामें वस्तुवुद्धि करिकें काम लोभ ष्यरखा मोह इन करकें भ्रमन रहे चित्त जिनके ते सगरे ग्रहादिकन में भ्रमे हैं २६ हे सब
भूतनके आत्मा हे भगवन् काम कर्म इंद्री इन कूं आश्रे है ठ ऐसो जो र मारो मोह पास सो तु ह्मारो दर्शन ते करि टि गयो २७ शुक
देवजी कहे हे राजेन् ऐसे गायो है प्रभाव जिनकै ऐसो जो भगवान् कपिल मुनि सो वुद्ध करकें अंसुमान पे अनुग्रह करत भए वो
लो २८ हे वेटा यह घोडा ले जा तेरो पितामह तेरो जो सगर ताको है जे तेरे पितर जरे हैं ते गंगाजल कूं पाएं है ऐसे ~~अरु~~ जलकूं नतीपो
ग्र है २९ ऐसे अंसुमान है सो कपिलदेवजी की परिक्रमा दे के शिर करकें प्रणाम कर घोडा लेके आवत भयो सगर है सो ता घोडा कर

त्वन्मायारचितेलोके वस्तुवुध्याग्रहादिषु भ्रमंती काम लोभ ईर्ष्या मोह विभ्रांतचेतसः २६ अद्यनः सर्वभूतात्मन् कामक
र्मेंद्रियाशयः मोहपाशो दृढश्छिन्नो भगवंस्तवदर्शनात् शुक उ° इत्थं गीतानुभावस्तं भगवान् कपिलोमुनिः अंशुमंत
मुवाचेतमनुग्रह्य धियानृपः श्रीभगवानुवाच॥ अश्वोयं नीयतां वत्स पितामह पशुस्तव इमेच पितरो दग्धा गंगांभो
र्हंतिनेतरं २९ तं परिक्रम्य सिरसा प्रसाद्य हयमानयत् सगरस्तेन पशुना क्रतुशेषं समापयत् ३० राज्यं अंशुमति न्य
स्य निस्पृहो मुक्तवंधनः और्वोपदिष्टमार्गेण लेभे गतिमनुत्तमः ३१ इती भागवते नवमे अष्टमोध्याय ८ शुक उवाच:
अंशुमंस्तप तेपे गंगानयन काम्यया कालं महान्तं नाशक्नोत्ततः कालेन संस्थितः १ दिलीपस्तत्सुतस्तद्वदश
क्तः कालमेयिवान् भागीरथस्तस्य पुत्रस्तेपे स सुमहत्तपः २ के यज्ञ को सेष ता यज्ञ समाप्त करत भयो ३० छुट गये

हैं वंधन जिनकें निस्पृह जो सगर सो अंसुमान कूं राज्य देकें और्वी ऋषि ने उपदेश कीयो जो मार्ग ताकर कें उत्तम जो गति ता
य प्राप्त भयें ३१ इती श्री नवमे अष्टमोध्याय ८ नो के अध्याय में अंसुमान को जो यश सो खट्वांग राजा तापर्यंत वर्णन करो
हैं ताको गाती जो भागीरथ जो भूतल में गंगा लावत भयो १ शुकदेवजी कहे हे राजा अंसुमान है सो गंगा के लायवे के ली
यें वहुत वर्ष तईं तप करत भयो पर गंगा के लायवे कूं समर्थ न भयो काल कर के मर्यो १ तैसे ई ताको वेटा दिलीप सो ऊ
असमर्थ भयो काल कूं प्राप्त भयो ताको पुत्र भागीरथ भयो सो वडो तप करत भयो २

ओर औरमैभगतलमैकज्ञाउश्री ३

ताभागीरथ प्रति देवी जो गंगा सो प्रसन्न होके दर्शन देत भई तो कूं वर देउंगी ऐसे गंगा ने कह्यो तब राजा भागीरथ अपने अभि
प्राय ताय करत भयो ३ नूतन तल में चलत तब गंगा बोली आकास तें गिरी जो मैं ता के वेगकूं पृथ्वी तल में कोई धारण करेगो जो कों
ई धारण न करेगो तो हे राजा भूतल कूं फोर के रसातल कूं जाउंगी पापी जे लोक सो मो में पाप धोमेंगे ता पापकूं मैं कैसे धोउंगी ता में
उपाय विचारो ५ तब भागी रथ बोल्यो सर्वस्य त्याग के करनवारे सांत ब्रह्मनिष्ठ लोकन के पवित्र करन वारे जे साधु ते अंग संग तें
तेरो पाप नाश करेंगे तिनसाधन में पापन के नास करन हारे जे हरि सो तेरे वेगकूं धारण करेंगे जिन में विश्व औत प्रोत है: जैसें

दर्शयामास तं देवी प्रसन्ना वरदास्मि ते इत्युक्ता: स्वमभिप्रायं ससंसावनतो नृपा: ३ कोपधारयता वेगं पतंत्या मे महीतले
अन्यथा भूतलं भित्त्वा नृप यास्ये रसातलं ४ किं चाहं न भुवं यास्ये नरा मय्यामृजंत्यघं मृजामि तदघं कुत्र राजा तत्र विचिंत्यतां ५
राजोवाच: साधवो न्यासिन: शांता: ब्रह्मिष्ठा लोकपावना हरंत्यघं तेंगसंगात्तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरि: ६ धारयिष्यति ते वेगं रु
द्रस्त्वात्मा शरीरिणां यस्मिन्नोतमिदं प्रोतं विश्वं शाटीव तंतुषु ७ इत्युक्त्वा स नृपो देवं तपसातोषयच्छिवं कालेनाल्पीयसा
राजंस्तस्येश: समतुष्यत: ८ तथेति राज्ञाभिहितं सर्वलोकहित: शिवा: दधारावहितो गंगां पादपूतजलां हर: ९ भगी
रथ: स राजर्षिर्निन्ये भुवनपावनीं यत्र स्वपितॄणां देहा भस्मीभूता: स्म शेरते ता: १० रथेन वायुवेगेन प्रयांतमनुधावती
देशान्पुनंती निर्दग्धानासिंचत्सगरात्मजा: ११

ते मून में वस्त्र औत प्रोत है ७ ऐसे कहि के राजा भागीरथ तप करके महादेवजी कूं प्रसन्न करत भयो ता भागीरथ पे थोरे काल न करैं
शिवजी प्रसन्न होत भए ८ राजा ने कह्यो ता पै अंगीकार करके सब लोकन में हितकारी जो शिवजी सो सावधान होके हरि के चरन
कमलन करके पवित्र है जल जाको ऐसी जो गंगा ताय माथे पै धारण करत भए ९ राजर्षि जो भागीरथ सो भुवनपावनी जो गंगा ता
य लावत भयो जहां पितरन के देह भस्म भये हैं १० पवन सौं पूर्ण है वेग जाको ऐसो जो रथ ता करके जाते जो ऐसो जो भागीरथ ता के पीछे दौ
री जात जो गंगा सो देशन कूं पवित्र करत जरे जे सगर के बेटा तिन पे पावत भई ११ जा गंगा के जल कौं जो स्पर्श मात्र ता करि के आल

भस्मीभूत जो अंग गंगा कों जो संग ताकरकें सगर के बेटा स्वर्ग कूं जात भए जे श्रद्धा करकें व्रत धारन करिकैं गंगादेवी कों सेवन
करे हैं ते स्वर्ग कूं जाइंगे तामैं कहा आश्चर्य है १३ गंगाजी कों जो इतो माहात्म्य कह्यो सो परम आश्चर्य नहीं है हरि के चरणार
विंद ते भई है जो तारिसें संसार के काटन वारे हैं १४ तिन भगवान में श्रद्धा करिकैं मन प्रवेश करकें निर्मल जे मुनि तैसें त्याज्य है
बंधन ता पीछें उदकें तत्काल तिन के रूप कूं प्राप्त भए १५ भागीरथ ते श्रुत होत भयो ताके नाभ पर होत भयो ताकें सिंधुद्वीप
होत भयो ताके अयुतायु होत भयो १६ ताके नल को सखा रितुपर्ण होत भयो जो नल तें चौसर की जो विद्या ताय प्राप्त भयो नल कें

यज्जलस्पर्शमात्रेण ब्रह्मदण्डहता अपि सगरात्मजा दिवं जग्मुः केवलं देहभस्मभिः १२ भस्मीभूताङ्गसङ्गेन
स्वर्याताः सगरात्मजाः किं पुनः श्रद्धया देवीं ये सेवन्ते धृतव्रताः १३ न ह्येतत् परमाश्चर्यं स्वर्धुन्या यदिहोदितं अनन्तच
रणाम्भोजप्रसूताया भवच्छिदः १४ संनिवेश्य मनो यस्मिन् श्रद्धया मुनयोऽमलाः त्रैगुण्यं दुस्त्यजं हित्वा सद्यो
याता स्तदात्मतां १५ श्रुतो भगीरथाज्जज्ञे तस्य नाभोऽपरोऽभवत् सिन्धुद्वीपस्ततस्तस्मादयुतायुस्ततोऽभवत् १६
ऋतुपर्णो नलसखो योऽश्वविद्यामयान्नलात् दत्त्वाक्षहृदयं चास्मै सर्वकामस्तु तत्सुतः १७ ततः सुदासस्तत्सु
तो मदयन्तीपतिर्नृप आहुर्मित्रसहं यं वै कल्माषाङ्घ्रिमुत क्वचित् १८ वसिष्ठशापाद्रक्षोऽभूदनपत्यः स्वकर्मणा राजोवाच
किंनिमित्तो गुरोः शापः सौदासस्य महात्मनः एतद्वेदितुमिच्छामः कथ्यतां न रहो यदि १९ श्रीशुक उवाच सौदासो मृगयां किंचिच्चरन्
रक्षो जघान ह मुमोच भ्रातरं सोऽथ गतः प्रतिचिकीर्षया २०
अश्व की जो परख वा के खेल की विद्या देत भयो ता ऋतुपर्ण के बेटा सर्वकाम भयो १७ ता तें सुदास भयो ते राजा ताको बेटा सौदास भयो सो मदयंती
को पति है जाकूं मित्रसह कहे हैं कवहूं एक वाकूं कल्माषांघ्र कहे हैं वसिष्ठ को जो शाप ता तें राक्षस होत भयो अपने कर्म करिके अपुत्री
भयो १८ राजा पूछे है महात्मा जो सौदास ताकूं गुरु को शाप भयो यह हम जानवे की इच्छा करे हैं जो रहस्य होइ तो कहो १९ शुकदेवजी
बोले हैं राजा सौदास सिकार खेलते कोई एक राक्षस नाय मारत भयो ताकूं भैया कूं छोड़ देत भयो सो भैया राजा सूं प्रतिकार करवे

सोराजाकेउरेकरवेकैसीयेरसोईयाकौंरूपधरकैंघरमैरहतभयौं सोजनकीदेईछाजिनकेंग्रैसेंजेगरु जिनकेप्रर्थमनुष्यकौमास
पकायकेल्यावतभयौं २१ स्वायवेकौंप्रजोग्यवहमनुष्यकामासनायपरोसोदेषिकैंजोक्रुद्धभयोजोवशिष्ठसोराजाकोसापदेतभए तुमनुष्य
मासखवावैहैयातेराक्षसहोहु २२ फेरजोक्रमैराक्षसनेकीयोसुनायजानिकैतासापकुंवारेवर्षकौंकरतभए २३ तोउराजाहाथमैजलले
केगुरुकौंसापदेवेकुंउद्यतहोतभयौं तवमदयंतीजोरानीताकैमनेकीयौं तवसापकोजोजलताकुंअपनेपावनपैडारतभयौं ह्रिसाय
कासपछीसवजीवमयहैं यातेंग्रोरठोरनडारो २४ राक्षसभावकौंप्राप्तिभयौ पावनमैकल्मसताकूंप्राप्तिभयौं मैउनकोसमैवनमैवसैहैं

सचिंतयन्नघेराजः स्वदेहस्यपुरोगतं गुरुवेभोजनं मायात्यक्तान्निन्येनराभिषं २१ परिवेष्यमाणं भगवन्वसिष्ठोवाभक्ष्य
मंजसा राज्ञानमशापक्रुद्धोरक्षोह्यंवैभविष्यसि २२ रक्षाकृतं तद्विदित्वा चक्रेद्वादशवार्षिकम् सोप्ययोजलमादाय
यागुरुंप्रसुंसमुद्यतः २३ वारितोमदयंत्यापोरुषाःसीपादयोजैतौ दिशःखमवनिंसर्वपश्यन्जीवमयंनृपः २४
राक्षसोभावमापन्नाःपादेकल्मषतांगतः व्यवायकालेददृशेवनौकोदंपतिद्विजौ २५ क्षुधार्त्तोजगृहेविप्रंतत्प
त्न्याहाकृतार्थवत् नभवान्राक्षसःसाक्षादिक्ष्वाकूणांमहारथा २६ मदयंत्याःपतिर्वीरः नधर्मकर्तुमर्हसि देहमे
पत्यकामायाअकृतार्थपतिंद्विजम् २७ देहोयंमानुषोराजन्पुरुषस्याखिलार्थदा तस्मादस्यवधोवीरसर्वार्थ
वधउच्यते २८ एषहीब्राह्मणोविद्वांस्तपःशीलगुणान्वितः ॥ आरिराधयिषुर्ब्रह्ममहापुरुषसंज्ञितम् सर्वभूतार्थमा

ब्राह्मणब्राह्मणीतिनदेषतभयौं २५ भूषोजोराजासोब्राह्मणकूंपकरलेतभयौं ब्राह्मणीहैसोदीनह्वैकैवोलतभई तूराक्षसत
राक्षसनहीहै साक्षातईक्ष्वाकुकुलकेमहारथीहैं मदयंतीकेपतिहो हेवीरअधर्मकरवेकुंनहीयोग्यहौ पुत्रकीइछाजाकैंग्रैसी
जोमैंताकैंनहीसमाप्तिहेरतिजाकीग्रैसोजोपतिब्राह्मणतायदे २७ हेराजायतजोमनुष्यदेहसोपुरुषकूंसवग्रर्थकौदेनवारोहै
तातेयाकोजोवधसोहेवीरसर्वथाकहिवेकुंजोग्यनहीहै २८ यतब्राह्मणविद्वानहैतपस्वीशीलगुणकरकेउत्कृष्टहै महापुरुषजो
ब्रह्मताकीग्राराधनकरवेकीइछाकरैहै जौसमस्तभूतनमैग्रात्माभावकरिकेंगुणनकरिकेंप्रेतरहितहै २८

भा·न· सोयह ब्रह्मऋषिन में श्रेष्ठ राजऋषिन में उत्तम जो तुम तातें कैसे वध कू जोग्य हो हे धर्मज्ञ जैसे पुत्र हे सो पिता के वध करवे कूं कैसे जोग्य है ३०
२१ सो यह साधु निस्पाप सो वेदत्रई को वक्ता ताके वध कूं कैसें सब तुम मानें हो जैसे गाय के वध कूं कैसें जोग्य सन्मत मानियें ३१ जो पहलें तुम भक्षण करोगे तो प्र
थम मेरे खाय लेउ तुम प्रापजो मैं सो जा बिना एक क्षण न जीउंगी ३२ ऐसें करुणामय वचन कहते अनाथ सी विलाप करते ताके देखत साप सें
मोहित जो सो दास सो खाय जात भयो जैसे बाघ पशु कूं खाय जाय है ३३ ब्राह्मणी ने सोग भी धान कों कर न वारो राक्षस ने भक्षण कीयो ताप देषि
अपनो सोच करत क्रोध करि के जा कूं साप देत भई ३४ हे पापी काम करि के आरत मो में ताको पति तैंने खायल्यो तातें हे मूर्ख तेरी है मृत्यु आधा

सोयं ब्रह्मर्षिवर्यस्ते राजर्षिप्रवराद्विभो कथमर्हति धर्मज्ञ वधं पितुरिवात्मजः ३० तस्य साधोरपापस्य भ्रूणस्य ब्रह्मवादिनः कथं
वधं यथा बभ्रोर्मन्यते सन्मतो भवान् ३१ यद्ययं क्रियते भक्षस्तर्हि मां खाद पूर्वतः न जीविष्ये विना येन क्षणं च मृतकं यथा ३२ त
एवं करुणभाषिण्या विलपन्त्या अनाथवत् व्याघ्रः पशुमिवाखादत् सौदासः शापमोहितः ३३ ब्राह्मणी वीक्ष्य दिधिषुं पुरुषादेन
भक्षितं शोचन्त्यात्मानमुर्वीशमशपत् कुपिता सती ३४ यस्मान्मे भक्षितः पाप कामार्तायाः पतिस्त्वया तवापि मृत्युराधानाद
कृतप्रज्ञ दर्शितः ३५ एवं मित्रसहं शप्त्वा पतिलोकपरायणा तदस्थीनि समिद्धेऽग्नौ प्रास्य भर्तुर्गतिं गता ३६ विशापो द्वादशा
ब्दान्ते मैथुनाय समुद्यतः विज्ञाप्य ब्राह्मणीशापं महिष्या स निवारितः ३७ अत ऊर्ध्वं स तत्याज स्त्रीसुखं कर्मणाप्रजाः वसिष्ठ
स्तदनुज्ञातो मदयन्त्यां प्रजामधात् ३८ सा वै सप्त समा गर्भमबिभ्रन्न व्यजायत जघ्नेऽश्मनोदरं तस्याः सोऽश्मकस्तेन कथ्यते ३९

नते है खाइहै ३५ ऐसें मित्रसह कूं साप देकें पति लोक करती है प्राप्त जाकें ऐसी जो ब्राह्मणी सो ब्राह्मण के अस्थि हैं तिन जराय कें अग्नि में भर्ता
की जो गति ताय प्राप्त भई ३६ बारह वर्ष पीछें गयो है साप जाको ऐसो जो राजा सो मैथुन करवे कूं उद्यत भयो तब रानी ने ब्राह्मणी को सा
प जानि कें मने कीयो ३७ ताते पीछें स्त्री सुख को त्याग करत भयो ऐसें कर्म करि कें अपुत्र भयो राजा ने आज्ञा दीयो जो वसिष्ठ सो मदयन्ती
में गर्भ राखत भयो ३८ सो रानी सात वर्ष ताई गर्भ को धारण करत भई बालक भयो नहीं तब वसिष्ठ जी रानी के उदर कूं पथ्थर करि के मारत
भए तब लरका भयो सो अश्मक नाम करि कह्यो ३९

अस्मकतें मूलक होत भयो जो स्त्रीने रक्षा कीयो याते नारीकवच नाम होत भयो नक्षत्री पृथ्वीमें क्षत्रीनको मूलजर भयो
याते मूलक कहो ताते दशरथ भयो ताते एडविड पुत्र भयो ताते राजा विश्वसह भयो ताते चक्रवर्ती षड्ग भयो ५१ जो षड्ग देवतानें प्रार्थ
नाकीयो सो दैत्यन कुं मारत भयो युद्धमें दुर्जय भयो दोय घडी अपनी आयु जानिकें पुरमें आयकें परमेश्वरमें मन धारन करत भयो ५२ मो
कुं कुलदेव जो ब्राह्मण ताते अपने प्राणहुं प्यारे नही पुत्र प्यारे नही सपत्स पृथ्वी राज्य स्त्री ये प्यारे नही ५३ बालक अवस्थाहुमें अधर्म
में मेरी मति कबहु नही भई है उत्तम है यश जिनको असे जे हरि तिनतें और कछु वस्तुमें नही देखत भयो ५४ त्रैलोकीके ईश्वर

अस्मकान्मूलको जज्ञे यः स्त्रीभिः परिरक्षितः। नारीकवच इत्युक्तो निःक्षत्रे मूलकोऽभवत् ५० ततो दशरथस्तस्मात् पुत्र ऐडविड
स्ततः राजा विश्वसहो यस्य खट्वाङ्गश्चक्रवर्त्यभूत् ५१ यो देवैरर्थितो दैत्यानवधीद्युधि दुर्जयः मुहूर्तमायुर्ज्ञात्वैत्य स्व
पुरं संदधे मनः ५२ न मे ब्रह्मकुलात्प्राणाः कुलदैवान्न चात्मजाः न श्रियो न मही राज्यं न दाराश्चातिवल्लभाः ५३
न बाल्येऽपि मतिर्मह्यमधर्मे रमते क्वचित् नापश्यमुत्तमश्लोकादन्यत् किंचन वस्त्वहं ५४ देवैः कामवरो दत्तो मह्यं
त्रिभुवनेश्वरैः न वृणे तमहं काममन्नभावनभावना ५५ ये विक्षिप्तेन्द्रियधियो देवास्ते स्वहृदि स्थितं न विन्दन्ति प्रियं श
श्वदात्मानं किमुताऽपरे ५६ अथेशमायारचितेषु संगं गुणेषु गन्धर्वपुरोपमेषु रूढं प्रकृत्यात्मनि विश्वकर्तुर्भावेन हित्वा तमहं प्रप
द्ये ५७ इति व्यवसितो बुद्ध्या नारायणगृहीतया हित्वान्यभावमज्ञानं ततः स्वं भावमाश्रितः ५८ यत्तद्ब्रह्म परं सूक्ष्ममशून्यं शून्य
कल्पितं भगवान्वासुदेवेति यं गृणन्ति हि सात्वताः ५९ इति श्रीभागवते नवमस्कंधे खट्वाङ्गचरित्रे नवमोऽध्यायः ९ श्री।

देवतानि तिनमो कुं कामवर दीनो हरमें है भावना जाकी सो मैं ता कामवरको रक्षा न दीवरूं हूं ५५ विक्षिप्त है इंद्रिय बुद्धि जिनकी असे
जे देवता अपने हृदेमें स्थित प्यारे आत्मा हरि ताय नही जाने और कहा जाने गे ५६ ईश्वरकी माया कर गंधर्वपुर की सी है उपमा जा
की असे जे विषै तिनमें सुभाव करके बडो संग ताई ईश्वर के भाव करके छोडके ताई परमेश्वरकी सरन प्राप्ति होउंगो ५७ असें
से नारायणने ग्रहण कीनी जो बुद्धी ताकरके निश्चे कीयो जो खट्वाङ्ग सो देहादिकमें अभिमान रूप जो अज्ञान ताय छोडिकें अ
पने भाव कुं प्राप्ति होत भयो ५८ जो है ब्रह्म असे कहे हे सूक्ष्म है सूक्ष्म है सूक्ष्म नही है सून्य सो रघु और जाकुं भक्त हैं ते भगवान वासुदे

भा॰ न॰
२२

इसकी अध्यायमें खट्वांगतें दीर्घबाहु भयो तातें रघु भयो तातें अज भयो तातें महाराज दसरथ भए तिनदसरथके सास्यात ब्रह्म भग
हरि जो ऐसा सकार के चार प्रकार पुत्र होत भए रामलक्ष्मण भरत जो शत्रुघ्न येनाम करके देवतानके अर्थ ताकी ए २। तिनकौ चरित्र
जो रिषि जो वाल्मीक आदिक तिन्हने बहुत वर्णन कीएं तैने बेर बेर सुन्यो तोहू संक्षेपतें कहुंहू: ताय सुनौ ३ दसरथ के अर्थ राज
त्यजि कोमल सेकोमल सीताजी के हाथनकौ जो स्पर्श ताय नहीं सहोएं ऐसेजे चरण तिनकरके वनवन में डोलत भये ह
नुमान लक्ष्मण ई तेदुर कीयो है मार्ग को श्रम जिनको विरूप कीनी जो सूर्पनखा ताते लीनी जिनकी नाजो रावण ताकर के हरी

श्रीभगवानुवाच: खट्वांगाद्दीर्घबाहुश्च रघुस्तस्मात्पृथुश्रवा अजस्ततो महाराजस्तस्माद्दसरथो भवत् १
तस्यापि भगवानेषा साक्षाद्ब्रह्ममयो हरिः अंशांशेन चतुर्धागात्पुत्रत्वं प्रार्थितः सुरैः २ रामलक्ष्मणभरतशत्रु
घ्ना इति संज्ञया तस्य चरितं राजन्नृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ३ श्रुतं हि वर्णितं भूरि त्वया सीतापतेर्मुहुः गुर्वर्थे त्यक्तरा
ज्यो व्यचरदनुवनं पद्मपद्भ्यां प्रियायाः पाणिस्पर्शाक्षमाभ्यां मृजितपथरुजो यो हरीन्द्रानुजाभ्यां वैरूप्याच्छूर्पणख्याः प्रियवि
रहरुषारोपितभ्रूविजृम्भत्रस्ताब्धिर्बद्धसेतुः खलदवदहनः कोसलेन्द्रोऽवतान्नः ४ विश्वामित्राध्वरे येन मारीचाद्या निशाचरा
पश्यतो लक्ष्मणस्यैव हता नैरृतपुंगवा ५ यो लोकवीरसमितौ धनुरैशमुग्रं सीतास्वयंवरगृहे त्रिशतोपनीतं आदाय बाल
गजलील इवेक्षुयष्टिं सज्जीकृतं नृप विकृष्य बभञ्ज मध्ये ६ जित्वानुरूपगुणशीलवयोऽङ्गरूपां सीताभिधां श्रियमुर
स्यभिलब्धमानां मार्गे व्रजन्भृगुपतेर्व्यनयत्प्ररूढं दर्पं महीमकृत यस्त्वराजबीजां ७ जो सीता माको श्री विरहताकौ जो
क्रोध ताई करकरके चढाई जो भ्रुकुटी तिनकरके डरपायो है समुद्र जिन्नें औरबांध्यो है सेतु जिन्नें दुष्टजो राक्षस दिक तेई भए वन
तिनके जराइबे वारे अयोध्याके राजा सो हमारी रक्षा करो ४ ऐसे एक स्लोक तें वर्णनकीयो सो संक्षेपतें अब दस अध्याय तक
विस्तारतें कहै हैं जिन श्रीरामनें विश्वामित्रके जज्ञमें मारीचो ताडुका तिनें आदि लेकरकें राक्षस तें लक्ष्मणके देखत मारे
जो रामलोकनमें जो वीर तिनकी सभा जनताम सीताके स्वयंवर घरमें धर्यो तीनसेलोग उठायके लाएं बडो कठोर ऐसो महादेवको
धनुष ताय राक बालक ईख की लडीया की सी नाई उठायकें मध्यतें तोरत भए बाल करायकी सी देली ताजिनको ६ अपने अनुरूप है गुण

सोईयरसरामु ४१ स्त्रीसवेरसत्री एथ्वीनायकरनभये ७ रावणासकरकेवधकेकरईकेआधीनऐसेजोपितानाकीजोआज्ञानाई
सिरलरिकरिकें ग्रहणकरनभए राज्यसंपत्सबारेसुहृद्घरइनेछोडकेसीतासहतवनकूंगए जैसेमुक्तसंगजोयोगीतेप्रथमप्राण
नकोछोडकेंजाहे रावणकीवहनअछछुद्रजाकोनाकेकाननाककाटिकेविरूपकरतभए स्त्रपनखाकेवधखरत्र
दूषनएहेमुख्यजिनमेंऐसेहजारनराक्षसतिनेमारतभये ऐसेधनुषबांनलयमेंजिनकेवनमेडोलतकमुकाके
वसनभये ८ सीताकीकथानाकेसुनवेकरकेंनयोहेकामजाकेंऐसोजोरावणतानेपटायोअद्भुतहिरणकोरूप

७ लक्ष्मणसत्यवीतपितुर्निदेशं स्त्रैणस्यचापिशिरसाजगृहेप्रभार्यां। राज्यंश्रियंप्रणयिनःसुहृदोविनाय्य यत्क्रायपोवनमसूनिवमुक्तसं
गः ८ रक्षःस्वसुर्व्यकृतरूपमशुद्धबुधेस्तस्याःखरत्रिशिरदूषणमुख्यबंधून् जघ्नेचतुर्दशसहस्रमपारणीयकोदण्डपाणिरटमानउवास
कृच्छ्रं सीताकथाश्रवणदीपितहृच्छयेनसृष्टंविलोक्यनृपतिर्दशकंधरेण ९ जघ्नेद्भुतैणवपुषाश्रमतोपकृष्टोमारीचमाशु
विशिखेनयथाकमुग्रः रक्षोधमेनवृककद्विपिनेसमक्ष्यंवैदेहराजदुहितर्यपयापितायां १० भ्रात्रावनेकृपणवत्प्रि
ययावियुक्तःस्त्रीसंगिनांगतिमितिप्रथयंश्चचार इधात्मकृत्यहतकृत्यमहन्कबंधंसख्यंविधायकपिभिर्दयितागतिंतैः
बुध्वाथवालिनिहतेप्लवगेन्द्रसैन्यैर्वेलामगात्सनुजोजवचारितांहि: १२ यद्रोषविभ्रमविवृत्तिकटाक्षपातसंभ्रान्तनक्रमक
रोभयगीरोघोषःसिंधुःशिरस्यर्हणंपरिगृह्यरूपीपादारविंदमुपगम्यबभाषएतत् १३ घरकेंआयोआश्रमतेरामकोदूरलेगयो
ऐसोजोमारीचनायमारतभयें जैसेमहादेवदक्षकूमारतभये १० राक्षसनमेनीचजोरावणतानेस्पार्शकोसीनाईसूनेमेंविदेहराजाकीवेटीजो
सीताजवहरीतवभेयासहितवनमेंकृपणसेप्यारीकरकेवियुक्तस्त्रीसंगीनकीइःखकीगतिनायविस्तारकरतवनमेडोलतभए ११ अपनेलीए
रावणसंयुद्धकरकेमस्योजोजटायुपुत्रजैसेपिताकोदाहकरेहैंतैसेजटायकेआगेअपनेपकरवेकूंफेलाएहैहाथजानेऐसोराक्षसकवंधतानो
यमारतभये फिरसुग्रीवसंसख्यकरकेवालकूमारकेवद्दरानकरकेसीताकीजोगतितायजानिकेवादरानकीसेनासंगलेकेलक्ष्मणसहित
समुद्रकेनीरआवतभएँ वंसूनामरादेवईनकरकेप्रजेहेचरणजिनके १२ नहांतीनरांतउपवासकरकेपैडोदेखोनोऊसमुद्रजवनआयो
तवजिनरामकेक्रोधकीयेःजोलीलातानाकरकेचलायोजोकटाक्षतानेपानकरकेसंभ्रांततेग्राहमकरजामेंभयकेमारेवंदभयोहेशब्दजा
कोऐसोजोसमुद्रसोरूपधरकेंपूजाकोपत्रशिरपेधरकेचरननमेगिरकेयहकहतभयो १३ हेभूमनजउत्रेवुद्धजिनकीजेसेजेरमनेनिर्वि

कारणादिएसषजगतकेईस्वरतुमतायनहीजानेंहेजानेंहें जानेसत्वगुणतैंदेवनानकेगणहोहें रजोगुणतैंप्रजापतिहोहें क्रोद्रतेंभूतपति
होहें सोतुमगुणनकेईस्वरहो २४ तुमयथेछ्याविश्ववाकोंविषातुल्यत्रिलोकीकोंरुवामनहारोरावणतायमारो औरसीताकेआसरो
हुवीरतुमकोजलरोकनवारोनहींहें तोऊजसविस्तारकरवेकेलीयें यहांसेतवांधोजासेतपेंआयकेंराजानमारेजसकूगावेंगें २५ र
घुनाथहेसोवदरानकोंजेइंद्रतिनकेहाथनकरकेंकपायहेंहसजिन्हें ऐसेजोअनेकपर्वतनकेसिखरतिनकरकेंसेतवांधकेंसुग्री
वनीलहनुमानयेहेंमुख्यजिनमें ऐसीजोसेनानाकरसहितविभीषणकीवुद्धकरकेंलंकामेंप्रवेशकरतभएें जोलंकाआगेंहनुमानतें

नत्वावयंजइधिपोनुविदांसभूमन्कुटस्यमाद्धिपुरुषंजगनामधीसं यन्सत्वतामुरगणःरजसप्रजेशामन्योभ्रभूतपत
यःसभवानकुगुणेशा २४ कामंप्रयाहिविभ्रवसोवमेहत्रैलोकारावणमवाप्तुहिवीरपत्नीवध्यौहिसेतुमिहतेयशयशो
विप्सेगायंतिदिग्वीजयिनोयमुपेत्यभूपा २५ वधोदधोरघुपतिर्विविधाद्रिकूटैसेतुकपिहकरकंपितभूरुहांगैः सुग्री
वनीलहनुमत्प्रमुखैर्नीकैर्लंकाविभीषणहशाविद्रितगद्धा २६ सावानरेंद्रवलरुद्धविहारकोष्टश्रीदारगोपुर
सदोवलभीविटंका निर्भज्यमानधिषणाध्वजहेमकुंभशृंगाटकागजकुलेहृदनीवघूर्णा २७ रक्षःपतिस्तदवलोक्य
निकुंभकुंभःधुम्राक्षदुर्मुखसुरांतनरांतकादीन् पुत्रंप्रहस्तमतिकायविकायनादीन्सर्वानुगान्समहिनोदथकुंभकर्णं

जराइहे २६ वदरानकेजोइंद्रइनकीजोसेनातातकरकेंरोकेहें विहारकोठेषजानेद्वारसभागोंखछुजेज्याकेतोरेहें ध्यानध्व
जासोनेकेकलशचौहटेताके ऐसीजोलंकासोछूमततभई केसेंजैसेंहाथकरकेंसरोवरघूमेहें २७ राक्षसनकोपतिजोराव
णसोऐसीलंकाइ देखकें निकुंभकुंभधूम्राक्षदुर्मुखसुरांतकइंद्रजीतप्रहस्तअतिकायविकंपनइनतेंआदिलेकेंऔरहूरा
क्षसतिनेंपठावतभयोंतापीछेंकुंभकरणकंभेजितभयो २८ खड्गत्रिशूलधनुषप्रासरिष्टपोलादीशक्तिवाणतोमरख
ड्गइनकरकेंदुर्गराक्षसनकीसेनानाकेसामहीसुग्रीवलक्ष्मणहनुमानजो अंगदमाननीलअंगदजांववानएनसइन
करकेसहितजोरामसोजातभए २९ रघुनाथकीसेनाकेजोपालकअंगिहादिकतेसवेरामणकीसेनाहाथीघोडारथपा

देइनकरकैजोसेनातामेदधुहोकरकें लक्ष्मणविनगणवाणाईनकरकेसीताकेस्पर्शकरकें नष्टहेमंगलजाको ऐसोजोरावण
सोहेराजाजिनकोऐसेजेराक्षसतिनेमारतभए २० रावणहेसोअपनीसिन्याकोनाशदेखकेक्रोधकरतपुष्पकविमानपैवैठकें
सन्मुखआवतभयो मातुलसारथीनेप्राप्तिकीयेंप्रकाशितइंद्रकोरथतामेविराजेंऐसोजोरामतिनेंछुरासंयेजोवाणतिनकरि
कैमारतभयो २१ रामहेसोरामरावणवोलेहेराक्षसनकेविशानुरूपतेनेंमेरेहृरिलीऐसीजोमेरीकांतातानेंकेसेहरलीनीहेतेसेस
नेघरमेंसंकछुक तालेंभोगैहैंतातेंनिंदककर्मकोकरनवारोंजोतूताकूंआजकालसोअलंघ्यहेपराक्रमजाकोऐसोमेफलद

नोयातुधानएतिमामसिशूलचापप्राणबधिपाक्षिपानोनरखड्गदुर्गोसुग्रीवलक्ष्मणरामरूतमुतमर्द्दनीलांगदक्षपन
साद्भिरक्षितोगात्र्‌ ने २६ तेनीकपारघुपतेरभिपत्यसर्वं द्वंद्वरूथमिवपतिरथाश्चयोधैः जघ्नुर्द्रुमैर्गिरिगदेषु भिरंग
राघासीतामिमरसहतमंगलरावणोमा २० रक्ष्यस्पतिस्ववलनष्टमवेक्ष्यरुष्टः आरुह्य यानकमथाभिससाररामे
सुस्यंदनेद्युमतिमातलितोपनीते विभ्राजमान सहनन्तशितैःक्षुरप्रैः २१ रामस्तमाहपुरुषादपुरीषयन्ना
कांतासमक्षमसतापहृतात्व्वयाने तिक्त्वयस्यफलमघजुगुप्सितस्ययच्छामिकालइवकर्तुरलंघ्यवीर्यः २२ एवंक्षि
पंधनुषिसंधितमुत्ससर्ज्जवाणंसवज्रमिवतद्धृदयंबिभेद सोऽसृग्वमन्दशमुखैर्न्यपतद्विमाना द्धाहेतिजल्पतिजने
सुकृतीवरिक्तः २३ ततोनिरक्रम्यलकायायातुधान्यःसहस्रशः मंदोदर्यासमंतस्मिन्प्ररुदंत्यउपाद्रवन् २४

उगो २२ ऐसेतिरस्कारकरकैंधनुषमेवाणलगायकेछोडतभई सोईवाणवज्रसमरामराकेहृदेकूंवेधतभयो
सोरामरावणदशमुखनकरलोहूडारतभयोविमाननेंगिरतभयो तासमैलोकहाहाकारशब्दकरतभयें छीणहेपु
न्यजाकोऐसोसुकृतीजोजेसेगिरेंहैतेसेगिरो २३ ताकेअनंतरहजारनराक्षसमंदोदरीकरकेसहितलंकातेनि
करतरोवतपीटतताइस्थानमेंआवतभई २४ लक्ष्मणजीकेवाणनकरमारेजेबंधुअपनेंतिनेंमिलकेवडे

भ.व. स्वरसूं रोवत भएं हा प्रथनसों माथे सों माथे को पीटहैं २५ हे नाथ नके लोकन के गुरू रावन हा रावन हे रावण हम भरी वेरीने मारी तुम करके हीन॥
२४ जो यह लंका सो कौन के सरण जायगी २६ हे महाभाग तुम कामके वस भए सीता के तेज को जो प्रभाव ताय न जानो याते या दसा कूं प्राप्त कीये २७
हे कुलनंदन यह लंका तुमने विधवा कीनी देह है सो गिधनको अन्न कीयो आत्मा है सो नरक भोगवे के लीये २८ शुक कहे हे राजन अयोध्या
के राजा जो राम तिनने प्रेर्यो जो विभीषण सो पितान के श्राद्ध विधि करके अपने नकी परलोक की जो क्रीया ताय करत भयो २९ तापीछे भ
गवान अशोकवन के आश्रम में अशोक जो वृक्ष ताके नीचे वे ग विरह को दुःख जिनके सूं करहीं ऐसी जो सीता ताय देखत भए ३०

स्वानां विभीषणश्चक्रे कोशलेंद्रानुमोदितः पितृमेधविधानेन यदुक्तं सांपरायिकं २९ ततो ददर्श भगवान् अशोक
वनकाश्रमे क्षामां स्वविरहव्याधिं शिंशपामूलमास्थितां रामः प्रियतमां भार्यां दीनां वीक्ष्यान्वकंपत ३१ आत्मसंदर्शना
ह्लादविकसन्मुखपंकजां आरोप्य रुरुहे यानं भ्रातृभ्यां हनुमद्युतः विभीषणाय भगवान् दत्वा रक्षोगणेशतां लंकामायुश्च
कल्पांतं ययौ चीर्णव्रतः पुरीं अवकीर्यमाणः कुसुमैर्लोकपालार्पितैः पथि उपगीयमानचरितः शतधृत्यादिभिर्मुदा ३३
गोमूत्रयावकं श्रुत्वा भ्रातरं वल्कलांबरं महाकारुणिकोतप्यज्जटिलं स्थंडिलेशयं ३४ राम है सो दीन अति प्यारी अप
नी भार्या ताय देखके अनुकंपा करते भए ३१ अपने दर्शन को जो आनंद ताय करके प्रसन्न है मुख कमल जिनको ऐसी
जो सीता तिनने पुष्पक विमान पे वेठाय के लक्ष्मण सुग्रीव इनकरके सहित हनुमान करके युक्त आप चढत भए ३२ भग
वान है सो विभीषण के अर्थ राक्षसन को राज्य दे के कल्पांत आयु देके पूरण भयो है वनोवास जिनको सो राम अपनी पुरी कूं ज्ञा
त भए लोकपालने मार्ग में फूलन की वर्षा करी ब्रह्मादिकनने आनंद पूर्व गायो चरित्र जिनको गोमूत्र में राध्यो जो जव ही
ताय खाय वकला वस्त्र जाके वडे रूण कजटाधरे पृथ्वी में सो में है ऐसो भैया भरत ताय सुनके वडे कृपाल जो राम सो ता

[illegible]

भरत प्राप्त भए जो राम तिनैं सुनिकैं पुरके लोक मंत्री पुरोहित इनकरकै सहित पादुका है वडे करक सिरपै धरकैं सन्मुख जात भए
अपने ईश्वरानंद घाट ग्राम तातै गीत वादित्र इनकै जे पाठ वेद पढते है ब्राह्मण तिनकरकै सहित सोने केर ध्वजनसै घोरा जिनमैं वि
चित्र है ध्वजा जिनकै सोनेके कवच पररहे सो हूं और भरत घ्या देनाचैहै और उत्तम वेस्या तिनकरकै सहित जात भए ३५ राजपु
कोयोग्य छत्र चमर तिनै लेकै प्रेम करके भीज्यो है हृदै नेत्र जाके ऐसे जो भरत जो चरनन मैं गिरत भए ३६ पादुका आगे धरकैं
हाथ जोरकै आसंन कूं डारत भए ३७ रामकै सौ दोउ भुजान करकैं भरत सो बहुदेर ताई मिलकैं नेत्रनतानि करकैं जलतैं

भरतः प्राप्तमाकर्ण्य पौरामात्यपुरोहितैः ३५ पादुके सिरसि न्यस्य रामं प्रत्युद्ययौ मुदा नंदग्रामात्स्वप्रीति विराजीनवादित्रनिस्वनैः वह
घोषेण च बहु पठद्भिः द्विजवादिभिः स्वर्णकक्ष्यापताकाभिर्हैमैश्चित्रध्वजैः रथैः सदश्वैः सत्कामसन्नाहैर्भेदेपुरवरैः शुभैः श्रेणीभिर्वारमुख्य
याभिर्भृत्यैश्चैव पदानुगैः ३५ चामरैव्यजनैर्दीव्यैः छत्रैश्चापि च पाद्योऽर्घ्यपानैः प्रेमाप्लिक्तहृदयेक्षणः ३६ पादुके न्यस्य पुरतः प्राज
ल्निर्बाष्पलोचनः ३७ तस्याग्रिमभवंश्चैषा पादयोर्न्यस्य नेत्रजैर्जलैः रामो लक्ष्मणसीताभ्यां विप्रेभ्यो येऽर्हसत्तमाः तेभ्यः स्वयं नमश्चक्रे
प्रजाभिश्च नमस्कृतः ३८ धुन्वंतरवासं गानपतिं वीक्ष्य चिरागतं उत्तराकोशलामाल्यैः किरन्त्यो ननृतुर्मुदा पादुके भरतोगृह्णाच्चामरव्यज
नोत्तमे विभीषणः ससुग्रीवः श्वेतच्छत्रं मरुत्सुतः ४० धनुर्निषंगौ शत्रुघ्नः सीता तीर्थकमण्डलुं अबिभ्रदंगदः खड्गं हेमं चर्मर्क्षराट् पार्थ
पुष्पकस्थो स्तुतः स्त्रीभिः स्तूयमानश्च वंदिभिः विरेजे भगवान् राजन् ग्रहैश्चन्द्र इवोदितः ४२ भ्रातृभिर्नंदितः सोपि सोत्सवां प्राविसत्पुरीं

नकरके वाहावत: लक्ष्मणसीता इनकरकै सहित जो ब्राह्मणन के अर्थ और जे कुलवृद्ध है तिनके अर्थ आप नमस्कार करित भए प्रजा नैं आपनम
स्कार कीये ३८ अयोध्यावासी है ते बहुत काल मैं आये अपने पति तिनैं देखिकै अपने उपरना नकूं फिरावत भए ३९ और फूलन की वर्षा करत भए
भरत जी है सो तो पादुका लेते भए चमर और वीजन तिनै विभीषण सुग्रीव लेते भए पवनपुत्र जो हनुमान जो श्वेत छत्र लेत भए ४० धनुष
और तरकस शत्रुघ्न लेत भए सीता जी नैं कमंडल लीयो अंगद नै खड्ग लीयो सोने के है फूल जामैं ऐसी जो ढाल सो जामवान उठाय लेत भयो ४१ पुष्प
क विमान पर बैठैं स्त्रीनकर सहित वंदीजननतैं स्तुती करी भगवान राम सो सदर लगत भए जे सेग्रह ताकरकै सहित उदै भयो जो चंद्रमा सो
सुंदर लगे है ४२ भैयान नै सन्मान कीये जो भगवान राम सो उत्सव सहित सो ऐसी जो पुरी ता मैं प्रवेश करत भए ४३ श्रीरामजी॥

राजभमनमैंप्रवेशकरकें केकहीतेग्रादलैकेजैपिताकीस्त्रितिनैं अपनीमाता ग्रोरगुरुसखाग्रापने छोटे तिनेपूजनकरतभएे ४४
सीतालक्ष्मणसवसूंयथायोग्यमिलतभएें ४५ मानाहेसोपुत्रनकेंदेखकरकें उठतभई जेसेप्राणनकूंग्रारोंदेखकेसरीरउठहै गोडमे
वैठायकेग्रासंनकेजेसमूहतिनकरकेंसीचनसोतिनैंमिजोवनभई ४६ जटाहेतिनेंखोलिकें गुरुजेवसिष्ठसोकुलवृद्धनकूं संगलेकेवि
धसोचारोंसमुद्रनकेजेजलतिनकरकेंग्रविलेपकरतभएें जेसेग्रागेइंद्रकोंकीयोंहेंतें ४७ ग्रेसेसिरस्नकीयेंहे स्नान जिननेंउपरतेंवस्त्र
जिनकें मालापेंहेरेग्रलंकृत भैयाभार्या इनकरकेंसोभाकूंप्राप्तभएें ४८ भैयाननैंप्रणामकरकेंप्रसन्नकीयेजोरामसोराज्यासनकोग्र

प्रविश्यराजभवनंगुरुपत्नीश्चमातरं गुरूनवयस्यानवरजान्पूजितःप्रत्यपूजयत् ४४ वैदेहीलक्ष्मणश्चैवयथावत्समुपेयतुः ॰
पुत्रान्स्वमातरस्तानाप्राणास्तन्वइवोत्थिताः ग्रारोप्यांकेभिसिंचस्तोवास्पौघैर्विजहुश्शुच. ४५ जटानिर्मुच्यविधिवत्कुलवृद्धैस
मंगुरुः ग्रभिषिषेचवेइंद्रवतुसिंधुजलादिभि ४७ एवंकृतसिरस्नानस्सुवासास्स्रग्वलंकृतः स्वलंकृतैस्सुवासोभिभ्रातृ
भिर्भार्ययावभौ ४८ ग्रग्रहीदासनंभ्रातापणिपत्यप्रसादितः प्रजास्वधर्मनिरतावर्णाश्रमगुणान्विता जुगोपपितृ
वद्रामोमेनिरेपितरंचतं त्रेतायांवर्तमानायांकालकृतसमोभवत् रामराजनिधर्मज्ञेसर्वभूतसुखावहे ५१वना
ननद्योगिरयोवर्षाणिद्वीपसिंधवः सर्वेकामदुघाग्रासन्प्रजानांभरतर्षभ: नाधिव्याधिजराग्लानिदुःखशोकभयक्लमाः
५२मृत्युश्चानिच्छतानासीन्रामेराजन्यधोक्षजे एकपत्नीव्रतधरोराजर्षिचरितःशुचिः ५२ स्वधर्मंगृहमेधीयंशिक्षय
न्स्वयमाचरत् ५२ प्रेम्णानुवृत्त्याशीलेनप्रश्रयावनतासती धीयाह्रीयाचभावज्ञाभर्तुसीताहरन्मनो ५४इतीश्रीभागवते

हणकरतभएें ४६ रामहैसोग्रपनेधर्ममेंरतिवरनग्राश्रमकेजेगुणतिनकरकेयुक्तजेप्रजातिनेंपिताकीसीनाईपालनकरत
भएें तिनहीकूंसवपितामानतिभएें वर्तमानजोत्रेतातामे धर्मज्ञसवभूतनकोसुखदैनवारेरामसोराजाभएेंसंतैं सतयु
गकेसमानसमयहोतभयो हेभरतवंशीनमेंश्रेष्ठ वननदीपर्वतद्वीपसमुद्र येसवप्रजानकोमनोरथनकेपूरनकरनवारे
होतभएें रामकेराज्यमेंग्रादिव्याधिजराग्लानदुखसोकभयखेद ग्रोरविनाइछाकीयेमृत्युसोनहीहोय एकस्त्रीकोजोव्रतताकोधार
णकरतभएें राजऋषिनकोसोहेग्राचरनजिनको ग्रतस्तनकोजोधर्मतापग्रापग्राचरनकरत ग्रोरनकूंसिखावतभएें ~~प्रेम~~सेवासी

ग्यारहकीअध्यायमैंरामभैयानसहितअयोध्यामैंवसत यज्ञादिककरतभए सोवर्णनकरियेहै १ शुकदेवजीकहैहेराजन् भग
नजोरामसोउत्तमहैंसामिग्रीजिनमें ऐसेंयज्ञनकरकेसर्वदेवमयजोआत्मानायएजनकरतभएं आचार्यकूंदेकैयुक्त १ पूर्वदि
शाहोताकेअर्थदेतभए दक्षिणादिशाब्रह्माकोंदेतभएं पश्चिमदिशाअध्वर्युकूंदेतभएं उत्तरदिशाउद्गाताकूंदीनी २ दिसानके
मध्यमेंजितनीभूमिसेसरही तापआचार्यकेअर्थदेतभए यहसर्वभूमिहैनायब्राह्मणहीयोग्यहै ऐसेंनिस्पृहजोरामसोमाननभएशु
यहजोश्रीरामसोऐसें अलंकारवस्त्रइनकरकेशोभायरह्यो तेसेंहीरानीजोसीतासोसौभाग्यकेजेआभरणतिनकरकेशोभायरहतभई ४ शु

शुकउवाच: भगवानात्मनात्मानंरामउत्तमकल्पकैः सर्वदेवमयंदेवमीजेआचार्यवान्मखे १ होत्रेददादिशंप्राचींब्र
ह्मणेदक्षिणांप्रभुः अध्वर्यवेप्रतीचीचउदीचींसामगायसः २ आचार्यायददौशेषांयावतीभूस्तदंतरा मन्यमानइदंकृत्
स्नंब्राह्मणोर्हतिनिःस्पृहः ३ त्यक्तदलंकारवासोभ्यामवसेषित: तथाराज्ञ्यपिवैदेहीसोभाग्यावशेषित: ४ तेतुब्रह्म
ण्यदेवस्यवात्सल्यंवीक्ष्यसंस्तुतं प्रीताःक्लिन्नधियस्तस्मैप्रत्यर्प्येदंबभाषिरे ५ अप्रत्तंनस्त्वयाकिंनुभगवान्भुवनेश्व
रः यन्नोंतर्हृदयंविश्यतमोहंसिस्वरोचिषा ६ नमोब्रह्मण्यदेवायरामायाकुंठमेधसे उत्तमश्लोकधुर्या
यन्यस्तदंडार्पितांघ्रिये ७ कदाचिल्लोकजिज्ञासुर्गूढोरात्र्यामलक्षितः चरन्वाचोशृणोद्रामोभार्यामुद्दिश्यकस्यचित् ८
नाहंबिभर्मित्वांदुष्टामसतींपरवेश्मगां स्त्रैलोभीबिभृयात्सीतांरामोनाहंभजेपुन: ९ श्रीरामचंद्रायनमः

ब्रह्मण्यदेवजोरामतिनाकोजोवात्सल्यतायदेखकेप्रसन्नभएं कोमलहैबुधिजिनकीऐसेजेब्राह्मणते यहसबरामही
कूंदेकेबोलतभएं ५ हेभगवानहेभुवनकेईश्वर तुमकरकेकहानहीदियोजातेमारेहृदयमेंप्रवेशकरकेअपनीकांतिकरकेअ
तमहैतायनाशकरोहो ६ ब्रह्मण्यदेवअकुंठितहैबुद्धिजिनकी उत्तमश्लोकनमेंश्रेष्ठ निस्तदंडनमेंअर्पनकीयोहैचर
णजिनने ऐसेजेश्रीरामचंद्र तिनकेअर्थनमस्कारहै ७ कासमैलोकवृत्तांतकीइच्छाजिनकेगूढकोईलषेनहीं ऐसे
रात्रमेंविचरत स्त्रीकोउद्देशकरकेकाहूनेकहीवानीतिनैंसुनतभए ८ तूदुष्टहैंअसतीहैपरायेघरमेंताकूंनहींरा
खूंगो स्त्रैलोभीरामहोसोसीताकूंराखतभए मैंफेरतोकूंनहीभजूंगु ९ नी मै वसीरैम

ऐसे सेवहु तहैं सुषजाकें दुराराध्य मर्खजो लोक तानें दुरपै ऐसे जो राम तिनें सीताहैं सो त्याग करैं सो वाल्मीक को जो आश्रम तैं
ताय प्राप्त होती भई १० गर्भणी जो सीता सो समय प्राप्त भए संते जो लव जो दोउ पुत्र तिनें उपजावत भई अतिपराक्रमी कुश लव
विख्यात भए वाल्मीकहैं सो तिनकी जातकर्मादिक क्रिया तिनें करत भई ११ अंगद चित्रकेतु ये लक्ष्मण के बेटा होत भए तक्षपुष्क
ल ये भरत के बेटा भए सुबाहु श्रुतसेन ये शत्रुघ्न के होत भये १२ भरत हैं सो दिग्विजै में कोरन जो गंधर्व तिनें मारत भए तिनको
धन ताय लाय कै सब राजा जो राम तिनकों अर्थ देत भए १३ शत्रुघ्न जे सो मधु को बेटा जो लवनासुर ताय मधुवन में मार कै मथु

इति लोकाद्बहुमुखाद्दुराराध्यादसंविदः पत्या भीतेन सा त्यक्ता प्राप्ता प्राचेतसाश्रमं १० अंतर्वत्न्यागते काले यमौ सा
सुषुवे सुतौ कुशो लव इति ख्यातौ तयोश्चक्रे क्रियामुनिः ११ अंगदश्चित्रकेतुश्च लक्ष्मणस्यात्मजौ स्मृतौ तक्षपुष्क
लई त्यास्तां भरतस्य महीपते १२ सुबाहुः श्रुतसेनश्च शत्रुघ्नस्य बभूवतुः गंधर्वान्कोटिशो जघ्ने भरतो विजये द
शां तदीयं धनमानीय सर्वं राज्ञे न्यवेदयत् १३ शत्रुघ्नश्च मधोः पुत्रं लवणं नाम राक्षसं हत्वा मधुवने चक्रे मथुरां ना
म वै पुरीं १४ मुनौ निक्षिप्य तनयौ सीता भर्त्रा विवासिता ध्यायंती रामचरणौ विवरं प्रविवेश ह १५ तच्छ्रुत्वा भग
वान् रामो रुंधन्नपि धिया शुचः स्मरंस्तस्या गुणांस्तांस्तान्नाशक्नोद्रोद्धुमीश्वरः १६ स्त्रीपुंप्रसंग एतादृक् सर्वत्र त्रासमा
वहः अपीश्वराणां किमुत ग्राम्यस्य गृहचेतसः १७ ततः ऊर्ध्वं ब्रह्मचर्यं धारयन्नजुहोत्प्रभुः त्रयोदशाब्दसाहस्रमग्निहो
त्रमखंडितं १८ स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धं दंडककंटकैः स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिरगात्ततः १९

नाम जो पुरी ताय करत भए १४ भर्ता नें निकारी सीताजी सो वाल्मीक मुनि कूं दोउ बेटा सौंपि कें राम के चरण को ध्यान करत पृ
थ्वी के विवर में प्रवेश करत भई १५ भगवान जो राम सो सीताजी को प्रवेश सुन कें बुद्धि कर कें सोक है ताय रोकै है ईश्वर
हैं तोऊ तिनके गुणन को स्मरण करत रोकवे कूं समर्थ न होत भए १६ स्त्री पुरुषन को प्रसंग ऐसो है ईश्वर हूं कूं त्रास
देहै घर में है चित्त जाको ऐसो जो ग्रामीन ताकूं दुख देय यामें कहा है नोहें १७ तापीछें प्रभु जो राम सो ब्रह्मचर्य को धारण कर
त तेरह हजार वर्ष ताईं अखंडित जो अग्निहोत्र ताय होमत भए १८ दंडकवन के कांटेन कर कैं विधे अपने चरन पल्लव

देवतानकी प्रार्थना करकैं धारणकीयोहै लीलातनुजिनने अधिकसाम्य इनका एकावसु नस्य भावा जिनका असज्ञरघुनाथ
तिनकोयह पायन जोसम्झनकरिकैं राक्षसनकूं मारो समुद्र मैसेतबांध्यो तिनरामकूं वेरीवे कूं वद रामसहायककहा यह लीला
मात्रहै २० जिनको यसपापनको नाशकरनवारो निर्मल यशसोराजानकी सभामें ऋषीहैते गामैहै जो यशादिशानके साक्षी
नकोआभरनसोहैं स्वर्गकेपालक देवता पृथ्वीकेपालकराजा तिनकोमुकुटकरकें सेवितहै चरणकमलजिनके असे
असे रघुनाथ तिनके मैसरणप्राप्तिहूंगो २१ सोराम जिन्नेस्पर्शकीये जिन्नेदेखेकें जेसंगवे नेपीछेंगये नेकोसलदेसके

नेदं यशोरघुपते: सुरयाञ्चया त्तलीलातनोरधिकसाम्यविमुक्तधाम्न: रक्षोवधोजलधिबंधनमस्त्रपूगै: किंतस्यशत्रु
हनने कपय: सहाया: २० यस्यामलं नृपसदस्सु यशोधुनापि गायंत्यघघ्नमृषयो दिगिभेंद्रपट्टं तन्नाकपालवसुपालकि
रीटजुष्टपादांबुजं रघुपतेः शरणंप्रपद्ये २१ सयैः स्पृष्टोभिदृष्टोवा संविष्टोनुगतोपिवा कोसलास्तेययुः स्थानं यत्र गच्छं
तियोगिनाः २२ पुरुषो रामचरितं श्रवणैरुपधारयन् आनृशंस्यपरोराजन्कर्मबंधैर्विमुच्यते २३ राजोवाच:
कथंसभगवान्रामो भ्रातॄन्वा स्वयमात्मनः तस्मिन्वातेन्ववर्तंत प्रजाः पौराश्च ईश्वरे २४ बादरायणिरुवाच
अथादिशद्दिग्विजये भ्रातॄंस्त्रिभुवनेश्वरः आत्मानंदर्शयन्स्वानां पुरीमैक्षत सानुगः २५ आसिक्तमार्गां गंधोदैःकरि
णांमदशीकरैः स्वामिनंप्राप्तमालोक्य मत्तांवा सुतरामिवा २६ प्रासादगोपुरसभा चैत्यदेवगृहादिषु विन्यस्तहेम

वासीसगरे जहांयोगीजाइतास्थानकूं जातभये २२ हेराजापुरुषहै तेरामचरित्रकुं तेनापकाननकरकैं धारणकरत उप
समतानिष्ठहोकेंकर्मबंधनकरिकैं मुक्तहोइहै २३ राजापूछेहै मुनतें सोराम आपकेसेवर्तभेयानुप्रतिकेसेवर्ते ताईस्वमैभेया:
प्रजापुरकेलोककेसेवर्तें सोकहो २४ तबशुकदेवजीकहेहै राजनगासमेंराजासिंहासनपेवैठेहैं तापीछे त्रिलोकीकेईश्वरजो
रामसोभैयानकूं दिग्विजैमें देखतभये आपनेनकूं आपनेदर्शनदैवेकेलिये अनुगनसहितनपुरीहैं तायदेखतभए
पुरकेद्वार सभाचैत्य देवतानकेघर तिनपैराखेसुवर्णकेकलसा और ध्वजापताका तिनकरकैंमंडितहैं २७

स्त्पारीनकोजे१७ छ्यातिन नगर मे सतनजे ट्स्य और कैलान बगीचे पद्मकमलनकरके सुंदरवस्त्रनकरके सोभायमान आरसी नकर नैमालान
करके मंडितहे कीयमानिकजिनने और वापी देवद्रष्ववारजिन्ने २० नहां महाके लोक रामचन्द्र लैरे रामकेपासआवतभए हे देव पहले ते
मे वारतरूपत्र२६ आरकीनी यतवधीताप्रपालनकरो ऐसे प्रासनवादहनभए २६ प्रजाहुतेवसीत दिननमेंपाए अपने पतिराम
तिनने देखके देखवेकी इच्छाकरके छोउ देघरजिननें ऐसे जेनर नारी तेमतलनपेचढिके २७ नहीतसिभएहेनेजिनने तेसूलनकीव
पीरामके उपरकरतभए २८ पहले राजाने सेवनकीयो अपनो घरतासप्रविष्ठतानभरो अनंतलेरत्नादिक तिनकेजोपरी जिनकरके
पंगे सरदनेर पद्मकाभिः सुवासस्र आरपुरीरक्षके स्मभिः कनकेतिकतोरणं २८ समपेयस्तत्रस्तत्र पेसाग्रहेरणपाए
पाएयः प्राप्तिसोउपभज्ञेवापादिमप्राकत्वपोद्धुतां २९ ततप्रजावीसपतिचिरागतंदिदृक्षयासप्तगतास्त्रियोनरा आरुह्य
भौम्यरविंदूलोचनामतमनेन ः कुरमांभ्रवाकिरत्न ३० मथप्रवृष्वास्वगृहं जुष्टे पूर्वराजभिः अनंतताखिलकोषाण्डतामनर्घ्य
रूपरिच्छदं ३१ विद्रुमोदवरोद्वारं वेडुर्यस्तंभपंक्तिभिः स्थलैमरकतैः स्वच्छैर्भातस्फटिकभित्तिभिः ३२ चित्रसृग्भिपट्टिकाभिर्वा
सोमरागमणांस्वके मुक्ताफलेश्चिदुल्लासैः कामदेवैःमतिमिः ३३ धूपदीपैः सुरभिभिमंडितं पुष्पमंडितै स्त्रीपुंभिः सुरसंकाशै
र्जुष्टं भूषणभूषणैः ३४ तस्मीन् भगवान्राम स्निग्धयाप्रियचेष्टया रेमेस्वारामधीराणामृषभःसीतयाविलाः ३५ बुभुजे च
यथा कालं कामान्धर्ममपीडयन् वर्षपुगान्बहुन्नृणामभिध्यातांघ्रिपल्लवाः ३६ इति श्री भागवते नवमस्कंधे एकादशोध्याः ११
आगे है वहां मालकी बहुनरेसाभियोजामे स्रगानकी है देहुरी जिनके ऐसे द्वार वेडुर्यमणिनकेथंभतिनकी जेपंक्ति मरकतमणिनके
स्वच्छ जे स्थल प्रकासरूप जे फटिकजिनकी भीतिं ३२ चित्रजे मालापट्टिका रत्नआरमणिगोणकीजे नेत्रन चेतनजे उज्ज्वलमोती तिनकी
यके जो भूरकेसाघनतिनकर कें धूपदीपसुगंधफूलनकेमंडलइनकरके मंडितहे देवतानकीसी हे कांतिजिनकी ऐसे भूषणनकूभूषित
ऐसेजे स्त्रीपुरुषतिनकरके सेवितहे ताघरमें भगवान्रामहैं सो अपनी प्यारी स्त्रीयुक्त सीता ताकरकेसहित कामहे तिनभोगकरभए
बड़े लव पैनगनाहूं मनध्यानकरके ध्यावकी मोहे चरनकमलजिनको ३५ आत्माराम धीरतिनमेंश्रेष्ठ हैं राम सो जेहा कालतेसो
धर्मकूमहीपीडादेतभए ३ इतिश्रध्या० ११ बारस केअध्यायमें रामकेपुत्र अनोभकपानगावंसजरते ऐसेहीइक्ष्वाकुवंशकोप्रभाउपमा